RNI No. GUJHIN/2010/35230

महानगर मेट्रो

राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र

कार्यालय :- सी-8 रिची हाउस, स्वामी नारायण मंदिर के सामने मणिनगर अहमदाबाद गुजरात-380008

महानगर मेट्रो
राष्ट्रीय दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, प्रेस नोट एवं विज्ञापन के लिए कार्यालय पर सम्पर्क करें
सरबजीत माकन
+91-9638877700
mahanagarmetro7@gmail.com

वर्ष :15 । अंक:249। पेज:12। mahanagarmetro7@gmail.com || अहमदाबाद, (शुक्रवार) 01 मई 2026 || सम्पादक - सरबजीत माकन (9638877700)।। मूल्य :- 1.50 रु.-/

●एम्स की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

'गर्भपात के नियमों में अब बदलाव की जरूरत'

एजेंसी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को कड़ा रुख दिखाया। 15 वर्षीय दुष्कर्म पीड़िता के 30 हफ्ते की गर्भावस्था समाप्त करने की अनुमति पर सुनवाई हुई। इस फैसले को चुनौती देने वाली एम्स की क्यूरेटिव पिटीशन पर अदालत ने आपत्ति जताई। अदालत ने केंद्र सरकार से यह भी कहा कि कानून में संशोधन कर दुष्कर्म पीड़िताओं को 20 हफ्ते से अधिक समय के बाद भी गर्भपात की अनुमति देने पर विचार किया जाए।

कानून को समय के साथ बदलना चाहिए

कोर्ट ने साफ कहा कि जब गर्भधारण दुष्कर्म के कारण हुआ हो, तो समय सीमा नहीं होनी चाहिए और कानून को समय के साथ बदलना चाहिए। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची की पीठ ने कहा कि यह बाल दुष्कर्म का मामला है और अगर गर्भपात की अनुमति नहीं दी गई तो पीड़िता को जीवनभर मानसिक आघात झेलना पड़ेगा।

कोर्ट ने क्या दिए निर्देश?

अदालत ने कहा कि अगर मां को स्थायी शारीरिक नुकसान नहीं होता है तो गर्भपात किया जाना चाहिए। साथ ही एम्स को निर्देश दिया गया कि वह पीड़िता के माता-पिता को इस मुद्दे पर उचित परामर्श दे, क्योंकि अंतिम निर्णय पीड़िता और उसके परिवार का होना चाहिए। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कहा कि देश में पहले से ही कई बच्चे गोद लेने के लिए हैं, कई बच्चे सड़कों पर बेसहारा हैं और इस पर माफिया भी सक्रिय हैं। यह 15 साल की बच्ची का अनचाहा गर्भ है। उसे पढ़ाई करनी चाहिए, लेकिन हम उसे मां बनने के लिए मजबूर कर रहे हैं। सोचिए उसने कितना दर्द और अपमान सहा है।

एम्स ने क्या दलील दी?

वहीं, AIIMS की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी ने दलील दी कि इस अवस्था में गर्भपात संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि 30 हफ्ते में भ्रूण एक जीवित शिशु के रूप में विकसित हो चुका है, जिसमें गंभीर विकृतियां हो सकती हैं। साथ ही नाबालिग मां को जीवनभर स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं और भविष्य में वह मां नहीं बन पाएगी। उन्होंने सुझाव दिया कि बच्चे को जन्म के बाद गोद दिया जा सकता है। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने दोहराया कि गर्भपात का निर्णय पीड़िता और उसके माता-पिता की इच्छा पर निर्भर करेगा और एम्स की भूमिका उन्हें सूचित निर्णय लेने में मदद करने की होनी चाहिए।

'जब तक गोमांस जब्त न हो, वाहन जब्त करना अवैध और मनमाना'

यूपी सरकार पर दो लाख का जुर्माना; कोर्ट का फैसला

एजेंसी

इलाहाबाद। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उत्तर प्रदेश गोवध निवारण अधिनियम के तहत वाहन सीज करने के मामले में महत्वपूर्ण फैसला सुनाया है। कोर्ट ने कहा कि जब तक वैज्ञानिक रूप से यह साबित न हो जाए कि बरामद मांस वास्तव में गोमांस है, तब तक वाहन को जब्त करना अवैध और मनमाना है। यह टिप्पणी करते हुए कोर्ट ने वाहन सीज करने के आदेश को रद्द कर दिया। याची को आर्थिक नुकसान की भरपाई के लिए सरकार पर दो लाख रुपये का हर्जाना लगाया है। यह आदेश न्यायमूर्ति संदीप जैन की पीठ ने दिया है। बागपत जिले में 18 अक्तूबर 2024 को पुलिस ने याची के वाहन को इस संदेह में पकड़ा था कि उसमें प्रतिबंधित मांस ले जाया जा रहा है। डीएम ने 16 जून 2025 को वाहन को जब्त करने का आदेश दिया। याची मोहम्मद चांद ने जब्ती आदेश को हाईकोर्ट में चुनौती दी। याची के अधिवक्ता ने दलील दी कि पशु चिकित्सक की रिपोर्ट में मांस के गोमांस होने की कोई निश्चित पुष्टि नहीं की गई थी, बल्कि उसे केवल संदिग्ध बताया गया था। कोर्ट ने कहा कि उत्तर प्रदेश गोवध निवारण अधिनियम के तहत कार्यवाही शुरू करने के लिए अधिकृत प्रयोगशाला की रिपोर्ट अनिवार्य है। इस मामले में प्रयोगशाला की कोई पुख्ता रिपोर्ट उपलब्ध नहीं थी, इसलिए जब्ती की पूरी प्रक्रिया अवैध है।

● कोर्ट ने माना कि याचिकाकर्ता का वाहन उसकी आजीविका का एकमात्र स्रोत था। पिछले 18 महीनों से वाहन के अवैध रूप से बंद रहने के कारण उसे आर्थिक क्षति हुई है। कोर्ट ने जिला मजिस्ट्रेट और मंडलायुक्त के आदेशों को रद्द कर दिया। सात दिनों के भीतर याचिकाकर्ता को दो लाख रुपये का हर्जाना देने का आदेश दिया। न्यायालय ने सरकार को यह छूट भी दी है कि वह हर्जाने की राशि संबंधित उत्तरदायी अधिकारियों से वसूल सकती है।

भारतीय विद्यालय प्रमाण पत्र परीक्षा परिषद 2026

कक्षा 10वीं-12वीं के नतीजे घोषित

●यूपी के ओजस्वित पासरीचा को इंटर में मिले 100 फीसदी अंक

एजेंसी

इलाहाबाद। भारतीय विद्यालय प्रमाण पत्र परीक्षा परिषद (CISCE) सुबह 11 बजे ICSE (कक्षा 10वीं) और ISC (कक्षा 12वीं) के परिणाम 2026 जारी कर दिए हैं। इस परिणाम का इंतजार देशभर के लाखों छात्र कर रहे हैं, जिन्होंने फरवरी से अप्रैल के बीच आयोजित परीक्षाओं में भाग लिया था। छात्र अपना रिजल्ट और ऑनलाइन मार्कशीट आधिकारिक वेबसाइट cisce.org पर देख सकते हैं। चिंटल्स स्कूल के छात्रों ने बोर्ड परीक्षा परिणामों में शानदार प्रदर्शन करते हुए अपनी मेधा का परिचय दिया है। कक्षा 12वीं की छात्रा यशी सचान ने 99.5 प्रतिशत अंक प्राप्त कर स्कूल और शहर का नाम रोशन किया, वहीं कक्षा 10वीं के छात्र आदि अरोड़ा ने 99.4 प्रतिशत अंक हासिल कर अपनी प्रतिभा का बेहतरीन प्रदर्शन किया।

आईसीएसई कक्षा 10वीं की परीक्षाएं 17 फरवरी से 30 मार्च तक और आईएससी कक्षा 12वीं की परीक्षाएं 12 फरवरी से 3 अप्रैल तक आयोजित की गई थीं।

इन विवरणों को ध्यान से करें चेक

रिजल्ट देखने के बाद छात्र अपनी मार्कशीट में दी गई सभी जानकारी को ध्यान से चेक करें, जैसे अपना नाम, यूनिक आईडी नंबर, जन्म तिथि, स्कूल का नाम, हर विषय के अंक, ग्रेड, पास या फेल की स्थिति और कुल प्रतिशत। अगर कोई टिप्पणी लिखी हो तो उसे भी

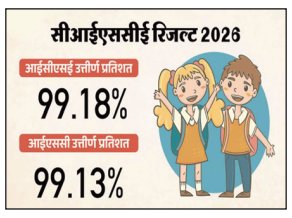

जरूर पढ़ें, ताकि अगर कोई गलती हो तो समय पर उसे ठीक कराया जा सके। आईसीएसई कक्षा 10 की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए छात्रों को प्रत्येक विषय में कम से कम 33 प्रतिशत अंक प्राप्त करने आवश्यक होंगे, जबकि आईएससी कक्षा 12 के छात्रों के लिए यह सीमा 40 प्रतिशत होगी। जो छात्र एक या दो विषयों में पासिंग मार्क्स हासिल नहीं कर पाते, उन्हें सुधार परीक्षा (इम्प्रूवमेंट एग्जाम) देने का अवसर मिलेगा।

हज यात्रा का हवाई किराया बढ़ने पर ओवैसी ने जताई नाराजगी

कहा-यह उचित नहीं

एजेंसी

नई दिल्ली । एआईएमआईएम अध्यक्ष और सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने हज यात्रा के हवाई किराए के बढ़ने पर नाराजगी जताई है। ओवैसी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट में लिखा कि हज कमेटी हज यात्रियों से 'हवाई किराए में अंतर' के नाम पर अतिरिक्त 10 हजार रुपए की मांग कर रही है। यह तब हो रहा है, जब कुछ महीने पहले ही मुंबई से रवाना होने वाले हर यात्री से 90,844 रुपए वसूले जा चुके हैं। यह आम यात्रियों के लिए मौजूदा दरों से लगभग दोगुना है। उन्होंने लिखा कि क्या हज यात्री हज कमेटी के जरिए जाने की सजा भुगत रहे हैं? यह सरासर शोषण है और कुछ नहीं। ज्यादातर हज यात्री अमीर नहीं होते; वे हज पर जाने के लिए सालों तक पैसे बचाते हैं।

ओवैसी ने आगे लिखा कि उनके लिए यह कोई विलासिता नहीं है। इस सर्कुलर को तुरंत वापस लिया जाना

चाहिए, और हज यात्रियों से वसूले गए पैसे उन्हें वापस किए जाने चाहिए। उन्होंने लिखा कि सर किरेन रिजिजू इस सर्कुलर को वापस ले लीजिए; यह उचित नहीं है।

भगवान महावीर के शासन में गुंडागर्दी का जगत

हनीट्रैप और ब्लैकमेलिंग से कब तक सहमेगा जैन संघ ?

महानगर मेट्रो ब्यूरो/पवन माकन

सूरत। अहिंसा और परोपकार का संदेश देने वाला जैन समाज आज उन 'दीमकों' के निशाने पर है ज11ो धर्म की आड़ में अधर्म का धंधा चला रहे हैं। जो समाज अपनी मेहनत की कमाई का बड़ा हिस्सा जिनालयों और जनकल्याण के लिए दान कर देता है, उसी समाज की आस्था को अब बंधक बनाने की साजिश रची जा रही है। महानगर मेट्रो आज पर्दाफाश कर रहा है उस गिरोह का, जिसका काम भक्ति नहीं, बल्कि 'भय' बेचकर करोड़ों की फिरौती वसूलना है।

मुख्य खबरः आस्था के रक्षक या फिरौती के भक्षक?

सूत्रों और हालिया घटनाओं के अनुसार, गुजरात में एक ऐसा आपराधिक गिरोह सक्रिय है जो जैन संघों और जिनालयों के निर्माण को अपना 'सॉफ्ट टारगेट' बनाता है। इनका Modus Operandi (काम करने का तरीका) रूह कंपा देने वाला है:

* **अवरोध पैदा करनाः** जहां भी भव्य जिनालय का निर्माण होता है, यह गिरोह अवैध निर्माण के नाम पर झूठी

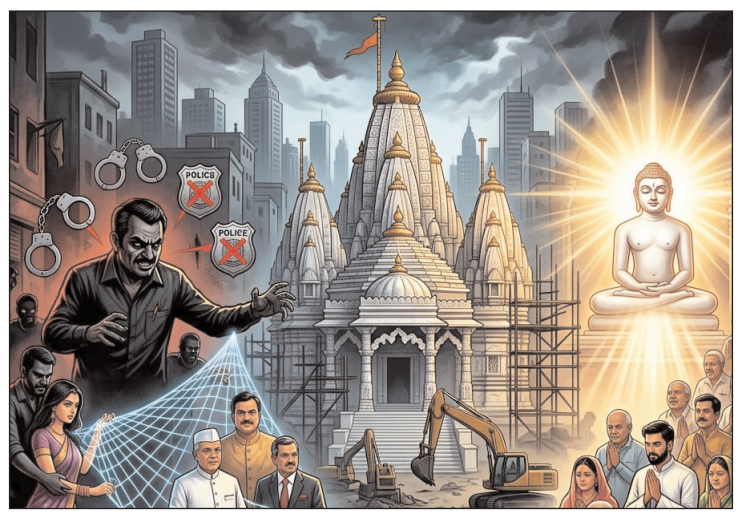

शिकायतें दर्ज कराता है।

* **हनीट्रैप का जालः** समाज के प्रतिष्ठित और संभ्रांत लोगों को फंसाने के लिए यह गिरोह 'हनीट्रैप' का घिनौना जाल बुनता है।
* **फिरौती का खेलः** शिकायतों को वापस लेने और चरित्र हनन न करने के बदले करोड़ों रुपये की 'सेटलमेंट' डिमांड की जाती है।
* **मुनियों पर प्रहारः** जब इनके काले इरादे पूरे नहीं होते, तो ये गिरोह जैन मुनियों के विहार के समय उन पर जानलेवा हमला करवाने से भी बाज नहीं आता। क्या अब संतों की सुरक्षा भी इन अपराधियों के रहमों-करम पर होगी?

कौन है इस काले साम्राज्य का 'सरगना'?

इस गिरोह के तार सीधे तौर पर अहमदाबाद में बैठे जगत पारेख से जुड़ते नजर आ रहे हैं। जगत पारेख, जिसकी मानसिकता पूरी तरह आपराधिक है और जिस पर पहले से ही कई पुलिस केस दर्ज हैं, इस पूरे सिंडिकेट का संचालन कर रहा है। इसके साथ हार्दिक हुडिया और विक्रम बाफना जैसे चेहरे जुड़े हैं, जो धर्म की ओट में डकैती का काम कर रहे हैं। सूरत के वसु जैन जिनालय में भी इन्होंने यही दांव खेला था, लेकिन जैन समाज की एकजुटता ने इनके मंसूबों को धूल चटा दी।

महानगर मेट्रो के 'घातक' सवालः

* जगत पारेख और उसकी टोली से सवालः क्या भगवान महावीर के शासन में 'फिरौती' का धंधा चलेगा? क्या समाज का दान अब तुम जैसे अपराधियों की जेब में जाएगा?
* पुलिस और सरकार से सवालः एक घोषित अपराधी खुलेआम धार्मिक संस्थाओं को निशाना बना रहा है, फिर भी प्रशासन की चुप्पी का क्या मतलब है? क्या किसी बड़े अनिष्ट का इंतजार किया जा रहा है?
* जैन समाज से तीखी अपीलः कब तक डरकर इन अपराधियों को फिरौती देते रहेंगे? क्या हमारी एकजुटता इन गुंडों के सामने इतनी कमजोर पड़ गई है? याद रखिए, जब कल आंच आप पर आएगी, तब पछताने का भी वक्त नहीं मिलेगा।

संपादकीय टिप्पणीः महावीर का न्याय और समाज का आक्रोश

भगवान महावीर ने 'जियो और जीने दो' का संदेश दिया था, लेकिन इन राक्षसी प्रवृत्ति वाले लोगों ने 'लूटो और डराओ' को अपना मंत्र बना लिया है। याद रहे, आस्था के केंद्र को अपवित्र करने वालों को ईश्वर का श्राप और कानून की सलाखें, दोनों का सामना करना पड़ेगा। इस गिरोह का काला चिट्ठा खुल चुका है और अब इनके अंत की शुरुआत है।

सरकार और गृह विभाग को सीधा संदेश!

महानगर मेट्रो मांग करता है कि जगत पारेख और उसके सहयोगियों के खिलाफ 'गुंडा एक्ट' के तहत सख्त कार्रवाई की जाए। धार्मिक स्थलों के निर्माण में बाधा डालकर फिरौती मांगने वाले इन तत्वों का पूर्ण सामाजिक बहिष्कार अनिवार्य है।

संदेशः

यह खबर केवल जानकारी नहीं, एक चेतावनी है। जैन समाज की चुप्पी को उसकी कमजोरी न समझें। महानगर मेट्रो इस गिरोह के हर एक मोहरे का पर्दाफाश करना तब तक जारी रखेगा, जब तक ये सलाखों के पीछे नहीं पहुंच जाते।

— पवन माकन
(फाउंडिंग ग्रुप एडिटर)

नागपुर में आरएसएस मुख्यालय और स्मृति मंदिर पर 'रेडिएशन' अटैक की धमकी

एजेंसी

नागपुर । महाराष्ट्र के नागपुर स्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के मुख्यालय और डॉ. हेडगेवार स्मृति मंदिर में 'रेडिएशन' की धमकी से हड़कंप मच गया। पुलिस कमिश्नर को भेजी गई एक गुमनाम चिट्ठी में दावा था कि आरएसएस मुख्यालय और स्मृति मंदिर में रेडियोएक्टिव पदार्थ फैला दिया गया है। यह चिट्ठी कथित तौर पर 'डीएसएस' नाम के एक संगठन ने भेजी है। इस चिट्ठी के मिलने के बाद एक बड़े पैमाने पर जांच शुरू हो गई है, जिसमें एंटी-टेररिज्म स्क्वाड (एटीएस) और एनडीआरएफ भी शामिल हैं। अंग्रेजी में लिखी यह गुमनाम चिट्ठी 27 अप्रैल को डाक के जरिए पुलिस कमिश्नर रविंद्रकुमार सिंघल के दफ्तर पहुंची। इसमें आरएसएस के खिलाफ बेहद आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल किया गया था और एक चेतावनी दी गई। पुलिस सूत्रों के अनुसार, चिट्ठी में कहा गया था कि सीजियम-137 नाम का एक बेहद खतरनाक रेडियोएक्टिव पाउडर कई अहम जगहों पर कथित तौर पर रख दिया गया है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि सीजियम-137 (137सीएस) धातु सीजियम का एक रेडियोएक्टिव आइसोटोप है। यह प्राकृतिक रूप से नहीं पाया जाता। यह न्यूक्लियर रिएक्टरों और हथियारों में यूरेनियम के न्यूक्लियर विखंडन से बनने वाला एक उप-उत्पाद है। इसकी हाफ-लाइफ (अर्ध-आयु) 30.05 साल होती है, जिसका मतलब है कि इसकी रेडियोएक्टिविटी को आधा होने में तीन दशक लग जाते हैं। इससे बीटा कण और शक्तिशाली गामा किरणें निकलती हैं। पुलिस सूत्रों के अनुसार, चिट्ठी में दावा किया गया है कि यह रेडियोएक्टिव पदार्थ आरएसएस मुख्यालय, रेशिमबाग स्थित स्मृति मंदिर, गणेशपेठ स्थित भाजपा दफ्तर, ऑरेंज और एक्वा दोनों लाइनों की मेट्रो ट्रेनों की सीटों पर, और बसों में रखा गया है। दावा किया गया कि उन्हें यह रेडियोएक्टिव पदार्थ एक कैंसर अस्पताल से मिला था। चिट्ठी में आगे अधिकारियों को चुनौती देते हुए कहा गया है, 'नागपुर शहर अब पूरी तरह से रेडिएशन के खतरे में है। जब तारापुर एटॉमिक पावर स्टेशन के विशेषज्ञ यहां आकर जांच करेंगे, तब आपको इस बात की सच्चाई का पता चलेगा। '

● चिट्ठी में हाल ही में हुई एक घटना का भी जिक्र किया गया, जिसमें दोसर भवन मेट्रो स्टेशन के पीछे एक खाली प्लॉट में डेटोनेटर और जिलेटिन की छड़ें मिली थीं। पुलिस सूत्रों ने बताया कि 'डीएसएस' ने उन विस्फोटकों की जिम्मेदारी लेते हुए कहा था, 'वह तो बस एक चेतावनी थी। असली खेल तो अब शुरू हुआ है।'

अंकलेश्वर में 'खाकी' के संरक्षण में 'खूनी' कारोबार

लट्ठाकांड की आहट या सिस्टम की खुली सांठगांठ ?

महानगर मेट्रो ब्यूरो/पवन माकन

अंकलेश्वर/भरूच। गुजरात में शराबबंदी का कानून कागजों पर दम तोड़ रहा है और इसकी सबसे वीभत्स तस्वीर औद्योगिक हब अंकलेश्वर में देखने को मिल रही है। यहाँ पुलिसिया तंत्र अपराधियों के सामने नतमस्तक है या यूं कहें कि 'वर्दी' ही अब 'जुर्म' की ढाल बन चुकी है। मुख्यमंत्री और गृहमंत्री के जीरो टॉलरेंस के आदेशों को ठेंगा दिखाते हुए अंकलेश्वर के चोटा बाजार में मौत का सामान और जुए का नंगा नाच खुलेआम जारी है।

चोटा बाजारः अपराधियों की 'सेफ हेवन' और सट्टे का अड्डा

अंकलेश्वर रेलवे स्टेशन के पास स्थित चोटा बाजार की झोपड़पट्टियों में 'विजय' नाम के अपराधी का समानांतर प्रशासन चल रहा है। यहाँ 'वरली मटका' और 'आसरा' जैसे जुए के अड्डों पर रोजाना लाखों का

वारा-न्याया होता है। शर्मनाक बात यह है कि पुलिस की नाक के नीचे चल रहे इस खेल में वापी, वलसाड और सूरत से जुआरी अपनी बर्बादी लिखने आते हैं।

मुखबिरों की जान से खेल रही है पुलिस!

हमारी जांच में जो तथ्य सामने आए हैं, वे रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं। स्थानीय पुलिस और एलसीबी (LCB) के कुछ अधिकारी सिर्फ हफ्ताखोरी में व्यस्त नहीं हैं, बल्कि वे अपराधियों के 'पार्टनर' बन चुके हैं:

* **विश्वासघातः** जब कोई सजग नागरिक पुलिस को सूचना देता है, तो भ्रष्ट पुलिसकर्मी आरोपी को पकड़ने के बजाय मुखबिर का नाम और नंबर अपराधी 'विजय' तक पहुंचा देते हैं। इसके बाद शुरू होता है जानलेवा धमकियों का दौर।
* **'नील रेड' का पाखंडः** हाल ही में एलसीबी को पुख्ता जानकारी दी गई थी, लेकिन टीम मौके पर गई, 'सेटिंग' की और कागजों पर 'नील रेड' दिखाकर लौट आई।

महानगर मेट्रो के सीधे सवालः

1.भरूच एसपी साहब! क्या आपका इंटेलिजेंस फेल हो चुका है या आपकी नाक के नीचे हो रहे इस खेल में मौन सहमति है?
2.पीआई चावड़ा (ए-डिवीजन) और पीआई वाला (LCB): आपको ये अवैध धंधे क्यों नहीं दिख रहे? क्या कार्रवाई के लिए किसी बड़े लट्ठाकांड और बेगुनाहों की लाशों का इंतजार किया जा रहा है?
3.क्या अब SMC ही सहारा है? स्थानीय पुलिस की लाचारी यह साबित कर रही है कि अब गांधीनगर की 'स्टेट मॉनिटरिंग सेल' को ही हस्तक्षेप करना होगा, क्योंकि स्थानीय तंत्र 'हफ्ता राज' के नशे में चूर है।

सावधान!

अंकलेश्वर में बिक रही केमिकल युक्त जहरीली शराब किसी भी दिन बड़े लट्ठाकांड का सबब बन सकती है। अगर मासूमों की जान गई, तो इसकी सीधी जिम्मेदारी अंकलेश्वर पुलिस की होगी। महानगर मेट्रो इस माफिया-पुलिस गठजोड़ का पर्दाफाश करना जारी रखेगा। जब तक 'विजय' जैसे गुंडे और खाकी में छिपे उसके आका सलाखों के पीछे नहीं जाते, हमारा अभियान थमेगा नहीं।

राष्ट्रीय महिला इकाई अध्यक्ष जया बघेल ने लिखा प्रधानमंत्री,महामहिम ओर मुख्यमंत्री को पत्र

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नागदा जं (राहुल शर्मा की रिपोर्ट) अधिमान्य पत्रकार एकता कल्याण संघ की राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष ने विधवा बहनो की पेशन राशि 600 से बड़ा कर 1500 करने के लिए लिखा पत्र अधिमान्य पत्रकार कल्याण संघ महिला इकाई की राष्ट्रीय अध्यक्ष जया बघेल ने प्रधानमंत्री, महामहीम ओर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिख ये मांग की हे की जिस प्रकार लाडली बहनो को 1500 रुपये महीना प्राप्त हो रहा हे उसी प्रकार विधवा बहनो को मिलने वाली पेंशन 600 रुपये की राशि को बड़ा कर 1500 रुपये महीना किया जाए जिस से वो अपना भरण पोषण कर सके 600 रुपये की राशि विधवा बहनो को बहुत कम होती हे जिस से उन्हे अपना जीवन व्यापन करने के अत्यंत कस्ट होता हे, राशि बढ़ने से इन को जीवन व्यापन मे सुगमता मिलेगी राष्ट्रीय अध्यक्ष जया बघेल के इस कार्य के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय सिंह पंसोरिया,

राष्ट्रीय सह सचिव राजू गुप्ता,मध्य प्रदेश सचिव दिलीप बुंदिवाल, मध्य प्रदेश सह सचिव राहुल शर्मा,मध्य प्रदेश महासचिव जीवन जेन,मध्य प्रदेश उपाध्यक्ष कैलाश चंद्र,जिला अध्यक्ष संदीप धावरे,जिला संघठन मंत्री शहनवाज खान आदि पत्रकार साथियों ने बधाई ओर शुभकामनाएं प्रेक्षित की

600 में घर चलाना नामुमकिन , विधवा बहनों के लिए 1500 पेंशन की उठी मांग

महानगर मेट्रो ब्यूरो

रिपोर्टरः राहुल शर्मा

विधवा पेंशन राशि ? 600 से बढ़ाकर 1500 करने की मांग; जया बघेल ने प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री को लिखा पत्र

नागदा जंक्शन। आर्थिक रूप से कमजोर और विधवा महिलाओं के सम्मानजनक जीवन यापन के लिए अधिमान्य पत्रकार एकता कल्याण संघ की राष्ट्रीय महिला इकाई की अध्यक्ष जया बघेल ने एक महत्वपूर्ण पहल की है। उन्होंने देश के माननीय प्रधानमंत्री, महामहिम राष्ट्रपति और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर विधवा पेंशन योजना की राशि में वृद्धि करने का पुरजोर आग्रह किया है।

लाड़ली बहना योजना की तर्ज पर मिले लाभ

अपने पत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष जया बघेल ने तर्क दिया है कि जिस प्रकार मध्य प्रदेश सरकार की 'लाड़ली बहना योजना' के अंतर्गत प्रदेश की महिलाओं को ?1500 प्रति माह की आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है, उसी तर्ज पर विधवा बहनों की पेंशन में भी बढ़ोतरी होनी चाहिए। वर्तमान में मिल रही ?600 की राशि आज की महंगाई के दौर में भरण-पोषण के लिए अपर्याप्त है।

प्रमुख बिंदुः

• महंगाई का असरः ?600 की अल्प राशि में विधवा महिलाओं को जीवन व्यापन करने में अत्यंत कष्टों का सामना करना पड़ रहा है।

• समानता की मांगः पेंशन राशि को ?1500 तक बढ़ाने से इन महिलाओं को आर्थिक संबल मिलेगा और उनके जीवन में सुगमता आएगी।

• सामाजिक सुरक्षाः जया बघेल ने पत्र के माध्यम से सरकार का ध्यान इस संवेदनशील मुद्दे की ओर आकर्षित किया है ताकि समाज के इस वंचित वर्ग को मुख्यधारा से जोड़ा जा सके।

संगठन ने दी बधाई

जया बघेल के इस सराहनीय कदम और सामाजिक सरोकार के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को देखते हुए अधिमान्य पत्रकार कल्याण संघ के पदाधिकारियों ने हर्ष व्यक्त किया है। बधाई देने वालों में मुख्य रूप सेः

• विजय सिंह पंसोरिया (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
• राजू गुप्ता (राष्ट्रीय सह सचिव)
• दिलीप बुंदिवाल (मध्य प्रदेश सचिव)
• राहुल शर्मा (मध्य प्रदेश सह सचिव)
• जीवन जैन (मध्य प्रदेश महासचिव)
• कैलाश चंद्र (मध्य प्रदेश उपाध्यक्ष)
• संदीप धावरे (जिला अध्यक्ष) और शहनवाज खान (जिला संगठन मंत्री) सहित अनेक पत्रकार साथी शामिल हैं।

• 'हमारा लक्ष्य है कि हर विधवा बहन को समाज में सम्मान और पर्याप्त आर्थिक सहायता मिले। ?600 में घर चलाना नामुमकिन है, सरकार को इसे तुरंत बढ़ाना चाहिए। '

— जया बघेल, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष

क्षणिक मोह या दो परिवारों की बर्बादी?

अवैध संबंधों का दंशः बिखरते घर और सिसकते मासूम!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

आज के आधुनिक युग में जहाँ तकनीक ने दूरियां कम की हैं, वहीं रिश्तों के बीच की खाई गहरी होती जा रही है। सोशल मीडिया और बदलती जीवनशैली ने 'लग्नेतर संबंध' को एक ऐसी महामारी बना दिया है, जिसकी कीमत केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि दो पूरे परिवार चुका रहे हैं। मर्यादा पार करना यानी विनाश को निमंत्रण ऑफिस की दोस्ती या सोशल मीडिया पर अनजान व्यक्ति से मिली 'तसल्ली' कब मर्यादा की लक्ष्मण रेखा पार कर जाती है, इसका अहसास भी नहीं होता। लेकिन इसके परिणाम भयानक होते हैं: **अटूट विश्वास का टूटना:** विवाह का आधार केवल प्रेम नहीं, बल्कि परस्पर विश्वास है। एक गलत कदम सालों पुराने इस पवित्र स्तंभ को ढहा देता है।

• **बच्चों का अंधकारमय भविष्य:** पति-पत्नी के झगड़ों और विश्वासघात की सबसे पहली और गहरी चोट मासूम बच्चों के मानस पटल पर लगती है। वे असुरक्षा और मानसिक तनाव के शिकार हो जाते हैं। • **सामाजिक प्रतिष्ठा का अंत:** समाज में इज्जत कमाने में पीढ़ियां बीत जाती हैं, लेकिन एक 'अफेयर' उस प्रतिष्ठा को धूल में मिलाने के लिए काफी है। • 'एक पल का रोमांच, पूरी उम्र का पछतावा बन सकता है। जिस आशियाने को प्यार से संजोया, उसे वासना की आग में झोंकना कहाँ की समझदारी है? कैसे बचाएं अपना आशियाना रिश्तों में दरार आने पर बाहर रास्ता ढूंढने के बजाय, इन बातों पर गौर करें: **1.संवाद बढ़ाएं:** अगर जीवनसाथी से कोई शिकायत है, तो तीसरे व्यक्ति के पास जाने के बजाय आपस में बात करके समाधान निकालें। 2.**लक्ष्मण रेखा तय करें**: कार्यस्थल या सोशल मीडिया पर विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ बातचीत करते समय एक गरिमापूर्ण दूरी बनाए रखें। 3. **परिवार सर्वोपरि:** याद रखें, संकट के समय वही परिवार साथ खड़ा होगा जिसे आप आज दांव पर लगा रहे हैं। **महानगर मेट्रो जनमतः आपकी राय क्या है?**

एसपी के एक व्यवहार ने झकझोर दिया महकमा

अनुशासन या अपमान? 20 साल की सेवा के बाद हवलदार का इस्तीफा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

खाकी वर्दी के पीछे छिपे अनुशासन की दीवारें कभी-कभी इतनी ऊंची हो जाती हैं कि उसके पीछे इंसानियत और सम्मान दम तोड़ने लगते हैं। हाल ही में एक हवलदार के स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के फैसले और उसके बाद एसपी साहब को दिए गए उसके जवाब ने पूरे पुलिस विभाग में एक नई बहस छेड़ दी है। यह कहानी सिर्फ एक इस्तीफे की नहीं है, बल्कि उस 'सिस्टम' की है जहां पद की गरिमा तो है, लेकिन इंसान के अनुभव का मोल शायद शून्य है।

जब 20 साल की वफादारी पर भारी पड़ा 'सावधान' का आदेश

वाकया तब शुरू हुआ जब 20 साल की बेदाग नौकरी पूरी करने के बाद एक हवलदार ने स्वेच्छा से रिटायरमेंट का आवेदन दिया। एक अनुभवी सिपाही को खोना विभाग के लिए घाटा था, इसलिए एसपी साहब ने उन्हें समझाने के लिए दफ्तर बुलाया। करीब दो घंटे तक एसपी साहब हवलदार को नौकरी के फायदे गिनाते रहे, पेंशन और सुविधाओं का लालच देते रहे। लेकिन इस पूरी बातचीत के दौरान एक ऐसी बात हुई जिसने हवलदार के इरादे को पत्थर की लकीर बना दिया।

एसपी का सवाल और हवलदार का ऐतिहासिक जवाब

जब एसपी साहब ने अंत में थककर पूछा, 'हवलदार जी, आखिर कमी क्या है? आपको सब कुछ तो मिल रहा है, फिर यह नौकरी क्यों छोड़ना चाहते हो? ' तब हवलदार ने जो जवाब दिया, वह किसी भी संवेदनशील व्यक्ति की आंखें नम कर सकता है। हवलदार ने बड़ी विनम्रता लेकिन दृढ़ता के साथ कहाः 'सर, आपने पिछले दो घंटों से मुझे समझाने की कोशिश की, लेकिन इस दौरान आपके सामने कुर्सियां खाली पड़ी रहीं और आपने मुझे 'सावधान' की मुद्रा में खड़ा रखा। बस इसी व्यवहार की वजह से मैं यह नौकरी छोड़कर जा रहा हूं। '

अनुशासन बनाम आत्मसम्मानः कहाँ खिंचेगी लकीर?

यह जवाब सिर्फ एक शिकायत नहीं, बल्कि एक दर्द है। पुलिस विभाग में अनुशासन सर्वोपरि है, इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन क्या 20 साल तक विभाग को अपना खून-पसीना देने वाले एक वरिष्ठ कर्मचारी के लिए अधिकारी के विवेक में इतनी भी जगह नहीं थी कि उसे बैठने के लिए कह सकें ? अनुशासन के नाम पर बुजुर्ग हो रहे कंधों को घंटों खड़ा रखना क्या वाकई जरूरी है?

महानगर मेट्रो का नजरिया

सम्मान मांगकर नहीं लिया जाता, लेकिन जब बात 20 साल की लंबी सेवा की हो, तो पद की गरिमा के साथ-साथ उम्र और अनुभव का सम्मान करना भी एक अधिकारी का कर्तव्य है। यदि विभाग के मुखिया अपने ही मातहतों के प्रति संवेदनशील नहीं होंगे, तो वर्दी का 'मनोबल' सिर्फ कागजों पर ही ऊंचा दिखेगा।

आज का सुलगता सवालः

क्या वर्दी पहनने का मतलब अपने आत्मसम्मान को खूंटी पर टांग देना है? क्या हमारे आला अधिकारी 'अनुशासन' और 'अहंकार' के बीच का फर्क भूलते जा रहे हैं?

सावधान! 'लव जिहाद' की साजिशों का जालः कब तक सूटकेस और फ्रिज में मिलता रहेगा बेटियों का वजूद ?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

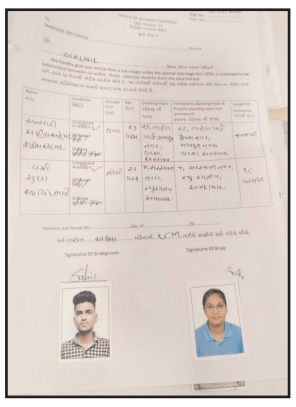

देश के हालात चीख-चीख कर एक ही सवाल पूछ रहे हैं–क्या प्यार के नाम पर हो रहा यह खूनी खेल अब भी हमें दिखाई नहीं दे रहा? 'द केरला स्टोरी' जैसी फिल्मों ने जिस कड़वे सच को बड़े पर्दे पर उतारा था, वह आज हर दूसरे दिन अखबार की सुर्खियों में 'सूटकेस' और 'फ्रिज' कांड के रूप में सामने आ रहा है। तमाम जागरूकता अभियानों और सोशल मीडिया पर बहती जानकारी की लहर के बावजूद, हमारी बेटियां जिस तरह इस साजिश का शिकार हो रही हैं, वह पूरे समाज के लिए खतरे की घंटी है। प्यार का नकाब, मजहबी एजेंडाः पहचानिए इस पैटर्न को यह कोई इत्तेफाक नहीं, बल्कि एक सोची-समझी साजिश का हिस्सा है। नाम बदलकर दोस्ती करना, कलावा पहनकर भ्रम पैदा करना और फिर अपनी पहचान छिपाकर भावनाओं के साथ खेलना–यह 'लव जिहाद' का वो खतरनाक ब्लूप्रिंट है जिसमें मासूम जिंदगियां फंसाई जा रही हैं। श्रद्धा वाकर से लेकर हालिया घटनाओं तक, हर बार कहानी का अंत रूह कंपा देने वाला ही होता है। सवाल यह है कि आखिर हम पिछली गलतियों से सीख क्यों नहीं रहे? धर्म और पहचान बचाने की सामूहिक चुनौती यह मुद्दा अब केवल व्यक्तिगत सुरक्षा का नहीं रह गया है, बल्कि यह हमारे धर्म और संस्कृति पर सीधा प्रहार है।

• बेटियों की सुरक्षा, समाज की जिम्मेदारीः अगर बेटियां रास्ता भटक रही हैं, तो कहीं न कहीं पारिवारिक संवाद में कमी है। • सनातन संस्कारों की जरूरतः अपनी जड़ों से कटना ही ऐसी घटनाओं का मुख्य कारण है। जब तक बच्चों को अपने धर्म के गौरव और दूसरों के छलावे का अंतर नहीं पता होगा, वे शिकार बनती रहेंगी।

34 साल बाद कब्र से चीखी सच्चाईः प्रेमी ने प्रेमिका को मार कर कुएं में गाड़ा, 'साये' के डर ने खोला खौफनाक राज

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। अहमदाबाद के वटवा इलाके से एक ऐसा रूहानी और सनसनीखेज मामला सामने आया है जिसे सुनकर पुलिस के भी होश उड़ गए। करीब 34 साल पहले साल 1992 में हुई एक युवती की हत्या का राज अप्रैल 2026 में आकर खुला है। अहमदाबाद क्राइम ब्रांच ने कुतुबनगर में एक पुराने घर के कुएं से मानव कंकाल के अवशेष बरामद किए हैं, जिससे तीन दशक पुराने काले सच पर से पर्दा हट गया है। इश्क, कत्ल और खामोशी का लंबा सफर यह कहानी शुरू होती है साल 1992 में। मुंबई की रहने वाली फरजाना उर्फ शबनम और वटवा के शमशुद्दीन के बीच प्रेम संबंध थे। आपसी विवाद और मतभेदों के चलते शमशुद्दीन ने बेरहमी से फरजाना की हत्या कर दी। गुनाह के सबूत मिटाने के लिए उसने लाश को अपने ही घर में मौजूद एक पुराने कुएं में दबा दिया। सालों बीत गए, फरजाना को सिर्फ गुमशुदा माना जाता रहा, लेकिन किसी को भनक तक नहीं लगी कि वह घर की नींव के नीचे ही दफन है। जब रूह के खौफ ने तोड़ा सन्नाटा कहते हैं कि गुनाह कभी छिपता नहीं। इस मामले में भी कुछ ऐसा ही हुआ। खबरों के मुताबिक, शमशुद्दीन के परिजनों को घर में कुछ 'अजीब अहसासों' और सायों का डर सताने लगा था। डरा हुआ परिवार तांत्रिकों की शरण में था और घर में तंत्र-मंत्र की गतिविधियां बढ़ गई थीं। यह सुगबुगाहट क्राइम ब्रांच के पीआई ए.पी. जेबालिया तक पहुंची। शक गहराने पर जब पुलिस ने जेसीबी की मदद से घर के कुएं में खुदाई शुरू की, तो वह मंजर देखकर सब दंग रह गए–जमीन के भीतर से 34 साल पुरानी हत्या की गवाह बनी हड्डियां और कंकाल बाहर निकले। अब डीएनए टेस्ट से होगी पहचान क्राइम ब्रांच ने मिले हुए अवशेषों को फॉरेंसिक साइंस लैबोरेटरी भेज दिया है। डीएनए जांच के जरिए यह पुख्ता किया जाएगा कि यह कंकाल फरजाना का ही है। हालांकि, इस मामले का मुख्य आरोपी शमशुद्दीन अब इस दुनिया में नहीं है, लेकिन पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि इस जघन्य अपराध में क्या परिवार का कोई और सदस्य भी शामिल था जिसने 34 सालों तक इस राज को अपने सीने में दबाए रखा। महानगर मेट्रो का सवालः क्या सिर्फ आरोपी की मौत से इंसाफ पूरा हो गया? 34 साल तक एक लाश पर घर बनाकर रहने वाले परिवार की खामोशी क्या अपराध की श्रेणी में नहीं आती?

सूरत में क्या 'आम आदमी पार्टी' का अध्याय समाप्त ?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

सूरत। की राजनीति में कभी 'बदलाव की लहर' बनकर आई आम आदमी पार्टी आज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है। हालिया घटनाक्रमों ने यह साबित कर दिया है कि सूरत में न तो 'आप' का जादू चला और न ही गोपाल इटालिया का चेहरा काम आया। राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि पार्टी की चमक अब पूरी तरह फीकी पड़ चुकी है।

2021 की जीतः पार्टी का दम नहीं, 'पास' का सहारा था

अतीत का विश्लेषण करें तो यह स्पष्ट होता है कि 2021 के निकाय चुनावों में जो 27 सीटें AAP को मिली थीं, वह पार्टी की लोकप्रियता के कारण नहीं, बल्कि PAAS (पाटीदार अनामत आंदोलन समिति) के समर्थन की वजह से थीं। पाटीदार समाज की नाराजगी का फायदा उठाकर AAP ने जीत तो दर्ज की, लेकिन उसे संभाल नहीं पाई।

भ्रष्टाचार, सेटिंगबाजी और पद का दुरुपयोग

'शिक्षित और ईमानदार' राजनीति का दावा करने वाली पार्टी की असलियत तब सामने आई जब उसके चुने हुए नुमाइंदों पर गंभीर आरोप लगेः

ज़ बिकाऊ पार्षदः पार्टी के अधिकांश कॉर्पोरेटर (पार्षद) अपनी निष्ठा बेचकर अन्य दलों के साथ सेटिंग करने और 'तोड़बाजी' में व्यस्त हो गए।

• **अक्षम नेतृत्वः** शिक्षा की बड़ी-बड़ी बातें करने वाली पार्टी ने विपक्ष के नेता जैसे महत्वपूर्ण पद पर ऐसे लोगों को बिठाया, जो कभी कॉलेज की दहलीज तक नहीं चढ़े थे।

• **जनता से दूरीः** लोगों के काम करने के बजाय उगाही करना, दादागिरी और 'लुख्खागिरी' के चलते पार्टी जनता के बीच बुरी तरह बदनाम हो गई।

विचारधारा बनाम अवसरवाद

सौराष्ट्र में भी जो सीटें AAP के खाते में आई हैं, वे पार्टी के आधार पर नहीं बल्कि अन्य दलों के बागी नेताओं के जोर पर मिली हैं। चर्चा तेज है कि ये नेता भी जल्द ही भाजपा का दामन थाम लेंगे, क्योंकि बिना किसी ठोस विचारधारा और सक्षम नेतृत्व के राजनीतिक दुकान ज्यादा लंबी नहीं चल सकती।

'कांग्रेस 35 साल से सत्ता से बाहर है, फिर भी उसका अस्तित्व कायम है क्योंकि उसके पास एक विचारधारा है। लेकिन AAP जैसी पार्टियां 'भादरवा के भिंडे' (सीजनल फसल) की तरह हैं, जो थोड़े समय के लिए आती हैं और फिर गायब हो जाती हैं। '

क्या आपको लगता है कि AAP ने जनता के विश्वास के साथ विश्वासघात किया है? क्या बिना किसी विजन के कोई राजनीतिक दल टिक सकता है?

50 करोड़ का साम्राज्य और ईओयू के तीखे सवाल

17 साल की नौकरी, 50 करोड़ की मायाः पटना में 2 करोड़ का बंगला, पैतृक गांव में मकान और कमाई के लिए 7 ट्रकों का बड़ा काफिला

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पटना। बिहार पुलिस की वर्दी पर लगे भ्रष्टाचार के दाग एक बार फिर गहरा गए हैं। किशनगंज के निलंबित थानेदार अभिषेक रंजन की अकूत संपत्ति ने जांच एजेंसियों के भी होश उड़ा दिए हैं। बुधवार को पटना स्थित आर्थिक अपराध इकाई के दफ्तर में जब साढ़े छह घंटे तक पूछताछ चली, तो भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे साहब के पसीने छूट गए। जांच टीम के पास जब सबूतों का अंबार मेज पर आया, तो दरोगा जी बार-बार पानी मांगते नजर आए।

17 साल की नौकरी और 50 करोड़ की माया

अभिषेक रंजन ने अपनी 17 साल की सेवा के दौरान पटना, किशनगंज और पड़ोसी राज्य बंगाल में करोड़ों की चल-अचल संपत्ति का जाल बिछाया। जांच में खुलासा हुआ है कि पटना के रामकृष्णानगर में उनका 2 करोड़ रुपये का आलीशान बंगला है, जबकि पैतृक गांव में भी 50 लाख का कीमती मकान बना हुआ है। इतना ही नहीं, दरोगा जी के पास 7 ट्रकों का बड़ा काफिला भी है, जिसका इस्तेमाल कमाई के लिए किया जा रहा था। रिश्तेदारों के नाम पर बेनामी संपत्तियां भ्रष्टाचार की कमाई को ठिकाने लगाने के लिए अभिषेक रंजन ने अपने साले और अन्य करीबी रिश्तेदारों को ढाल बनाया। करोड़ों की जमीनें और निवेश रिश्तेदारों के नाम पर किए गए थे। जब ईओयू ने दस्तावेजों के साथ सवाल दागे, तो उन्होंने इन्हें पारिवारिक बचत या पुश्तैनी जायदाद बताकर बचने की नाकाम कोशिश की।

माफियाओं से गठजोड़ का खेल

जांच में सबसे गंभीर तथ्य शराब और मादक पदार्थों के तस्करों से संबंधों को लेकर सामने आए हैं। 2009 में दारोगा बने अभिषेक रंजन ने मुजफ्फरपुर, पूर्वी चंपारण और पटना के थानों में तैनाती के दौरान कथित तौर पर माफियाओं से सांठगांठ की। शराबबंदी वाले राज्य में शराब माफियाओं से नजदीकी ने ही उन्हें इस अंजाम तक पहुंचाया है।

अब क्या होगा? कानून का शिकंजा

आर्थिक अपराध इकाई ने पूरी पूछताछ की वीडियोग्राफी की है। अब उनके द्वारा दिए गए बयानों का मिलान उनके बैंक स्टेटमेंट और जब्त किए गए जमीन के कागजातों से किया जाएगा। ईओयू के कड़े रुख से साफ है कि वर्दी की आड़ में भ्रष्टाचार का यह खेल अब अंतिम पड़ाव पर है।

महानगर मेट्रो सवालः क्या केवल निलंबन काफी है?

यह मामला उजागर करता है कि कैसे निचले स्तर के अधिकारी सिस्टम में रहकर भ्रष्टाचार का बड़ा साम्राज्य खड़ा कर लेते हैं। जनता के टैक्स के पैसे और अवैध उगाही से बनाई गई 50 करोड़ की इस संपत्ति पर अब प्रशासन को सख्त कार्रवाई कर एक नजीर पेश करनी होगी।

महानगर मेट्रोः खबर वही, जो सच दिखाए!

IPS एसोसिएशन की 'गरिमा' पर सवालः जब अपनों का दमन हुआ, तब आत्मा कहाँ सोई थी?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

गांधीनगर। विसावदर के विधायक गोपाल इटालिया द्वारा पुलिस अधिकारियों के लिए इस्तेमाल किए गए 'दलाल' शब्द ने गुजरात के प्रशासनिक गलियारों में भूचाल ला दिया है। 27 अप्रैल 2026 को गुजरात IPS ऑफिसर्स एसोसिएशन ने चुनाव आयोग को पत्र लिखकर इसे संस्था की गरिमा पर हमला बताया। लेकिन इस पूरे विवाद ने एक नई बहस को जन्म दे दिया है–क्या पुलिस की छवि सिर्फ बयानों से खराब होती है या उनकी कार्यशैली भी इसके लिए जिम्मेदार है?

विवाद की जड़: मर्यादा बनाम आक्रोश

विधायक गोपाल इटालिया का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल है, जिसमें उन्होंने पुलिस को 'दलाल' कहा। एसोसिएशन का तर्क है कि इससे पुलिस का मनोबल गिरता है। नियम और नैतिकता की दृष्टि से किसी भी जनप्रतिनिधि की भाषा शालीन होनी चाहिए, इसमें कोई दो राय नहीं। लेकिन सवाल यह है कि क्या तंत्र खुद 'मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट' का ईमानदारी से पालन कर रहा है?

सत्ता के सामने नतमस्तक, विपक्ष पर सख्त?

पूर्व IPS अधिकारी रमेश सवानी के लेख ने एसोसिएशन की निष्पक्षता पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं:

• चुनिंदा कार्रवाईः जब सत्ताधारी दल के नेता पुलिसकर्मियों के साथ सरेआम दुर्व्यवहार करते हैं, तब IPS एसोसिएशन लिखित शिकायत लेकर चुनाव आयोग क्यों नहीं जाता? ज़ लोकतंत्र और निर्विरोध चुनावः प्रदेश में सैकड़ों उम्मीदवारों का निर्विरोध चुना जाना क्या वास्तव में स्वेच्छा है या इसके पीछे पुलिस का 'दबाव' है? अगर पुलिस निष्पक्ष नहीं है, तो जनता की नजर में उसकी छवि 'रक्षक' की कैसे बनी रहेगी?

वो 'मौन' जो आज भी गूँजता है

सबसे बड़ा प्रहार उन अधिकारियों के नाम पर है जिन्होंने संविधान की रक्षा के लिए अपनी आहुति दे दी। जब सतीश वर्मा, रजनीश राय और राहुल शर्मा जैसे काबिल अधिकारियों को सत्ता के आदेश न मानने की सजा दी गई, तब इस एसोसिएशन की 'आत्मा' कहाँ थी? क्या उस वक्त संस्था की गरिमा पर आंच नहीं आई थी? अपने ही साथियों के दमन पर चुप्पी साधने वाला संगठन आज एक शब्द पर इतना आक्रामक क्यों है?

महानगर मेट्रो का नजरिया

सम्मान मांगा नहीं जाता, अपनी कार्यशैली से कमाया जाता है। 'दलाल' शब्द भले ही अभद्र हो, लेकिन यह उस गुस्से का प्रतीक है जो जनता के बीच प्रशासन की तरफदारी को लेकर पनप रहा है। यदि पुलिस और प्रशासन सत्ता के 'एजेंट' के रूप में काम करेंगे, तो शब्दों की मर्यादाएँ टूटेंगी ही।क्या IPS एसोसिएशन वास्तव में वर्दी का सम्मान बचाना चाहता है या वह केवल सत्ता की गुड-बुक में बने रहने के लिए विपक्ष को निशाना बना रहा है? खाकी पर लगे दाग शिकायतों से नहीं, बल्कि 'निष्पक्षता' से धुलेंगे।

BJP प्रदेश अध्यक्ष जगदीश पंचाल की दो-टूकः 'जहाँ जनसमर्थन कम मिला, वहाँ सबसे पहले पहुँचें

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। गुजरात भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष जगदीश पंचाल ने पार्टी के पदाधिकारियों और निर्वाचित प्रतिनिधियों को संगठन और सेवा का नया मंत्र दिया है। एक महत्वपूर्ण बैठक और संदेश के माध्यम से उन्होंने स्पष्ट किया कि भाजपा के लिए सत्ता केवल सेवा का माध्यम है। उन्होंने बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं से लेकर विधायकों तक को नसीहत दी है कि जिन क्षेत्रों में पार्टी को उम्मीद से कम वोट मिले हैं, उन क्षेत्रों को नजरअंदाज करने के बजाय वहां विकास कार्यों की गंगा बहाई जाए।

'हर गुजराती हमारा है ': जगदीश पंचाल

प्रदेश अध्यक्ष ने अपनी अपील में समावेशी राजनीति पर जोर देते हुए कहाः 'तमाम बूथ प्रमुख, शक्ति केंद्र प्रभारी, मंडल अध्यक्ष और विधायक मेरी इस विनम्र विनती और निर्देश को गांठ बांध लें। जिस विस्तार में हमें जनसमर्थन कम मिला है, वहां पहले पहुंचें। बजट और सरकारी कामों में उन क्षेत्रों को प्राथमिकता दें। '

उन्होंने आगे भावुक अपील करते हुए कहा कि साढ़े छह करोड़ गुजराती हमारे अपने हैं और बिना किसी भेदभाव के हर नागरिक का कल्याण करना ही हमारी सरकार की प्राथमिकता है।

रणनीतिः 'कमजोरी' को बनाएंगे 'ताकत'

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि जगदीश पंचाल का यह रुख आगामी चुनावों के लिए एक बड़ी रणनीति का हिस्सा है।

ज प्राथमिकताः पिछड़े या विपक्षी झुकाव वाले क्षेत्रों में विकास कार्यों को तेजी से लागू करना।

- **फोकसः** सरकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना।
- **संवादः** जनता के बीच जाकर उनका विश्वास जीतना, न कि जीत के अहंकार में रहना।

पार्टी कैडर को 'टकोर' (चेतावनी)

जगदीश पंचाल ने संगठन के ढांचे को मजबूत करने के लिए 'टकोर' शब्द का प्रयोग किया, जिसका सीधा मतलब है कि काम में ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने साफ कर दिया कि पार्टी का लक्ष्य केवल चुनाव जीतना नहीं, बल्कि हर वर्ग का दिल जीतना है।

महानगर मेट्रो का नज़रियाः

जगदीश पंचाल का यह बयान पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए अनुशासन का पाठ है और विपक्ष के लिए एक बड़ी चुनौती, क्योंकि भाजपा अब उन किलों को भेदने की तैयारी कर रही है जहाँ वह चुनावी रूप से कमजोर रही है।

एडवोकेट विक्रांत राणा सुप्रीम कोर्ट में उत्तर प्रदेश के एडिशनल एडवोकेट जनरल नियुक्त

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली/मुजफ्फरनगर। न्यायिक जगत में मुजफ्फरनगर का नाम एक बार फिर गर्व से ऊंचा हुआ है। आवास विकास कॉलोनी के निवासी और जाने-माने वकील विक्रांत राणा को उत्तर प्रदेश सरकार ने बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है। उन्हें नई दिल्ली स्थित देश की सर्वोच्च अदालत (सुप्रीम कोर्ट) में उत्तर प्रदेश राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए एडिशनल एडवोकेट जनरल के पद पर नियुक्त किया गया है। विक्रांत राणा पिछले 18 वर्षों से सुप्रीम कोर्ट में निरंतर कानूनी प्रैक्टिस कर रहे हैं। कानून की गहरी समझ और जटिल मामलों को सुलझाने की उनकी विशेषज्ञता को देखते हुए राज्य सरकार ने उन पर भरोसा जताया है। गौरतलब है कि विक्रांत राणा, गन्ना विकास परिषद थाना भवन के अध्यक्ष जयप्रकाश राणा के पुत्र हैं। उनकी इस उपलब्धि ने जिले के युवाओं और विशेषकर कानून के छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत पेश किया है।

सुप्रीम कोर्ट में गूँजी पवन खेड़ा की गुहारः 'मुझे हिरासत में लेकर अपमानित किया जाएगा'

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। देश की सर्वोच्च अदालत में मंगलवार को कांग्रेस के कद्दावर नेता पवन खेड़ा और असम सरकार के बीच तीखी कानूनी जंग देखने को मिली। गुवाहाटी हाई कोर्ट से झटका लगने के बाद पवन खेड़ा ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। मामला असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा की पत्नी के खिलाफ की गई कथित टिप्पणी से जुड़ा है। सुनवाई के दौरान खेड़ा के वकीलों ने साफ तौर पर आशंका जताई कि उन्हें सिर्फ नीचा दिखाने के लिए गिरफ्तार किया जा सकता है।

'अपमानित करने की साजिश'

जस्टिस जे.के. महेश्वरी और जस्टिस अतुल एस. चंदुरकर की खंडपीठ के सामने पवन खेड़ा के वकील ने दलील दी कि जिस तरह से पुलिस कार्रवाई कर रही है, वह बदले की भावना से प्रेरित लगती है। खेड़ा की ओर से कहा गया, 'मुझे हिरासत में लेकर अपमानित किया जाएगा।' उन्होंने कोर्ट को भरोसा दिलाया कि वे जांच में पूरा सहयोग कर रहे हैं, फिर भी उनकी अग्रिम जमानत अर्जी को खारिज करना उनके मौलिक अधिकारों का हनन है।

क्या है पूरा विवाद?

- विवादास्पद टिप्पणीः पवन खेड़ा पर आरोप है कि उन्होंने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा की पत्नी के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी की थी।
- असम पुलिस का एक्शनः इस टिप्पणी के बाद असम में उनके खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज किया गया।
- हाई कोर्ट का झटकाः इससे पहले गुवाहाटी हाई कोर्ट ने खेड़ा की अग्रिम जमानत याचिका यह कहते हुए खारिज कर दी थी कि मामले की गंभीरता को देखते हुए राहत नहीं दी जा सकती।

SC ने सुरक्षित रखा फैसला

दोनों पक्षों की दलीलों को सुनने के बाद सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने इस मामले पर अपना आदेश सुरक्षित रख लिया है। कोर्ट अब यह तय करेगा कि क्या पवन खेड़ा को गिरफ्तारी से अंतरिम संरक्षण मिलना चाहिए या उन्हें असम पुलिस की कार्रवाई का सामना करना होगा।

सियासी गलियारों में हड़कंप

पवन खेड़ा की इस कानूनी लड़ाई ने सियासी तापमान बढ़ा दिया है। कांग्रेस इसे अभिव्यक्ति की आजादी पर हमला बता रही है, वहीं भाजपा का कहना है कि महिलाओं और संवैधानिक पदों पर बैठे व्यक्तियों के परिवार के खिलाफ टिप्पणी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। अब सबकी निगाहें सुप्रीम कोर्ट के आने वाले फैसले पर टिकी हैं।

जगन्नाथ मंदिर जमीन घोटालाः अब आर-पार की जंग!

करोड़ों की जमीन 'कौड़ियों' के भाव मुस्लिमों को सौंपी?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

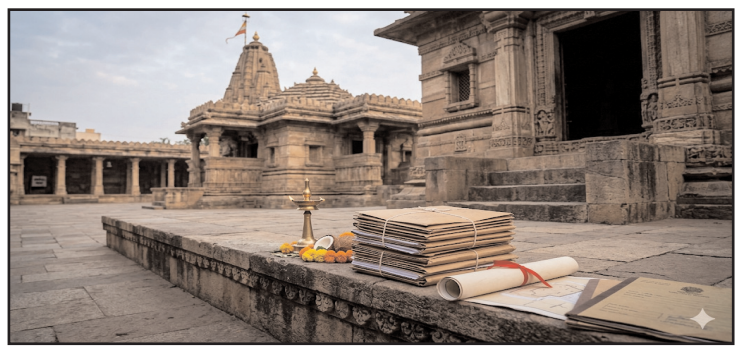

अहमदाबाद। अहमदाबाद की आस्था के केंद्र, भगवान जगन्नाथ मंदिर की संपत्ति को लेकर एक ऐसा खुलासा हुआ है जिसने पूरे शहर के हिंदू समाज में उबाल पैदा कर दिया है। आरोप है कि मंदिर के ट्रस्टियों और महंत ने मिलीभगत कर करोड़ों रुपये की बेशकीमती जमीन को 'कौड़ियों' के दाम पर मुस्लिम समुदाय के हवाले कर दिया। अब इस 'महा-घोटाले' के खिलाफ बिगुल फूंक दिया गया है और सीधी लड़ाई सत्ता के गलियारों तक पहुंच गई है।

192 पार्षदों की दहलीज पर पहुंचेगी 'आस्था की गुहार'

अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉरपोरेशन के नवनिर्वाचित 192 पार्षदों को अब एक-एक कर जगाया जाएगा। इस अभियान के तहत हर पार्षद को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित तो किया जाएगा, लेकिन साथ ही उनके हाथों में थमाए जाएंगे इस भीषण जमीन घोटाले के वो 'काले दस्तावेज', जो मंदिर प्रशासन की नीयत पर सवालिया निशान खड़े करते हैं। यह केवल एक मुलाकात नहीं, बल्कि पार्षदों के लिए 'धर्म-परीक्षा' की घड़ी है। पीएम मोदी को जाएंगे लाखों पत्रः 'सरकार जब्त करे मंदिर का प्रशासन' इस आंदोलन का अगला चरण दिल्ली तक गूँजेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लाखों पत्र भेजने की तैयारी पूरी हो चुकी है। मांग दो टूक और घातक हैः

- SIT जांचः करोड़ों के इस जमीन सौदे की निष्पक्ष जांच हो।
- सरकारी नियंत्रणः भ्रष्ट ट्रस्टियों से मंदिर का वसीहत छीनकर, जगन्नाथ मंदिर का प्रशासन तत्काल 'सरकार' अपने हाथ में ले।
- पार्षदों की गवाहीः पार्षदों से अपील की जा रही है कि वे अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनें और इन पत्रों पर हस्ताक्षर कर इस धर्म-युद्ध में अपना योगदान दें। आस्था से खिलवाड़ या सुनियोजित साजिश? हिंदू समाज पूछ रहा है कि जो जमीन मंदिर की रक्षा और सेवा के लिए भक्तों ने दान दी थी, उसे किसी दूसरे समुदाय को सौंपने का अधिकार ट्रस्टियों को किसने दिया? क्या यह महज एक व्यापारिक सौदा है या हिंदू आस्था को खोखला करने की कोई गहरी अंतरराष्ट्रीय साजिश? जब वक्फ बोर्ड अपनी जमीन को लेकर इतना कट्टर है, तो हिंदू मंदिरों की जमीन 'खैरात' में क्यों बांटी जा रही है?

महानगर मेट्रो का कड़ा प्रहार

यह लड़ाई अब केवल जमीन के टुकड़े की नहीं, बल्कि 'हिंदू अस्मिता' की है। यदि आज खामोश रहे, तो कल मंदिरों के अस्तित्व पर संकट मंडराएगा। भ्रष्ट महंतों और स्वार्थी ट्रस्टियों ने अगर धर्म की संपत्ति को अपनी बपौती समझा है, तो जनता की अदालत उन्हें कभी माफ नहीं करेगी।

आज का सबसे घातक सवालः

क्या हमारे नवनिर्वाचित पार्षद केवल वोट बटोरने के लिए हिंदू हैं, या वे भगवान जगन्नाथ की जमीन को वापस दिलाने के लिए मोदी जी को पत्र लिखने का साहस दिखाएंगे?

'इज़हार-ए-इश्क़' के लिए लफ़्ज़ों की ज़रूरत क्या?

जहाँ खामोशी भी नाम गुनगुनाए...

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पवन माकन ग्रुप एडिटर

आज के इस दौर में जहाँ 'आई लव यू' बोलना एक रिवाज़ बन गया है, क्या आपने कभी उस मोहब्बत के बारे में सोचा है जो शब्दों की मोहताज नहीं होती? सच्ची चाहत वह नहीं जो बुलाने पर हाज़िर हो जाए, बल्कि वह है जो लाख कोशिशों के बाद भी खुद को रोक न पाए। प्रेम की पराकाष्ठा वह है जहाँ प्रेमी आपके बुलाने का इंतज़ार न करे, बल्कि मिलने के सौ बहाने तलाश लाए। जिक्र और फिक्र की अनकही दास्तां मोहब्बत का असली रंग तब चढ़ता है जब सामने वाले की हर बात में, हर किस्से में अनजाने में ही आपका ज़िक्र होने लगे। जब उसकी मंज़िलें चाहे जो भी हों, पर रास्ते मुड़कर आपकी ही तरफ आएं। अक्सर लोग अपने दिल का हाल छुपाने में माहिर होते हैं, लेकिन प्यार वो समंदर है जो आँखों के ज़रिए छलक ही जाता है। आँखों की वो चमक सब कुछ बयां कर देती है जो लफ़्ज़ कभी नहीं कह पाते। खामोशी की गूँज शायर कहते हैं कि प्यार का इज़हार हर बार लफ़्ज़ों में हो, यह ज़रूरी नहीं। असली जादू तो तब है जब महबूब की खामोशी में भी आपका नाम सुनाई दे। वह खुद से तो अपनी भावनाओं को छुपा ले, लेकिन आपकी मौजूदगी उसके लिए वो आईना बन जाए जहाँ वह खुद को भी न झुठला पाए।

एक मुकम्मल अहसास

ऐसी मौजूदगी किसी की ज़िंदगी में बनाना कि वह लाख पर्दे गिरा ले, पर आपसे कुछ न छुपा सके—यही रूहानी रिश्ता है। यह लेख उन तमाम दिल वालों के नाम है जो आज भी 'इश्क़' को ज़बान से नहीं, रूह से महसूस करते हैं। 'मैं नहीं चाहती इज़ हर बार लफ़्ज़ों में हो, उसकी खामोशी भी मेरा नाम गुनगुनाए... ' आज के 'इंस्टेंट' ज़माने में ऐसी गहरी और ठहराव वाली मोहब्बत की ज़रूरत है, जहाँ इंसान एक-दूसरे को बिना कहे समझ सके। अगर आपकी ज़िंदगी में भी कोई ऐसा है जो बिना बुलाए बहाने से आता है, तो यकीन मानिए आप दुनिया के सबसे खुशनसीब इंसान हैं।

प्यार में अंधी हुई रईस परिवार की बेटी, सहेली संग घर बसाने के लिए छोड़ा परिवार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

गांधीनगर। गांधीनगर के एक संपन्न और रईस परिवार में उस वक्त हड़कंप मच गया, जब उन्हें पता चला कि उनकी 19 वर्षीय उच्च शिक्षित बेटी किसी युवक के नहीं, बल्कि अपनी ही एक सहेली के प्यार में पागल है। सोशल मीडिया से शुरू हुआ यह आकर्षण इस कदर परवान चढ़ा कि युवती ने समाज, परिवार और अपने भविष्य की परवाह किए बिना अपनी प्रेमिका के साथ संसार बसाने का फैसला कर लिया।

सोशल मीडिया पर पनपा 'सजातीय' प्रेम

मिली जानकारी के अनुसार, गांधीनगर की रहने वाली 19 वर्षीय युवती की मुलाकात सात महीने पहले इंस्टाग्राम के माध्यम से अहमदाबाद की एक 25 वर्षीय युवती से हुई थी। शुरुआत में दोस्ती हुई, जो धीरे-धीरे प्यार में बदल गई। दोनों के बीच लेस्बियन (समलैंगिक) संबंध बन गए। घर वालों को शक न हो, इसलिए युवती कॉलेज जाने के बहाने घंटों अपनी सहेली के साथ समय बिताने लगी।

मां ने देखा तो उड़ गए होश

इस प्रेम कहानी का खुलासा तब हुआ जब एक दिन मां ने अपनी बेटी को कमरे में संदिग्ध हालत में देखा। सच सामने आते ही परिवार के पैरों तले जमीन खिसक गई। बदनामी के डर से परिवार ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, पाबंदियां भी लगाईं, लेकिन प्यार का जुनून सिर चढ़कर बोल रहा था। युवती दो बार घर छोड़कर भागी, लेकिन दूसरी युवती के घर में भी विवाद होने के कारण उसे वापस आना पड़ा।

तीसरी बार गृह त्याग और हाई वोल्टेज ड्रामा

पाबंदियों से तंग आकर युवती तीसरी बार घर छोड़कर निकल गई और अपनी सहेली के साथ पीजी में रहने लगी। अपना खर्च चलाने के लिए उसने नौकरी ढूंढ ली। जब वह अपने जरूरी दस्तावेजलेने घर पहुंची, तो परिजनों ने उसकी सहेली को कमरे में बंद कर दिया और पुलिस को बुला लिया। 181 'अभयम' की ली शरण जब पुलिस की समझाइश भी काम नहीं आई और परिजनों ने दबाव बनाया, तो 19 वर्षीय युवती ने खुद 181 अभयम हेल्पलाइन को फोन कर मदद मांगी। युवती का स्पष्ट कहना था कि वह बालिग है और उसे अपनी पसंद के व्यक्ति के साथ रहने का संवैधानिक अधिकार है।

खेला हो गया! बंगाल चुनाव खत्म होते ही I-PAC के डायरेक्टर को मिली आजादी, ED की गिरफ्त से बाहर

महानगर मेट्रो ब्यूरो

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के चुनावी दंगल में ममता बनर्जी की नैया पार लगाने वाली कंपनी I-PAC के डायरेक्टर को लेकर एक ऐसी खबर आई है, जिसने सियासी गलियारों में 'करंट' पैदा कर दिया है। जिस डायरेक्टर को प्रवर्तन निदेशालय ने संगीन आरोपों के तहत सलाखों के पीछे भेजा था, उन्हें बंगाल में मतदान की प्रक्रिया पूरी होते ही दूसरे ही दिन जमानत मिल गई। इस 'इत्तेफाकी' रिहाई ने जांच एजेंसियों की कार्यप्रणाली और पर्दे के पीछे की 'मैच फिक्सिंग' पर घातक सवाल खड़े कर दिए हैं। टाइमिंग पर 'घातक' सवालः महज इत्तेफाक या गंदा खेल राजनीतिक पंडित इस रिहाई को सामान्य कानूनी प्रक्रिया मानने को तैयार नहीं हैं। सवाल यह है किः

- जब तक बंगाल में चुनाव का शोर था, तब तक जांच की आंच तेज क्यों थी?
- वोटिंग खत्म होते ही अचानक ऐसी कौन सी कानूनी दलीलें पेश हुईं कि 'जेल के ताले' खुल गए?
- क्या यह रिहाई किसी गुप्त राजनैतिक सौदेबाजी का परिणाम है? श्वष्ठ की कार्रवाई और ÒI-PACÓ का रसूख बता दें कि I-PAC वही एजेंसी है जो तृणमूल कांग्रेस के लिए चुनावी बिसात बिछाती है। इसके डायरेक्टर की गिरफ्तारी को भ्रष्टाचार के खिलाफ एक बड़ी चोट बताया गया था। लेकिन चुनाव खत्म होते ही रिहाई ने यह संदेश दिया है कि जांच एजेंसियों का इस्तेमाल या ढिलाई केवल 'चुनावी मौसम' के मिजाज पर निर्भर करती है। इस घटनाक्रम ने विरोधियों को हमला करने का घातक हथियार दे दिया है। चर्चा गर्म है कि क्या यह 'सेटिंग' का हिस्सा है ताकि पर्दे के पीछे के चेहरों को बचाया जा सके? केंद्रीय एजेंसियों की साख अब दांव पर है, क्योंकि जनता इसे न्याय नहीं, बल्कि 'इलेक्शन मैनेजमेंट' का आखिरी हिस्सा देख रही है। महानगर मेट्रो का प्रहारः अगर सलाखों की मजबूती चुनाव की तारीखों से तय होने लगे, तो लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को यह पूछना ही पड़ेगा कि—क्या कानून अब नेताओं की सहूलियत का गुलाम बन चुका है? चुनाव खत्म, खेल खत्म और शायद जांच भी खत्म!

जनता जिम्मेदारी से भाग रही है, जबकि नेता और अफसर अपनी 'घूसखोरी' की ड्यूटी पूरी ईमानदारी से निभा रहे हैं विशेष दकीय

महानगर मेट्रो ब्यूरो

आज हमारे समाज में भ्रष्टाचार एक ऐसी बीमारी बन चुका है, जिसका इलाज किसी अस्पताल में नहीं, बल्कि इंसान की नीयत में है। लेकिन विडंबना देखिए, इस बीमारी को जड़ से खत्म करने की असली जिम्मेदारी 'जनता' की थी, जिसे निभाने में वह पूरी तरह नाकाम रही है। वहीं दूसरी ओर, रिश्वत लेने की जिम्मेदारी 'नेताओं और पुलिस अधिकारियों' ने अपने कंधों पर उठा रखी है, और यकीन मानिए, वे इसे बड़ी 'बखूबी' और 'निष्ठा' के साथ निभा रहे हैं।

जनता की खामोशी ही भ्रष्टाचार की खाद

भ्रष्टाचार तब तक नहीं मर सकता जब तक उसे सहने वाला जिंदा है। आम जनता अक्सर भ्रष्टाचार को लेकर चाय की दुकानों और सोशल मीडिया पर खूब शोर मचाती है, लेकिन जब खुद के काम की बारी आती है, तो 'शॉर्टकट' ढूंढने के लिए खुद ही जेब ढीली कर देती है। भ्रष्टाचार नाबूद करने की जिम्मेदारी जिस जनता की है, वह अक्सर डर या आलस के चलते इसे बढ़ावा देती है। जब तक हम 'रिश्वत' देने को अपनी मजबूरी मानकर स्वीकार करते रहेंगे, तब तक सफाई की उम्मीद करना बेमानी है।

सिस्टम की 'ईमानदार' बेईमानी

अगर बात करें सिस्टम के उन रखवालों की, जिन पर कानून लागू करने की जिम्मेदारी है, तो वहां नजारा कुछ और ही है। चाहे सफेदपोश नेता हों या वर्दीधारी पुलिस अधिकारी—रिश्वत लेने की कला में इन्होंने 'पीएचडी' कर रखी है।

- **नेताओं की 'नीति':** चुनावी चंदे से लेकर बड़े प्रोजेक्ट्स के कमीशन तक, इनका 'रेट कार्ड' फिक्स है।
- **अधिकारियों की 'कर्तव्यनिष्ठा':** फाइल को आगे बढ़ाने के लिए टेबल के नीचे से होने वाला लेन-देन इनके लिए किसी 'पूजा' से कम नहीं है।

ये लोग अपना काम इतनी सफाई और एकजुटता से करते हैं कि आम आदमी सिस्टम की भूलभुलैया में ही खोकर रह जाता है।

अब फैसला जनता के हाथ में है

महानगर मेट्रो का यह साफ मानना है कि

जब तक लेने वाले को देने वाले का डर नहीं होगा, तब तक यह खेल चलता रहेगा। जनता ने अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लिया है, जिसका फायदा यह 'सिस्टम' उठा रहा है। अगर भ्रष्टाचार को सच में नाबूत करना है, तो हमें अपनी सुविधा के लिए सिस्टम को दूषित करना बंद करना होगा।

याद रखिएः अगर आप आज अपना काम निकलवाने के लिए पैसा दे रहे हैं, तो आप केवल एक अधिकारी की जेब नहीं भर रहे, बल्कि आने वाली पीढ़ी के भविष्य में जहर घोल रहे हैं।

गौतम बुद्ध के उपदेश और आज की दुनिया में उनकी प्रासंगिकता

पवन माकन
ग्रुप एडिटर, महानगर मेट्रो

शास्त्रों के अनुसार वैशाख शुक्ल त्रयोदशी से लेकर पूर्णिमा तक की तिथियों को 'पुष्करणी तिथियाँ' कहा जाता है। मान्यता है कि एकादशी को अमृत प्रकट हुआ, द्वादशी को भगवान विष्णु ने उसकी रक्षा की, त्रयोदशी को देवताओं ने अमृत का पान किया, चतुर्दशी को दैत्यों का संहार हुआ और पूर्णिमा को देवताओं को उनका राज्य पुनः प्राप्त हुआ। इस दिन यमराज (धर्मराज) की कृपा प्राप्त करने के लिए व्रत रखने और दान करने का विशेष विधान है।

हर वर्ष वैशाख मास की पूर्णिमा तिथि पर बुद्ध पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। मान्यता है कि इस दिन भगवान विष्णु के नौवें अवतार महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ था। इस वर्ष बुद्ध पूर्णिमा 1 मई 2026, शुक्रवार को मनाई जाएगी। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार इस वर्ष पूर्णिमा तिथि 30 अप्रैल की रात 09 बजकर 12 मिनट से शुरू होकर 1 मई 2026 की रात 10 बजकर 52 मिनट तक प्रभावी रहेगी। उदया तिथि के अनुसार यह पर्व 1 मई को मनाया जाएगा। यह दिन भगवान बुद्ध के जन्म, ज्ञान प्राप्ति (बोधि) और महापरिनिर्वाण-तीनों की स्मृति को समर्पित है। इस अवसर पर देश-विदेश में श्रद्धालु ध्यान, प्रार्थना, दान और अहिंसा के संदेश का पालन करते हैं। विशेषकर बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर जैसे पवित्र स्थलों पर बड़े आयोजन होते हैं। बुद्ध पूर्णिमा का पर्व हमें करुणा, शांति और मध्यम मार्ग के सिद्धांतों को अपनाने की प्रेरणा देता है, जिससे मानव जीवन में नैतिकता और सद्भाव का विकास होता है।पाठकों को बताता चलूं कि वैशाख पूर्णिमा को 'बुद्ध पूर्णिमा', 'पीपल पूर्णिमा' और 'बुद्ध जयंती' के नाम से भी जाना जाता है। ऊपर इस आलेख में चर्चा कर चुका हूं कि यह दिन भगवान विष्णु को भी समर्पित माना जाता है, क्योंकि पुराणों के अनुसार महात्मा बुद्ध को भगवान विष्णु का नौवां अवतार माना गया है। स्कन्द पुराण में वैशाख मास को समस्त मासों में श्रेष्ठ बताया गया है, इसलिए यह मास विष्णु भगवान को अत्यंत प्रिय है। इस दिन भगवान विष्णु के सत्यनारायण स्वरूप की पूजा की जाती है। पद्म पुराण और मत्स्य पुराण में वैशाख मास में स्नान और दान को श्रेष्ठ बताया गया है-वैशाखे मासि स्नानं च, दानं च विशेषतः। इस मास में पवित्र तीर्थों पर स्नान, दान-पुण्य और व्रत से मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।

शास्त्रों के अनुसार वैशाख शुक्ल त्रयोदशी से लेकर पूर्णिमा तक की तिथियों को 'पुष्करणी तिथियाँ' कहा जाता है। मान्यता है कि एकादशी को अमृत प्रकट हुआ, द्वादशी को भगवान विष्णु ने उसकी रक्षा की, त्रयोदशी को देवताओं ने अमृत का पान किया, चतुर्दशी को दैत्यों का संहार हुआ और पूर्णिमा को देवताओं को उनका राज्य पुनः प्राप्त हुआ। इस दिन यमराज (धर्मराज) की कृपा प्राप्त करने के लिए व्रत रखने और दान करने का विशेष विधान है। शक्कर, तिल, पंखे, जूते-चप्पल, घड़ा, दूध-खीर, अन्न-वस्त्र आदि का दान अत्यंत पुण्यकारी

माना जाता है। पूर्णिमा के दिन चंद्रदेव को अर्घ्य देना शुभ फलदायी होता है। साथ ही मां लक्ष्मी की पूजा से घर में सुख, समृद्धि और सौभाग्य बढ़ता है। उन्हें बताशा, खीर, मिठाई, नारियल और कमल का फूल अर्पित किया जाता है। इस दिन भगवान राम और हनुमान जी की पूजा भी की जाती है तथा हनुमान जी को सिंदूर चढ़ाया जाता है। पितरों के निमित्त पिंडदान करने से उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है और परिवार में शांति एवं समृद्धि आती है। हाल फिलहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि भगवान गौतम बुद्ध को 'एशिया का प्रकाश' कहा जाता है। उनका जन्म 563 ईसा पूर्व नेपाल के कपिलवस्तु स्थित लुम्बिनी वन में वैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था। उनके पिता शुद्धोधन शाक्यवंश के राजा थे और माता महामाया थीं। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था और उनका पालन-पोषण राजकुमार के रूप में हुआ। बाद में उन्होंने सांसारिक जीवन त्यागकर सत्य की खोज की।

आज के संदर्भ में देखा जाए तो उनका जन्म नेपाल में हुआ, लेकिन उनकी कर्मभूमि भारत रही। यहीं उन्हें बोधि प्राप्त हुई और यहीं से उन्होंने संपूर्ण विश्व को ज्ञान का संदेश दिया। आज जापान, उत्तर कोरिया, दक्षिण कोरिया, चीन, वियतनाम, ताइवान, तिब्बत, भूटान, कंबोडिया, हांगकांग, मंगोलिया, थाईलैंड, मकाऊ, म्यांमार, श्रीलंका जैसे अनेक देश बौद्ध संस्कृति से प्रभावित हैं। पाठक जानते हैं कि महात्मा बुद्ध ने जीवन में अहिंसा, करुणा, शांति, मैत्री और बंधुत्व का संदेश दिया। उनके अनुसार मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही बन जाता है। शुद्ध विचारों से किया गया कर्म सुख देता है और अशुद्ध विचार दुख का कारण बनते हैं। उन्होंने कहा कि तीन चीजें कभी छुपाई नहीं जा सकतीं-सूर्य, चंद्रमा और सत्य। उनका यह भी संदेश था कि एक दीपक हजारों दीपक जला सकता है, फिर भी उसकी रोशनी कम नहीं होती, इसी प्रकार सदुण बांटने से कम नहीं होते। बुद्ध के अनुसार व्यक्ति को वर्तमान में जीना चाहिए, क्योंकि भूतकाल और भविष्य में खोकर दुख ही मिलता है। उन्होंने कहा कि बुराई से बुराई को नहीं जीता जा सकता, प्रेम से ही संसार जीता जा सकता है। जो व्यक्ति स्वयं पर विजय प्राप्त कर लेता है, वही वास्तविक विजेता है। क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है और क्रोध से स्वयं को ही नुकसान होता है। उनका यह भी कहना था कि केवल ज्ञान पढ़ना या सुनना पर्याप्त नहीं है, जब तक उसे जीवन में न अपनाया जाए उसका कोई लाभ नहीं। बुद्ध ने यह स्पष्ट किया कि उनके उपदेशों को बिना जांचे स्वीकार न किया जाए। उन्होंने कहा कि मनुष्य अपनी बुद्धि और अनुभव से सत्य को परखे। उनका धर्म तर्कसंगत, वैज्ञानिक सोच पर आधारित और अंधविश्वास विरोधी था। वे मानते थे कि संसार में अंतिम और अपरिवर्तनीय कुछ भी नहीं है, केवल परिवर्तन ही सत्य है।

बहरहाल, आज विश्व में कई क्षेत्रों में युद्ध और तनाव की स्थिति बनी हुई है। रूस-यूक्रेन युद्ध, इजराइल-हमास संघर्ष, चीन-ताइवान तनाव, भारत-चीन सीमा विवाद, उत्तर कोरिया-दक्षिण कोरिया तनाव और ईरान-इजराइल तनाव वैश्विक शांति के लिए गंभीर चुनौती हैं। ऐसे समय में बुद्ध के विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं, क्योंकि उन्होंने युद्ध का पूर्ण विरोध किया और कहा कि हर युद्ध में केवल विनाश और पीड़ा होती है।

उन्होंने 'आष्टांगिक मार्ग' बताया-सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि। यही मार्ग मनुष्य को राग, द्वेष, मोह, लोभ, घृणा और भय से मुक्त करता है। इन्हीं विकारों से हिंसा, शोषण, अन्याय, आतंकवाद और युद्ध उत्पन्न होते हैं। आज की दुनिया में तनाव, अवसाद, आर्थिक असमानता और नैतिक गिरावट बढ़ रही है, ऐसे में बुद्ध का मार्ग समाधान प्रस्तुत करता है। इतना ही नहीं, उन्होंने पंचशील सिद्धांत भी दिए।मसलन -चोरी न करना, व्यभिचार न करना, झूठ न बोलना, नशा न करना आदि। साथ ही उन्होंने सामाजिक समानता, महिला सशक्तिकरण और नैतिक जीवन पर बल दिया।बुद्ध ने यह भी कहा कि घृणा को घृणा से नहीं जीता जा सकता, उसे केवल प्रेम से जीता जा सकता है। वास्तव में, क्रोध में हजारों शब्दों को गलत बोलने से अच्छा मौन वह एक शब्द है जो शांति लाता है। उनका यह संदेश आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पहले था।

अंततः बुद्ध पूर्णिमा केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि शांति, करुणा, अहिंसा और मानवता का संदेश देने वाला पावन दिन है। यह हमें गौतम बुद्ध के जीवन से प्रेरणा लेकर संयम, सत्य, सद्भाव और विश्व शांति के मार्ग पर चलने की सीख देता है। आज के तनावपूर्ण वैश्विक समय में यह पर्व मानवता को एकता, प्रेम और सह-अस्तित्व की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करता है।

(फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार)

संपादकीय

राहतकारी हो आईसीयू

अक्सर ऐसी खबरें सामने आती रहती हैं कि देश के किसी भाग में किसी निजी अस्पताल के आईसीयू में भर्ती मरीज के ठीक होने या ठीक होने की संभावना के बावजूद उसे डिस्चार्ज नहीं किया जाता है। वजह होती है कि अस्पताल का अनवरत गति से चलने वाला कमाई का मीटर। निस्संदेह, आधुनिक चिकित्सा खचीर्ली हो गई और बेहतर सुविधाओं के लिए बड़ी रकम चुकानी होती है। लेकिन इस व्यवस्था का मानवीय व संवेदनशील होना अपरिहार्य है। इसके नियमन का कार्य यूं तो देश के नीति-नियंताओं और शासन-प्रशासन को करना चाहिए था। लेकिन विडंबना यह है कि अदालत को ऐसे मामलों में पहल करनी पड़ती है। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा एक समान गहन चिकित्सा ईकाई दिशानिदेर्शों की जरूरत बताना विसंगतियों से जूझती आईसीयू प्रणाली के लिए एक आशा की किरण लेकर आई है। इन दिशानिदेर्शों में यह निर्दिष्ट किया गया है कि चिकित्सकीय रूप से स्थिर हो चुके या जिन मरीजों के अंगों को बाहरी सहायता अथवा शारीरिक निगरानी की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी जानी चाहिए। उन्हें अन्य सामान्य वार्डों में स्थानांतरित किया जा सकता है। निश्चित रूप से न्यायालय के ये निर्देश चिकित्सकीय और नैतिक दोनों ही हैं। जो बताते हैं कि जरूरी न होने के बावजूद मरीज को लंबे समय तक आईसीयू में रखना अनुचित है। यह एक हकीकत है कि मानकीकृत आईसीयू प्रोटोकॉल के अभाव में एक अस्पष्ट स्थिति पैदा हो जाती है, जिसकी वजह से मरीज से जुड़े निर्णय असमंजस का शिकार होकर रह जाते हैं। वास्तव में आईसीयू में भर्ती मरीजों के तिमारदारों को चिकित्सा प्रक्रिया की गहन जानकारी अक्सर नहीं होती है। वे केवल चिकित्सक के दिशा-निदेर्शों पर ही निर्भर होकर रह जाते हैं। यही वजह है कि अस्पताल प्रबंधन के रहमो-करम पर मरीज को महंगे आईसीयू में लंबे समय तक भर्ती रहने को मजबूर होना पड़ता है। कई बार ऐसा भी होता है कि गहन चिकित्सा कक्ष में भर्ती रहने के बावजूद मरीज को उपचारीय लाभ नहीं मिल रहा होता है। सही मायनों में सुप्रीम कोर्ट के ये दिशानिर्देश एक सरल व सामान्य सिद्धांत की पुष्टि करते हुए इस विसंगति को दूर करने का प्रयास करते हैं कि किसी भी अस्पताल का आईसीयू मरीज की अनिश्चितकालीन देखभाल के लिए नहीं होता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि शीर्ष अदालत ने समस्या के यथाशीघ्र समाधान की जरूरत पर बल दिया है। अदालत ने डॉक्टरों की प्रतिष्ठा को संरक्षित करते हुए चिकित्सा संस्थानों व अस्पतालों की जवाबदेही सुनिश्चित करने पर बल दिया है। इस दिशा में व्यवस्थागत मुद्दों पर जोर दिया गया है, जिसमें नर्स व मरीज के अनुपात, विशेषज्ञ पर्यवेक्षण, मानक बुनियादी ढांचा और प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित कराना एक सराहनीय पहल कही जाएगी। निश्चित रूप से भारत जैसे देश में जहां स्वास्थ्य सेवा की गुणवत्ता में भारी असमानता है, ये न्यूनतम मानदंड अधिक न्यायसंगत देखभाल के लिए आधार बन सकते हैं। सही मायनों में राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने और समयबद्ध कार्य योजना तैयार करनी चाहिए। साथ ही निर्देश नीति के क्रियान्वयन हेतु तत्परता दिखानी चाहिए। लेकिन विगत के अनुभव बताते हैं कि एक अच्छे इरादे वाली कार्ययोजना तब अपने लक्ष्य पाने में विफल हो जाती हैं जब उसका क्रियान्वयन आधे-अधूरे ढंग से किया जाता रहा है।

चिंतन-मनन

विनम्रता का पाठ

पंडित विद्याभूषण बहुत बड़े विद्वान थे। दूर-दूर तक उनकी चर्चा होती थी। उनके पड़ोस में एक अशिक्षित व्यक्ति रहते थे-रामसेवक। वे अत्यंत सज्जन थे और लोगों की खूब मदद किया करते थे। पंडित जी रामसेवक को ज्यादा महत्व नहीं देते थे और उनसे दूर ही रहते थे। एक दिन पंडित जी अपने घर के बाहर टहल रहे थे। तभी एक राहगीर उधर आया और मोहल्ले के एक दुकानदार से पूछने लगा-भाई यह बताओ कि पंडित विद्याभूषण जी का मकान कौन सा है। यह सुनकर पंडित जी की उत्सुकता बढ़ी। वह सोचने लगे कि आखिर यह कौन है जो उनके घर का पता पूछ रहा है। तभी दुकानदार ने उस राहगीर से कहा-मुझे तो किसी पंडित जी के बारे में नहीं मालूम। तब राहगीर ने कहा-क्या रामसेवक जी का घर जानते हो?

दुकानदार ने हंसकर कहा-अरे भाई उन्हें कौन नहीं जानता। वे बड़े भले आदमी हैं। फिर उसने हाथ दिखाकर कहा- वो रहा रामसेवक जी का घर। फिर दुकानदार ने राहगीर से सवाल किया-लेकिन आपको काम किससे है? पंडित जी से या रामसेवक जी से? राहगीर कहने लगा-भाई काम तो मुझे रामसेवक जी से है। पर उन्होंने ही बताया था कि उनका मकान पंडित विद्याभूषण जी के पास है। यह सुनकर पंडित जी ग्लानि से भर उठे। सोचने लगे कि उन्होंने हमेशा ही रामसेवक को अपने से हीन समझा और उसकी उपेक्षा की पर रामसेवक कितना विनम्र है। वह खुद बहुत प्रसिद्ध होते हुए भी उन्हें ज्यादा महत्व देता है। उसी रात पंडित जी रामसेवक के घर गए और उससे क्षमायाचना की। फिर दोनों गहरे मित्र बन गए।

4 मई के बाद बदल जाएगी देश की राजनीति

संतोष कुमार पाठक

देश के चार राज्यों- असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल एवं एक केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में हुए विधानसभा चुनाव को लेकर तमाम एग्जिट पोल भी सामने आ चुके है। इस बार का विधानसभा चुनाव , इस मायने में बहुत खास है कि इसमें देश के दो प्रमुख राष्ट्रीय राजनीतिक दलों-कांग्रेस और बीजेपी के साथ ही तृणमूल कांग्रेस, डीएमके और एआईएडीएमके जैसे ताकतवर क्षेत्रीय दलों की प्रतिष्ठा भी दांव पर लगी है। सबसे बड़ा सवाल तो लेफ्ट फ्रंट के दलों के सामने खड़ा हो गया है क्योंकि केरल की सत्ता हाथ से जाते ही उनके सामने अस्तित्व का संकट खड़ा हो जाएगा। त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल में तो लेफ्ट पार्टियां पहले ही साफ हो चुकी है।

जाहिर है कि इन पांच राज्यों/केंद्र शासित प्रदेश के चुनावी नतीजें सिर्फ इन राज्यों के मुख्यमंत्री ही तय नहीं करेंगे बल्कि दोनों गठबंधन- एनडीए एवं इंडिया को भी प्रभावित करेंगे। यह भी एक तथ्य है कि चाहे, चुनावी नतीजे जो भी आए लेकिन इसके बाद देश के दो प्रमुख राजनीतिक दलों में तेजी से बड़े बदलाव दिखाई देने लगेंगे।

बीजेपी ने नितिन नवीन को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाकर कई महीने पहले ही बदलाव की शुरूआत कर दी थी लेकिन वह बदलाव अभी संगठन के ढांचे और सरकार तक नहीं पहुंच पाया है। बताया जा रहा है कि चुनावी नतीजों के बाद नितिन नवीन की नई टीम के गठन के लिए उच्चस्तरीय बैठकों का दौर शुरू होगा। बीजेपी आलाकमान के सामने सबसे बड़ी चुनौती इस बात की है कि वो बुजुर्ग हो चुके नेताओं को संगठन से बाहर रहने के लिए कैसे मना पाते हैं क्योंकि सबसे युवा अध्यक्ष चुनने के बाद पार्टी उनकी टीम को भी युवा नेताओं से ही भरना चाहती है। पार्टी के युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष की अध्यक्षता में बीजेपी को पार्टी का फैसला लेने वाली सर्वोच्च ईकाई संसदीय बोर्ड, उम्मीदवारों का चयन करने वाली केंद्रीय चुनाव समिति के साथ ही राष्ट्रीय पदाधिकारियों और मोर्चों का पुनर्गठन करना है। पार्टी में नए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय महासचिव, राष्ट्रीय सचिव, राष्ट्रीय प्रवक्ता, मीडिया सहित विभिन्न विभागों की टीम के साथ ही राष्ट्रीय मोर्चों का भी पुनर्गठन करना है। इसके बाद बदलाव की यही प्रक्रिया सरकार और राज्यों में भी की जानी है। नई टीम में एक तरफ जहां युवा और अनुभवी नेताओं का संतुलन बनाना होगा वहीं महिलाओं को भी ज्यादा से ज्यादा जगह देनी होगी। बताया जा रहा है कि 4 मई को चुनावी नतीजे आने के 10-15 दिनों के अंदर नितिन नवीन की नई राष्ट्रीय टीम का ऐलान हो सकता है और इसके बाद भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय मुख्यालय का पूरा स्वरूप ही बदला-बदला नजर आएगा।

कांग्रेस में भी बड़े पैमाने पर बदलाव की शुरूआत आने वाले दिनों में होने जा रही है। मोदी-शाह की जोड़ी ने 46 वर्ष के नितिन नवीन को बीजेपी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाकर राहुल और सोनिया गांधी के सामने दुविधा की स्थिति पैदा कर दी है। मल्लिकार्जुन खड़गे सुलझे हुए परिपक्व नेता तो हैं लेकिन 2029 के लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस को भी एक युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ युवा नेताओं की टीम तो खड़ी करनी ही पड़ेगी। हालांकि यह भी बताया जा रहा है कि राहुल गांधी अभी भी इस बात पर अड़े हुए हैं कि गांधी परिवार का कोई भी व्यक्ति पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष नहीं बनेगा। ऐसे में जाहिर से बात है कि कांग्रेस को राहुल और प्रियंका गांधी से इतर जाकर अन्य युवा नेताओं की तरफ देखना पड़ेगा। इस रेस में फिलहाल सचिन पायलट सबसे आगे बताए जा रहे हैं। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा, दोनों के चहेते नेता सचिन पायलट को आने वाले दिनों में कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया जा सकता है, अगर अशोक गहलोत ने पार्टी के बुजुर्ग नेताओं के साथ मिलकर कोई और खेला नहीं कर दिया तो। ध्यान दीजिएगा कि, यह अकारण नहीं है कि पिछले कुछ दिनों से गहलोत बार-बार पायलट की बगावत का किस्सा सुनाने में लगे हुए है। लेकिन अगर पायलट का नाम पीछे छूट भी गया तो भी राहुल गांधी को पार्टी के लिए नया और वो भी युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष तो ढूंढना ही पड़ेगा। कांग्रेस के अंदर वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे को लेकर भी सुगबुगाहट शुरू हो गई है। कहा जा रहा है कि कर्नाटक में मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार की गुटबाजी पर लगाम कसने के लिए खड़गे को मुख्यमंत्री बनाकर बेंगलुरू भेजा जा सकता है और उनकी जगह पर दिल्ली में नए राष्ट्रीय अध्यक्ष को बैठाया जा सकता है। जाहिर सी बात है कि अगर खड़गे कर्नाटक जाएंगे तो फिर पार्टी को राज्यसभा में भी अपना नया नेता चुनना पड़ेगा। नए राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ राष्ट्रीय संगठन महासचिव भी किसी युवा नेता को ही बनाना पड़ेगा और उसके बाद कांग्रेस मुख्यालय में भी नए चेहरों की संख्या बढ़ जाएगी।

यह तय मान कर चलिए कि बीजेपी के राष्ट्रीय संगठन में मई के महीने में ही बदलाव होना तय है। हालांकि कांग्रेस में बदलाव की यह रफ्तार थोड़ी धीमी हो सकती है।

मेहनत की नींव पर टिकी दुनिया: मजदूरों के संघर्ष, योगदान और वर्तमान चुनौतियों की गाथा

कांतिलाल मांडोत

मानव सभ्यता के विकास की कहानी अगर ध्यान से पढ़ी जाए तो उसके हर पन्ने पर मजदूरों की मेहनत, पसीना और संघर्ष साफ दिखाई देता है। चाहे ऊंची-ऊंची इमारतें हों, विशाल पुल हों, फैक्ट्रियां हों या फिर खेतों में लहलहाती फसलें–हर जगह एक मजदूर की मेहनत छिपी होती है। फिर भी विडंबना यह है कि समाज के इस सबसे महत्वपूर्ण वर्ग को अक्सर वह सम्मान, सुरक्षा और सुविधाएं नहीं मिल पातीं, जिसके वे हकदार हैं। इसी सच्चाई को याद दिलाने और मजदूरों के अधिकारों को लेकर जागरूकता फैलाने के लिए हर साल 1 मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है।

मजदूर दिवस केवल एक उत्सव नहीं है, बल्कि यह एक संघर्ष की याद है। यह उन दिनों की कहानी कहता है जब मजदूरों को 15-16 घंटे तक काम करना पड़ता था, बिना किसी निश्चित समय सीमा और बिना पर्याप्त वेतन के। 19वीं सदी के अंत में जब औद्योगिक क्रांति अपने चरम पर थी, तब मजदूरों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। ऐसे समय में उन्होंने अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाई और 8 घंटे कार्य दिवस की मांग की। यह मांग धीरे-धीरे एक बड़े आंदोलन में बदल गई, जिसने पूरी दुनिया को प्रभावित किया। आज जो हमें 8 घंटे काम, 8 घंटे आराम और 8 घंटे अपने लिए का सिद्धांत मिलता है, वह इन्हीं संघर्षों की देन है।

भारत में मजदूरों की स्थिति भी अलग नहीं रही। आजादी से पहले और उसके बाद भी मजदूर वर्ग ने कई कठिनाइयों का सामना किया। 1 मई 1923 को भारत में पहली बार मजदूर दिवस मनाया गया, जिसने श्रमिक आंदोलनों को एक नई दिशा दी। इसके बाद धीरे-धीरे मजदूरों के अधिकारों के लिए कानून बनाए गए, जिनमें न्यूनतम मजदूरी, कार्य समय, सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा जैसी व्यवस्थाएं शामिल हैं। लेकिन कागजों पर बने ये नियम आज भी पूरी तरह जमीन पर लागू नहीं हो पाए हैं।

आज के समय में भी मजदूरों की स्थिति पूरी तरह संतोषजनक नहीं कही जा सकती। खासकर असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों को आज भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें नियमित रोजगार नहीं मिलता, वेतन अस्थिर होता है और सामाजिक सुरक्षा का अभाव रहता है। निर्माण कार्य में लगे मजदूरों को देखें तो वे कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं, लेकिन उनके पास न तो उचित सुरक्षा उपकरण होते हैं और न ही स्वास्थ्य सुविधाएं।

ऊंची-ऊंची इमारतों के निर्माण में मजदूरों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। वे तपती धूप में, कड़कती सर्दी में और कभी-कभी बारिश में भी लगातार काम करते हैं। उनके बिना शहरों का विकास संभव ही नहीं है। लेकिन इन्हीं इमारतों के बनने के बाद अक्सर मजदूरों को वहां रहने का अधिकार नहीं मिलता। वे झुग्गियों या अस्थायी बस्तियों में रहने को मजबूर होते हैं, जहां बुनियादी सुविधाओं का भी अभाव होता है।

सरकार ने मजदूरों की स्थिति सुधारने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। इनमें मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) एक महत्वपूर्ण योजना है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को रोजगार उपलब्ध कराना है। इस योजना ने कई गरीब परिवारों को आर्थिक सहारा दिया है और उन्हें पलायन से भी रोका है। लेकिन इसके बावजूद कई बार इस योजना के क्रियान्वयन में खामियां देखने को मिलती हैं, जैसे समय पर भुगतान न होना या काम की कमी।

वैश्वीकरण और तकनीकी विकास ने मजदूरी के स्वरूप को भी बदल दिया है। आज के दौर में पारंपरिक मजदूरी के साथ-साथ गिग इकॉनमी और फ्रीलांसिंग जैसे नए विकल्प सामने आए हैं। हालांकि इससे कुछ लोगों को नए अवसर मिले हैं, लेकिन इससे रोजगार की स्थिरता कम हुई है। कई मजदूर अब ठेका प्रणाली के तहत काम करते हैं, जिससे उन्हें स्थायी नौकरी और उससे जुड़ी सुविधाएं नहीं मिल पातीं।

कोरोना महामारी ने मजदूरों की स्थिति को और भी कठिन बना दिया था। लॉकडाउन के दौरान लाखों मजदूरों को अपने काम से हाथ धोना पड़ा और उन्हें अपने गांवों की ओर पलायन करना पड़ा। यह दृश्य आज भी लोगों के मन में ताजा है, जब मजदूर सैकड़ों किलोमीटर पैदल चलकर अपने घर पहुंचे थे। इस घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि हमारे समाज में मजदूरों की स्थिति कितनी असुरक्षित है।

महिलाओं की स्थिति मजदूर वर्ग में और भी चुनौतीपूर्ण है। उन्हें पुरुषों के मुकाबले कम वेतन मिलता है और कई बार उन्हें दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ती है,घर और काम दोनों की। इसके अलावा उन्हें कार्यस्थल पर सुरक्षा और सम्मान से जुड़ी समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। ऐसे में महिलाओं के लिए विशेष नीतियों और सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है।

मजदूर दिवस हमें यह सोचने का अवसर देता है कि क्या हम वास्तव में अपने मजदूरों के प्रति न्याय कर पा रहे हैं? क्या उन्हें वह सम्मान, सुरक्षा और सुविधाएं मिल रही हैं, जिनके वे हकदार हैं? केवल एक दिन उन्हें सम्मान देने से काम नहीं चलेगा, बल्कि हमें पूरे साल उनके हितों के लिए काम करना होगा।

समाज और सरकार दोनों की जिम्मेदारी है कि मजदूरों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं। इसके लिए न केवल कानूनों को सख्ती से लागू करना होगा, बल्कि लोगों में जागरूकता भी बढ़ानी होगी। मजदूरों को उनके अधिकारों के बारे में जानकारी देना और उन्हें संगठित करना भी जरूरी है, ताकि वे अपने अधिकारों के लिए आवाज उठा सकें।

अंततः, मजदूर केवल एक वर्ग नहीं हैं, बल्कि वे हमारे समाज की रीढ़ हैं। उनके बिना विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसलिए हमें उनके योगदान को समझना होगा और उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए हर संभव प्रयास करना होगा। मजदूर दिवस हमें यही संदेश देता है कि सम्मान, समानता और न्याय केवल शब्द नहीं, बल्कि हर मजदूर का अधिकार है।

(वरिष्ठ पत्रकार साहित्यकार-स्तम्भकार)

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

ड्यूटी से गायब ट्रैफिक सिपाही और दारोगा में छिड़ी जंग; संभल SP केके बिश्नोई ने लिया एक्शन

महानगर मेट्रो ब्यूरो

संभल। जिले में गंगा एक्सप्रेसवे के इंटरचेंज पॉइंट पर तैनात हेड कांस्टेबल जय भगवान मंगलवार दोपहर अपनी ड्यूटी से गायब मिले. ट्रैफिक पुलिस प्रभारी दुष्यंत बालियान जब औचक निरीक्षण करने पहुंचे, तो लहरावन गांव के पास तैनात सिपाही वहां मौजूद नहीं था. इसके तुरंत बाद प्रभारी ने सिपाही की गैरहाजिरी की रपट लिख दी. सिपाही का दावा है कि वह पेट खराब होने के कारण पास के पेट्रोल पंप पर शौच के लिए गया था. जब उसने यह दलील दी, तो प्रभारी ने कथित तौर पर विवादित टिप्पणी करते हुए कहा कि उन्होंने उसकी 'पॉटी का ठेका' नहीं ले रखा है. यह विवाद अब सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद बड़ा मुद्दा बन गया है.

सिपाही ने लगाए अवैध वसूली के गंभीर आरोप

इस विवाद के बाद हेड कांस्टेबल जय भगवान ने ट्रैफिक पुलिस प्रभारी दुष्यंत बालियान पर पलटवार करते हुए गंभीर आरोप लगाए हैं. वायरल वीडियो में सिपाही का दावा है कि प्रभारी अवैध रूप से ट्रकों का संचालन करवाते हैं. सिपाही के मुताबिक, कांवड़ यात्रा के दौरान उसने मिट्टी से लदा एक डंपर रोका था और प्रभारी के ट्रकों का चालान करने की वजह से वे उससे रंजिश रखते हैं. सिपाही ने कहा कि इसी चिढ़ की वजह से मामूली मानवीय जरूरत के लिए जाने पर उसकी रपट लिखी गई और अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल किया गया.

एसपी ने दोनों पुलिसकर्मियों को किया लाइन हाजिर

मामला बढ़ता देख और सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद संभल के पुलिस अधीक्षक (एसपी) कृष्ण कुमार बिश्नोई ने कड़ी कार्रवाई की है. एसपी ने हेड कांस्टेबल जय भगवान और ट्रैफिक पुलिस प्रभारी दुष्यंत बालियान, दोनों को तत्काल प्रभाव से लाइन हाजिर कर दिया है. एसपी ने बताया कि सिपाही के गैरहाजिर मिलने और उसके द्वारा लगाए गए आरोपों का संज्ञान लिया गया है. इस पूरे प्रकरण की गहराई से जांच के लिए विभागीय आदेश भी जारी कर दिए गए हैं ताकि सच सामने आ सके.

दिल्ली में कमर्शियल वाहनों की एंट्री होगी महंगी, प्रदूषण पर सख्ती, ECC में बड़ा इजाफा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

दिल्ली। में प्रदूषण पर लगाम लगाने के लिए सरकार ने बड़ा कदम उठाया है. सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद कमर्शियल वाहनों पर एनवायरनमेंटल कम्पेन्सेशन चार्ज बढ़ा दिया गया है. नई दरों के तहत अब दिल्ली में प्रवेश महंगा होगा. इससे डीजल वाहनों की आवाजाही पर असर पड़ेगा.

नई व्यवस्था के तहत कैटेगरी 2 (हल्के वाणिज्यिक वाहन आदि) और कैटेगरी 3 (2 एक्सल ट्रक) के लिए ECC 1,400 से बढ़ाकर ?2,000 कर दिया गया है. वहीं कैटेगरी 4 (3 एक्सल ट्रक) और कैटेगरी 5 (4 एक्सल ट्रक और उससे ऊपर) के लिए ECC ?2,600 से बढ़ाकर 4,000 कर दिया गया है.

दिल्ली सरकार की ओर से जारी अधिसूचना को प्रदूषण के खिलाफ एक बड़ी कार्रवाई माना जा रहा है. पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि यह कदम सिर्फ राजस्व बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि प्रदूषण फैलाने वाले कमर्शियल वाहनों की अनावश्यक एंट्री को रोकने के लिए उठाया गया है.

29 अप्रैल को जारी इस फैसले की पृष्ठभूमि में कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट की सिफारिशें हैं. CAQM ने ECC की दरों को संशोधित करने का प्रस्ताव दिया था, ताकि इसकी रोकथाम क्षमता को फिर से मजबूत किया जा सके. प्रदूषण वाले वाहनों की एंट्री को कम किया जा सके.

दिल्ली सरकार का कहना है कि संशोधित ECC का उद्देश्य कम प्रदूषण वाले परिवहन विकल्पों को बढ़ावा देना है. सिरसा ने साफ कहा, ''दिल्ली अब अनावश्यक प्रदूषण का बोझ नहीं उठा सकती. ECC बढ़ाकर सरकार ने संदेश दिया है कि प्रदूषण वाले वाहनों को प्रवेश के लिए भारी कीमत देनी होगी.''

इस व्यवस्था में एक अहम बदलाव यह है कि हर वर्ष ECC में 5 फीसदी की बढ़ोतरी तय की गई है. यह बढ़ोतरी हर साल अप्रैल महीने से लागू होगी. इससे ECC की प्रभावशीलता बनी रहेगी और महंगाई के असर को भी संतुलित किया जा सकेगा. सिर्फ एक बार बढ़ोतरी करना पर्याप्त नहीं है. ट्रांसपोर्टरों को धीरे-धीरे प्रदूषण फैलाने वाले विकल्पों से हटाकर स्वच्छ और गैर-प्रदूषणकारी विकल्पों की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा. सुप्रीम कोर्ट ने CAQM के प्रस्ताव को उचित, न्यायसंगत और संतुलित मानते हुए इसे मंजूरी दी है. इसके साथ कोर्ट ने एक अहम निर्देश दिया है. इसके मुताबिक, वे कमर्शियल वाहन जिन्हें दिल्ली में प्रवेश की जरूरत नहीं है, उन्हें एक्सप्रेसवे का इस्तेमाल करना चाहिए. इससे वे श्रेष्ठ के भुगतान से भी बच सकते हैं और शहर में अनावश्यक दबाव भी कम होगा. सरकार का मानना है कि 2015 में तय ECC को अपडेट करना जरूरी था.

किसानों-नौजवानों को साधकर वेस्ट यूपी की धरती से वोटों की फसल काटेगी कांग्रेस

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मेरठ। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और समाजवादी पार्टी (सपा) की तरह अब कांग्रेस भी वेस्ट यूपी से चुनावी बिगुल फूंकने जा रही हैं। इसकी शुरूआत पार्टी एक मई यानी शुक्रवार से 'किसान नौजवान बचाओ यात्रा' के जरिए वेस्ट यूपी के सहारनपुर से करने जा रही है। अपने नारे 'चलो चलें, बदलाए लाएं, किसान नौजवान का सम्मान बचाएं' के साथ कांग्रेस इस 11 दिन तक चलने वाली यात्रा को 13 मई को दिल्ली में दस्तक देने के साथ समाप्त करेगी। यात्रा के जरिए कांग्रेस की तैयारी किसानों-नौजवानों के दर्द में शामिल होकर और उन्हें साधकर वेस्ट यूपी की उपजाऊ जमीन से वोटों की सियासी फसल काटने की है। इसके लिए पार्टी ने पूरी ताकत झोंक दी है।

वेस्ट यूपी बनी सियासी रणभूमि

दरअसल, 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए सभी सियासी दल वेस्ट यूपी को राजनीति की प्रयोगशाला मान रहे हैं। इसी के तहत, ज्यादातर दल अभी से अपने-अपने चुनावी रण का आगाज करने में जुट गए हैं। बीजेपी ने विकास के एजेंडे (मेरठ रैपिड रेल, मैट्रो ट्रेन, जेवर एयरपोर्ट और मेरठ से निकलने वाले गंगा एक्सप्रेसवे) के जरिए चुनावी बिगुल फूंका है। वहीं, समाजवादी पार्टी ने दादरी रैली और नोएडा संवाद के साथ आगे और रैली करने के प्लान के साथ सियासी हुंकार भरी है। राष्ट्रीय लोकदल भी मेरठ के ईकड़ी और मुजफ्फरनगर में रैली कर चुका है। इसके अलावा आगे कई और रैलियों के साथ चुनावी रणनीति तैयार है। पंजे की सियासी पकड़ मजबूती करने का सपना अब कांग्रेस अपने पंजे की सियासी पकड़ वेस्ट यूपी से मजबूत करने का आगाज करने जा रही है। इसी के तहत, पार्टी एक मई को सहारनपुर से 13 दिन की किसान-नौजवान बचाओ यात्रा शुरू कर रही है। यात्रा के जरिए कांग्रेस संदेश देने की कोशिश करेगी कि बीजेपी के शासनकाल में देश का किसान और नौजवान त्रस्त है। किसान आर्थिक संकट, बढ़ती लागत और फसलों के उचित मूल्य न मिलने से जूझ रहा है। वहीं, युवा बेरोजगारी का दंश झेल रहा है। कांग्रेस बताएगी कि किसान देश की रीढ़ हैं, तो युवा भविष्य हैं और वह इन दोनों के हितों को संरक्षित करने के लिए संकल्पित है। युवक कांग्रेस का पश्चिमी जोन और उत्तर प्रदेश किसान कांग्रेस इस यात्रा की अगुवाई करेंगे। युवा कांग्रेस के सचिव और पश्चिमी यूपी जोन के प्रभारी विशाल चौधरी की मानें, तो यह यात्रा एक मई को सहारनपुर से शुरू होकर मुजफ्फरनगर, बागपत, गाजियाबाद, मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, अलीगढ़, आगरा, मथुरा और गौतमबुद्धनगर होते हुए दिल्ली में 13 मई को समाप्त होगी।

गंगा एक्सप्रेस वे ही नहीं, वक्त में आ रहे हैं 10 और सुपर हाईवे, जुड़ेंगे विंन्ध्य, चित्रकूट और नोएडा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को 594 किलोमीटर लंबे गंगा एक्सप्रेसवे का उद्घाटन किया. हरदोई में हुए इस लोकार्पण कार्यक्रम के बाद प्रदेश में संचालित एक्सप्रेसवे परियोजनाओं की कुल लंबाई 1910 किलोमीटर हो गई है. यह एक्सप्रेसवे मेरठ को प्रयागराज से जोड़ता है, जिससे दिल्ली-एनसीआर और उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों जैसे हापुड़, बुलंदशहर, अमरोहा, संभल, बदायूं और प्रयागराज के बीच पहुंच काफी आसान हो गई है.

पीएम मोदी ने इस एक्सप्रेस वे के उद्घाटन के दौरान कहा कि आधुनिक प्रगति के इस दौर में उनके समीप से गुजरता यह एक्सप्रेस-वे यूपी के विकास की नई लाइफलाइन बनेगा. अब कुछ ही घंटों में आप प्रयागराज के संगम पहुंच सकते हैं और काशी में बाबा विश्वनाथ के दर्शन करके वापस आ सकते हैं. इसी के साथ उन्होंने उत्तर प्रदेश में आगे की आने वाली एक्सप्रेस वे परियोजनाओं की भी जानकारी दे दी.

पीएम मोदी ने भविष्य के रोडमैप का जिक्र करते हुए कहा, देश के सबसे बड़े एक्सप्रेस-वे में शुमार, यूपी का सबसे लंबा एक्सप्रेस-वे 5 साल के भीतर बनकर तैयार हो गया है. उन्होंने कहा- एक ओर गंगा एक्सप्रेस-वे का निर्माण पूरा हुआ है, तो इसके विस्तार पर भी काम चल रहा है. यह मेरठ से आगे बढ़कर हरिद्वार तक पहुंचेगा. इसके और बेहतर उपयोग के लिए फर्रुखाबाद लिंक एक्सप्रेस-वे का निर्माण करके इसे अन्य एक्सप्रेस-वे से भी जोड़ा जाएगा.

पीएम मोदी ने असल में बताया कि गंगा एक्सप्रेस वे के लोकार्पण के बाद केंद्र और प्रदेश सरकार उत्तर प्रदेश में 10 और एक्सप्रेस वे व लिंक एक्सप्रेस वे पर काम कर रही है.

इसमें कई छोटी दूरी के लिंक एक्सप्रेसवे भी हैं जो बड़े और प्रमुख एक्सप्रेस वे सीधे जुड़ेंगे और सुदूर गांवों तक को एक्सप्रेस वे से कनेक्ट करेंगे.

इन एक्सप्रेस वे के जरिए विंन्ध्याचल (मिर्जापुर, भदोही, वाराणसी) को पूर्वांचल से, फर्रुखाबाद को पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से, जेवर को गंगा एक्सप्रेस वे से, लखनऊ और कानपुर को आपस में कनेक्ट करते हुए और चित्रकूट को भी गंगा एक्सप्रेसवे से जोड़ने की योजना है. इसके लिए 50 किमी तक के छोटे लिंक एक्सप्रेस वे बनाए जाने पर काम हो रहा है. ये 10 एक्सप्रेस वे हैं, जिन पर काम जारी विंध्य एक्सप्रेसवे - 320 किमी मेरठ-हरिद्वार लिंक एक्सप्रेसवे - 136 किमी झांसी लिंक एक्सप्रेसवे - 118 किमी विंध्य-पूर्वांचल लिंक एक्सप्रेसवे - 100 किमी फर्रुखाबाद लिंक एक्सप्रेसवे - 91 किमी जेवर-गंगा लिंक एक्सप्रेसवे - 74 किमी लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेसवे - 64 किमी लखनऊ लिंक एक्सप्रेसवे - 50 किमी नोएडा-जेवर लिंक एक्सप्रेसवे - 50 किमी चित्रकूट लिंक एक्सप्रेसवे - 15.17 किमी

ब्रिटिश दौर के नामों को अलविदा: मेरठ कैंट में अब गूंजेगा जवाहर नगर और शिवाजी नगर का नाम

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मेरठ। कैंट बोर्ड की बुधवार को हुई बैठक में छावनी क्षेत्र की पहचान बदलने और विकास कार्यों को तेज करने के लिए कई अहम फैसले लिए गए। बैठक की अध्यक्षता ब्रिगेडियर संजीव कुमार सिंह ने की, जिसमें स्वच्छता, स्वास्थ्य सेवाओं, जल संरक्षण और इंफ्रास्ट्रक्चर सुधार को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। बैठक का सबसे बड़ा निर्णय ब्रिटिश कालीन नामों को पूरी तरह खत्म कर भारतीय नामों को लागू करने का रहा। बोर्ड ने स्पष्ट किया कि पहले कागजों में बदले जा चुके नामों को अब जमीनी स्तर पर लागू किया जाएगा। इसके तहत आरए (रॉयल आर्टिलरी) बाजार को अब सुभाष बाजार, बीआई (ब्रिटिश इन्फेंट्री) लालकुर्ती को जवाहर नगर और बीसी (ब्रिटिश कैवेलरी) रजबन को शिवाजी नगर के नाम से जाना जाएगा। लंबे समय से ये क्षेत्र पुराने नामों से ही प्रचलित थे, लेकिन अब नए नामों के प्रचार-प्रसार के लिए बड़े स्तर पर साइन बोर्ड और होर्डिंग्स लगाए जाएंगे। एक रंग और डिजाइन के लगेंगे बोर्ड

कैंट बोर्ड ने यह भी निर्णय लिया कि जिन क्षेत्रों के नाम अभी तक नहीं बदले गए हैं, उनके लिए एक विशेष समिति गठित की जाएगी। साथ ही पूरे छावनी क्षेत्र में एक समान डिजाइन और रंग के बोर्ड लगाए जाएंगे, ताकि नई पहचान स्पष्ट रूप से नजर आए। आउटसोर्सिंग कर्मचारियों के ठेके को भी स्वीकृति स्वच्छता व्यवस्था को मजबूत करने के लिए पांच वार्डों में कूड़ा संग्रह और सफाई के लिए 20.37 करोड़ रुपये के दो साल के ठेके को मंजूरी दी गई। इसके अलावा 13.39 करोड़ रुपये की लागत से मिलिट्री कंजर्वेंसी सेवाओं और 19.10 करोड़ रुपये के आउटसोर्सिंग कर्मचारियों के ठेके को भी स्वीकृति दी गई। वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के लिए 30 लाख रुपये जल संरक्षण की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। 30 लाख रुपये की लागत से वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को दुरुस्त करने और नए सिस्टम लगाने का फैसला लिया गया। इसमें सात पुराने सिस्टम की मरम्मत, तीन नए सिस्टम की स्थापना और सात रिचार्ज पिट का निर्माण शामिल है। ओपीडी में दो घंटे सेवाएं देंगे डॉक्टर स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए छावनी जनरल अस्पताल में नई व्यवस्थाएं लागू की जाएंगी। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के सहयोग से हड्डी रोग, नाक-कान-गला और चर्म रोग विशेषज्ञ रोजाना दो घंटे ओपीडी सेवाएं देंगे। इसके अलावा स्त्री रोग और बाल रोग विशेषज्ञों की संविदा पर नियुक्ति की जाएगी। सड़क किनारे 6 फीट ऊंचाई के पौधे लगेंगे बैठक में पर्यावरण संरक्षण पर भी विशेष जोर दिया गया। छावनी क्षेत्र को हरा-भरा बनाने के लिए बड़े स्तर पर पौधरोपण अभियान चलाया जाएगा। सड़क किनारे पांच से छह फीट ऊंचाई के पौधे लगाए जाएंगे और सभी पेड़ों का रिकॉर्ड एक रजिस्टर में दर्ज किया जाएगा। नई सड़कों के लिए बजट इंफ्रास्ट्रक्चर सुधार के तहत ज्यादा यातायात वाली सड़कों को प्राथमिकता के आधार पर दुरुस्त करने के निर्देश दिए गए। नई सड़कों के निर्माण के लिए भी बजट स्वीकृत किया गया। साथ ही व्यापारियों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए नए ट्रेड लाइसेंस जारी करने और पुराने लाइसेंस के नवीनीकरण की प्रक्रिया को सरल बनाने का निर्णय लिया गदिशा में है।

महिला आरक्षण बिल पर सीएम योगी की सपा को खरी-खरी, मायावती का किया जिक्र

महानगर मेट्रो ब्यूरो

लखनऊ। महिला कल्याण और सशक्तिकरण से जुड़े मुद्दे पर बुलाए गए विशेष सत्र में यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यानाथ ने विधानसभा में समाजवादी पार्टी और कांग्रेस पर जमकर प्रहार किया। सीएम योगी ने कहा कि लोकसभा में महिला आरक्षण संशोधन विधेयक सपा, कांग्रेस समेत अन्य विपक्षियों पार्टियों के कारण पास नहीं हो पाया। सपा और कांग्रेस महिला विरोधी पार्टी है। इनकी मानसिकता महिला विरोधी है। योगी ने कहा- 'काले कर्मों से जो महल सजाते हैं, वहीं इतिहास में कलंक बन जाते हैं।' पूर्ववर्ती सपा सरकारों पर हमला बोलते हुए योगी ने कहा? कि मुझे 1995 की वह घटना भी याद है जब स्टेट गेस्ट हाउस में बसपा अध्यक्ष मायावती के साथ सपा नेताओं ने अभद्रता की थी। स्वर्गीय ब्रह्मदत्त द्विवेदी अपनी जान पर खेलकर सपा के गुंडों से भिड़े थे। तब जाकर बसपा अध्यक्ष की जान बच पाई थी। शाम के समय महिलाएं घर से बाहर नहीं निकला करती थीं। सपा राज में महिलाओं पर अत्याचार होता था। सपा सरकार के समय जनता के बीच नारा था-देख सपाई, बिटिया घबराई। उस जमाने में अच?छे घरों की लड़कियां यूपी में नहीं पढ़ पाती थीं। घरवाले उनको बाहरी राज?यों में पढ़ने के लिए भेजते थे। आज हमारी सरकार में महिलाओं को पूरी सुरक्षा है। वे शान से यहां पढ़ाई और नौकरी कर रही हैं। सीएम योगी आदित्यनाथ

'कांग्रेस को शाहबानो का श्राप है'

सदन को संबोधित करते समय सीएम योगी ने शाहबानो प्रकरण का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को उस महिला का शाप मिला हुआ है। यही वजह से 40 साल हो गए, आज तक कभी यूपी में कांग्रेस की सरकार नहीं बन पाई। कांग्रेस बंजर होती जा रही है। सपा के लोग भी इसी रास?ते पर चल रहे हैं। तीन तलाक के मुद्दे पर भी सपा और कांग्रेस का असली रूप देखने को मिला। तीन तलाक बिल का भी इन लोगों ने विरोध किया। 'पूजा पाल के आंसू तक नहीं पोंछ पाई सपा' सीएम योगी ने कहा कि एक गुंडा और माफिया के सामने सपा के नेता किस तरह नतमस?तक होते थे, यह सब जानते हैं। सपा की ही विधायक पूजा पाल के पति की हत?या उस माफिया ने कर दी थी। सपा के नेताओं ने पूजा पाल के आंसू तक पोंछने की जहमत नहीं उठाई। जेल की यात्रा कर रहे आजम खान, पूर्व सांसद एसटी हसन और मुंबई में अबू आजमी के महिला विरोधी बयान अक्सर सामने आते रहते हैं।

मिर्जापुरः चौकी में घुसकर पुलिसवालों को पीटा! दारोगा की वर्दी फाड़ी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

कोतवाली। मिर्जापुर के शहर कोतवाली क्षेत्र स्थित अस्पताल पुलिस चौकी में बीती देर रात मनबढ़ दबंगों ने जमकर उत्पाद मचाया. ई-रिक्शा और ट्रैक्टर की टक्कर के बाद शुरू हुए विवाद को सुलझाने के लिए पुलिस ई-रिक्शा चालक को चौकी ले आई थी. इसी बात से नाराज दूसरे पक्ष ने अपने करीब 50 साथियों को बुलाकर चौकी पर धावा बोल दिया. दबंगों ने चौकी प्रभारी मनोज राय और अन्य सिपाहियों के साथ मारपीट की, उनकी वर्दी फाड़ दी और सरकारी वायरलेस सेट के तार नोच दिए. पुलिस ने इस मामले में तीन मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है.

पिस्टल लहराकर बोले- मर्डर कर देंगे

चौकी प्रभारी मनोज राय ने आपबीती बताते हुए कहा कि हमलावर मोबाइल छीन रहे थे और उन्होंने वायरलेस सेट खराब कर दिया ताकि मदद न मंगाई जा सके. आरोप है कि भीड़ में शामिल कुछ लोग पिस्टल लहरा रहे थे. हमलावरों ने खुद को हाई कोर्ट का वकील बताकर पुलिस वालों को जान से मारने की धमकी दी और कहा कि फायर कर दिया तो सब खत्म हो जाएगे. करीब आधे घंटे तक चौकी रणक्षेत्र बनी रही, जिसे भारी पुलिस बल ने पहुंचकर शांत कराया. पुलिस ने चौकी प्रभारी की तहरीर पर भरत, मनोज, विकास और हरेंद्र प्रताप समेत एक दर्जन अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है. अपर पुलिस अधीक्षक नितेश सिंह के अनुसार, मेउली गांव के रहने वाले तीन आरोपियों को हिरासत में ले लिया गया है. वायरल वीडियो के आधार पर अन्य उपद्रवियों की पहचान की जा रही है. पुलिस का कहना है कि वर्दी का अपमान और सरकारी कार्य में बाधा डालने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी.

'ऑनलाइन चाकू-नकली पिस्टल बेचना बंद करें', दिल्ली पुलिस का ई-कॉमर्स कंपनियों को सख्त निर्देश

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने ई-कॉमर्स कंपनियों को पटाखों, बैन चाकू, नकली पिस्टल और बिना पर्चे दवाओं की ऑनलाइन बिक्री पर तत्काल रोक लगाने के निर्देश दिए हैं। स्पेशल सीपी (क्राइम) देवेश चंद्र श्रीवास्तव की अध्यक्षता में मंगलवार को क्राइम ब्रांच ने अमेजन, फ्लिपकार्ट, बिग बास्केट, स्विगी, ब्लिंकिट, टाटा 1-एमजी, अपोले, नेटमेड्स, स्नैपडील, रिलायंस रिटेल, इंडिया मार्ट, पोर्टर और नायका जैसी प्रमुख कंपनियों के प्रतिनिधियों की मीटिंग कर यह हिदायत दी। दिल्ली सरकार के ड्रग्स कंट्रोल विभाग के अधिकारी भी बैठक में थे। जॉइंट सीपी (क्राइम) सुरेंद्र कुमार के मुताबिक, ई-कॉमर्स और तुरंत डिलिवरी प्लेटफॉर्म की बढ़ती पहुंच का दुरुपयोग कर अपराधी प्रतिबंधित और खतरनाक वस्तुओं की खरीद-फरोख्त कर रहे हैं। इनमें अवैध दवाएं, नशीले पदार्थ, बटनदार जैसे प्रतिबंधित चाकू, नकली पिस्टल, पुलिस वर्दी, बैज, जीपीएस जैमर और हाई-फ्रीक्वेंसी वॉकी-टॉकी शामिल हैं। ऐसे प्रोडक्ट न सिर्फ कानून का उल्लंघन करते हैं, बल्कि सार्वजनिक सुरक्षा और कानून-व्यवस्था के लिए भी गंभीर खतरा पैदा करते है। कंपनियों को दिए गए ये निर्देश प्रतिबंधित और अवैध वस्तुओं की लिस्टिंग तुरत हटाई जाए। संवेदनशील चीजे बेचने वालों के लिए सख्त चङ्घष्ट प्रक्रिया हो। सदिग्ध लिस्टिंग की रियल टाइम रिपोर्टिंग की व्यवस्था बनाई जाए। बेचने वालों की जानकारी कानून के अनुसार तुरत मुहैया कराई जाए। इन दवाओं की ऑनलाइन बिक्री पर भी सख्ती ड्रग्स कंट्रोल विभाग ने ई-फार्मेसी के बढ़ते जोखिमों पर चिंता जताते हुए साफ किया कि शेड्यूल ॥ और X की दवाएं सिर्फ रजिस्टर्ड डॉक्टर के वैध पर्चे पर ही बेची जा सकती है। इन दवाओं की ऑनलाइन बिक्री पब्लिक हेल्थ के लिए बड़ा खतरा है।

तालाब में डूबने से 3 बच्चों की मौत, दिल्ली के द्वारका में दर्दनाक हादसा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। द्वारका सेक्टर-23 थाना इलाके में गुरुवार सुबह एक दर्दनाक हादसा सामने आया, जहां गोल्फ कोर्स के पास बने तालाब में डूबने से 3 बच्चों की मौत हो गई। बच्चों की उम्र करीब 8 से 10 साल के बीच बताई जा रही है। घटना के बाद इलाके में शोक का माहौल है। पुलिस के मुताबिक, सुबह 7 बजे हादसे की सूचना मिली, जिसके बाद तुरंत पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीमें मौके पर पहुंचीं। रेस्क्यू ऑपरेशन चलाकर तीनों बच्चों को तालाब से बाहर निकाला गया, लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी।

बच्चे नहाने के लिए तालाब में उतरे थे

जांच में सामने आया है कि तीनों बच्चे नहाने के लिए तालाब में उतरे थे और इसी दौरान गहरे पानी में फंस गए। मौके पर बच्चों के कपड़े तालाब के किनारे मिले हैं, जिससे आशंका है कि वे खुद ही पानी में उतरे थे। डीसीपी द्वारका कुशल पाल सिंह ने मामले की पुष्टि करते हुए बताया कि अभी तक बच्चों की पहचान नहीं हो पाई है। साथ ही किसी थाने में इनके लापता होने की कोई शिकायत भी दर्ज नहीं हुई है।

पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट का इंतजार

फिलहाल, पुलिस ने तीनों शवों को नजदीकी अस्पताल में पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है और आसपास के इलाकों में बच्चों की पहचान करने के प्रयास जारी हैं। मामले की जांच की जा रही है। मौके पर फायर ब्रिगेड और अन्य एजेंसियों की टीम पहुंची थी। मृतकों के कपड़े तालाब के बाहर मिले हैं। पता चला कि तीनों नहाने के लिए अंदर गए थे और उसी में फंस गए।

भितरवार मंडी में बवाल: तुलाई से नाराज किसानों ने नायब तहसीलदार को पीटा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

ग्वालियर। के भितरवार कृषि उपज मंडी में मंगलवार को उस समय हालात बेकाबू हो गए, जब तुलाई की समस्या को लेकर किसानों का गुस्सा फूट पड़ा. लंबे समय से तुलाई में हो रही देरी और अव्यवस्था से नाराज किसानों ने मंडी परिसर में जोरदार विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया. देखते ही देखते यह प्रदर्शन इतना उग्र हो गया कि स्थिति पर काबू पाना मुश्किल हो गया. सैकड़ों की संख्या में किसान मंडी में अपनी उपज लेकर पहुंचे थे, लेकिन तुलाई में हो रही देरी और अव्यवस्था को लेकर वे काफी परेशान थे. किसानों का आरोप था कि उन्हें घंटों इंतजार करना पड़ रहा है, लेकिन उनकी फसल की तुलाई समय पर नहीं हो रही. इसी बात को लेकर किसानों ने पहले नारेबाजी की और फिर हंगामा शुरू कर दिया. इसी दौरान मंडी में मौजूद नायब तहसीलदार हरनाम सिंह हालात को संभालने पहुंचे. लेकिन गुस्साए किसानों और प्रशासन के बीच कहासुनी हो गई, जो धीरे-धीरे हाथापाई में बदल गई. आरोप है कि इस दौरान कुछ किसानों ने नायब तहसीलदार के साथ मारपीट कर दी, जिसमें उन्हें चोट आई. हालात इतने बिगड़ गए कि नायब तहसीलदार को मौके से भागना पड़ा. मंडी परिसर में अचानक अफरा-तफरी का माहौल बन गया. किसान और प्रशासनिक अधिकारी दोनों तरफ से तनाव की स्थिति बन गई. घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची. पुलिस ने हालात को कंट्रोल करने के लिए मोर्चा संभाला और स्थिति को शांत कराया. पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चार किसानों को मौके से पकड़ लिया है. वहीं, पूरे मामले की जांच शुरू कर दी गई है. इस घटना के बाद मंडी परिसर में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है. पुलिस बल की तैनाती बढ़ा दी गई. दूसरी ओर, किसानों में अब भी नाराजगी बनी हुई है..

आगे बाराती, पीछे बैंड- बाजा, बीच में कूलर...तपती गर्मी में दुल्हन लेने निकली अनोखी बारात

महानगर मेट्रो ब्यूरो

देवास। मध्यप्रदेश के देवास में भीषण गर्मी के बीच एक अनोखी बारात चर्चा में है, जहां बाराती अपने साथ 'चलित कूलर' लेकर निकले. बैंड-बाजे और डीजे के साथ कूलर का यह जुगाड़ लोगों को हैरान कर रहा है. गर्मी से राहत पाने का यह देसी तरीका अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है.

देवास में पड़ रही तेज गर्मी ने लोगों का जीना मुश्किल कर दिया है, लेकिन इसी बीच एक बारात ने अपने अनोखे अंदाज से सबका ध्यान खींच लिया. यहां बारातियों ने गर्मी से बचने के लिए ऐसा जुगाड़ अपनाया, जो अब चर्चा का विषय बन गया है.

डीजे की धुन के साथ 'मोबाइल कूलर'

दरअसल, शहर में निकली एक बारात में बैंड-बाजे और डीजे की धुन के साथ 'मोबाइल कूलर' भी देखने को मिला. बारातियों ने गर्मी से राहत पाने के लिए कूलर को पहियों पर रखकर साथ चलाया. जैसे-जैसे बारात आगे बढ़ती गई, कूलर भी उनके साथ चलता रहा और ठंडी हवा देता रहा.

इस अनोखे नजारे को देखने के लिए राहगीर रुक गए और कई लोगों ने इसे अपने मोबाइल में कैद कर लिया. देखते ही देखते वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जहां लोग इस देसी जुगाड़ की जमकर तारीफ कर रहे हैं.

भीषण गर्मी के बावजूद बारातियों का उत्साह कम नहीं दिखा. वे डीजे की धुन पर नाचते-गाते नजर आए और माहौल पूरी तरह शादी के रंग में रंगा रहा. धूप में जाती बारात में लोग कूलर की ठंडी हवा लेते हुए थिरकते दिखे.

इस बारात ने यह भी दिखा दिया कि भारतीय शादियों में जुगाड़ और उत्साह की कोई कमी नहीं होती. गर्मी के इस दौर में यह अनोखी बारात एक मिसाल बनकर सामने आई है, जहां लोगों ने हालात के अनुसार खुद को ढालते हुए खुशी का मौका पूरी तरह से जिया.

सीएम मोहन यादव का दिखा जुदा अंदाज, ट्रॉली पर चढ़कर करने लगे किसानों से बात,

महानगर मेट्रो ब्यूरो

शाजापुर। सीएम मोहन यादव घोषणा के बाद लगातार गेहूं उपार्जन केंद्रों का निरीक्षण कर रहे हैं। खरगोन के बाद वह शाजापुर के एक उपार्जन केंद्र पर पहुंच गए। यहां उनका अलग अंदाज देखने को मिला है। वह ट्रैक्टर ट्रॉली पर चढ़कर किसानों से संवाद करने लगे। साथ ही गेहूं का वजन भी तुलवाकर देखा है। सीएम मोहन यादव शाजापुर जिले के मकोड़ी स्थित श्यामा वेयर हाउस पहुंचे। उन्होंने यहां बाकायदा ट्रॉली पर चढ़कर किसानों से चर्चा की। इस दौरान उन्होंने गेहूं का वजन भी तुलवाकर देखा। उनके इस अंदाज की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है।

खरगोन के बाद पहुंचे शाजापुर

मोहन यादव आज सुबह अचानक खरगोन जिले के कतरगांव में बनाए गए उपार्जन केंद्र के निरीक्षण लिए पहुंचे। इस दौरान उन्होंने उपार्जन की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने यहां किसानों से चर्चा की। इसके अलावा उन्होंने केंद्र से संबंधित लोगों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। मध्यप्रदेश सरकार ने किसानों के लिए उपार्जन केंद्रों पर छाया, बैठक और कई अन्य सुविधाओं की व्यवस्था की है। अब किसान जिले के किसी भी उपार्जन केन्द्र पर उपज विक्रय कर सकते हैं। इतना ही नहीं, किसानों को गेहूं की तौल के लिए इंतजार नहीं करना पड़े इसके लिए उपार्जन केन्द्रों में तौल कांटों की संख्या बढ़ाकर 6 कर दी गई है। सरकार जिलों में और भी तौल कांटे बढ़ा रही है।

कोई परेशानी तो नहीं

सीएम ने शाजापुर में किसानों से बातचीत के दौरान पूछा कि कोई परेशानी तो नहीं है। किसानों ने उनके सामने गेहूं में आने वाली मिट्टी को लेकर शिकायत की। शिकायत पर सीएम ने वहां मौजूद कलेक्टर से बात की। साथ ही कहा कि मैं करा दूंगा। उन्होंने कहा कि उपार्जन-खरीदी केंद्रों पर पूरे 6 तौल कांटे लगाए जाएं। गेहूं खरीदी के आज से नए मापदंड जारी हुए है वह लागू हो जाएं। किसानों के लिए उपार्जन-खरीदी केंद्रों पर पर्याप्त छाया और शीतल पेयजल की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। यादव ने कहा कि हर अन्नदाता को सम्मान और सुविधा के साथ उपज का उचित मूल्य दिलाना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उपार्जन प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की समस्या का त्वरित निराकरण किया जाए। किसानों के उपज की तौल समय पर हो सके इसके लिए पर्याप्त संख्या में बारदाने, तौल कांटे, सिलाई मशीन, स्लॉट बुकिंग हेतु कंप्यूटर, नेट कनेक्शन, कंप्यूटर ऑपरेटर, आदि व्यवस्थाएं उपार्जन केन्द्र पर हमेशा उपलब्ध रहें।

नरेंद्र दाभोलकर हत्याकांड के दोषी शरद कलास्कर को बॉम्बे हाई कोर्ट से जमानत, पुणे की कोर्ट ने दी थी उम्रकैद

महानगर मेट्रो ब्यूरो

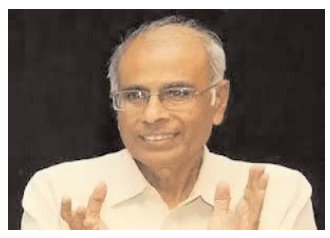

मुंबई। बॉम्बे हाई कोर्ट ने बुधवार को शरद कलास्कर (33) को ज़मानत दे दी। कलास्कर को मई 2024 में तर्कवादी नरेंद्र दाभोलकर की 2013 में हुई हत्या के मामले में दोषी ठहराया गया था। कलास्कर ने पुणे की ट्रायल कोर्ट द्वारा दोषी ठहराए जाने के खिलाफ हाई कोर्ट में अपील दायर की थी और अपील के निपटारे तक ज़मानत मांगी थी। जस्टिस ए.एस. गडकरी और जस्टिस आर.आर. भोंसले ने कहा कि न केवल इस बात की संभावना बहुत कम है कि अपील पर जल्द ही अंतिम सुनवाई होगी, बल्कि रिकॉर्ड पर मौजूद सबूत भी संदिग्ध हैं। हाई कोर्ट ने 50,000 रुपये की ज़मानत राशि तय करते हुए कहा कि कलास्कर की पहचान ठीक से नहीं की गई थी और उसकी विश्वसनीयता खत्म हो गई थी, और दो चश्मदीद गवाहों की गवाही से भी संदेह पैदा होता है। अभियोजन पक्ष ने अदालत से जमानत देने के आदेश के क्रियान्वयन पर रोक लगाने का अनुरोध किया था, लेकिन पीठ ने इस अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। कलास्कर पर वामपंथी नेता और तर्कवादी गोविंद पानसरे की हत्या का मुकदमा भी चल रहा है। पिछले साल अक्टूबर में उच्च न्यायालय ने उसे इस मामले में जमानत दे दी थी।

नरेंद्र दाभोलकर के बेटे ने कहा, करेंगे अपील दाभोलकर के बेटे हामिद ने कहा कि ज़मानत दिए जाने के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील दायर की जाएगी। उन्होंने कहा, 'कलास्कर (कम्युनिस्ट नेता) गोविंद पानसरे हत्याकांड में भी आरोपी है।' यह जानलेवा हमला 20 अगस्त, 2013 को हुआ था, जब अंधविश्वास के खिलाफ मुहिम चलाने वाले दाभोलकर सुबह की सैर पर निकले थे। ाष्ट ने 23 दिसंबर, 2025 को ज़मानत याचिका पर आदेश के लिए फैसला सुरक्षित रख लिया था। कलास्कर के वरिष्ठ वकील नितिन प्रधान ने सबूतों की वैधता पर सवाल उठाया था, जिसमें गवाहों को दिखाई गई एक तस्वीर के आधार पर कथित हमलावर की पहचान भी शामिल थी; इसी आधार पर ट्रायल कोर्ट ने कथित हमलावर को दोषी ठहराया था। राज्य की ओर से अतिरिक्त सरकारी वकील आशीष सतपुते और CBI की ओर से विशेष सरकारी वकील अमित मुंडे ने ज़मानत याचिका का विरोध करते हुए कहा कि दो गवाहों ने गोलीबारी होते देखी थी। 2013 में हुई थी नरेंद्र दाभोलकर की हत्या दाभोलकर मामले में जमानत मिलने के बाद, कलास्कर जमानत की औपचारिकताएं पूरी करने के बाद जेल से रिहा हो सकता है। महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के संस्थापक दाभोलकर (67) की 20 अगस्त, 2013 को पुणे में सुबह की सैर के दौरान दो मोटरसाइकिल सवार हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। दाभोलकर की संस्था अंधविश्वास के खिलाफ कार्य करती है

L&T से छिना मुंबई के पाली हिल्स का आलीशान हाई ट्रीज बंगला, सुप्रीम कोर्ट ने खत्म की 25 साल पुरानी लड़ाई

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई। सुप्रीम कोर्ट ने L&T की एक स्पेशल लीव पिटीशन खारिज कर दी है। इसके साथ ही बांद्रा के पाली हिल रोड पर एक प्राइम रेजिडेंशियल प्रॉपर्टी को लेकर चल रही लंबी कानूनी लड़ाई खत्म हो गई है। इस प्रॉपर्टी में कंपनी के पूर्व चेयरमैन और मौजूदा चेयरमैन एमेरिटस एएम नाइक पिछले 20 साल से ज़्यादा समय से रह रहे हैं। कंपनी ने दावा किया था कि वह इस प्रॉपर्टी की करीब 30' मालिक है। अब उसे 'हाई ट्रीज़' नाम का बंगला खाली करके उसका शांतिपूर्ण कब्ज़ा सौंपना होगा। यह बंगला पाली हिल के पॉश रेजिडेंशियल इलाके में बची हुई कुछ हेरिटेज प्रॉपर्टीज़ में से एक है। इस पिटीशन के खारिज होने से बॉम्बे हाई कोर्ट ने पहले दिए गए बेदखली के आदेश की पुष्टि हो गई है। 1970 में खत्म हो गया था प्रॉपर्टी का पट्टा यह विवाद 1961 में शुरू हुई एक किरायेदारी से जुड़ा है। इस प्रॉपर्टी का औपचारिक पट्टा 1970 में खत्म हो गया था। मकान मालिकों के ग्रुप में केसी कोठारी परिवार के सदस्य और अन्य सह-मालिक शामिल थे। किरायेदारी खत्म होने के बाद, उन्होंने 2001 में बांद्रा की स्मॉल कॉज़ेज़ कोर्ट में बेदखली की कार्यवाही शुरू की थी।

प्रॉपर्टी का 7 पर्सेंट एल एंड टी ने खरीदा था

बांद्रा के पाली हिल रोड पर एक प्राइम रेजिडेंशियल प्रॉपर्टी को लेकर चल रहे लंबे कानूनी विवाद को खत्म करते हुए, सुप्रीम कोर्ट ने Larsen & Toubro द्वारा दायर स्पेशल लीव पिटीशन को खारिज कर दिया। मुकदमे के दौरान 2001 में L&T ने प्रॉपर्टी में 7' अविभाजित हिस्सा अमर मुनोट (जो अब दिवंगत हैं) से खरीदा था। अमर मुनोट प्रॉपर्टी के सह-मालिकों में से एक थे। बाद में, कंपनी की हिस्सेदारी बढ़कर 29.5' हो गई। इसी आधार पर, 2017 के सुप्रीम कोर्ट के फैसले ('मंगल बिल्डर्स') का हवाला देते हुए, कंपनी ने तर्क दिया कि वह अब प्रॉपर्टी की सह-मालिक बन गई है और इसलिए उसके खिलाफ बेदखली की कार्यवाही जारी नहीं रह सकती। इसके अलावा, कंपनी ने यह भी तर्क दिया कि L&T सहित सभी सह-मालिकों के बीच प्रॉपर्टी के बंटवारे का एक मुकदमा अभी भी लंबित है। बॉम्बे हाई कोर्ट ने क्या कहा 27 मार्च, 2026 को दिए अपने फैसले में, बॉम्बे हाई कोर्ट के जज एम.एम. सथाये ने इस तर्क को खारिज कर दिया।

महाराष्ट्र विधानसभा परिषद चुनाव में उद्धव ठाकरे की पार्टी के खिलाफ प्रत्याशी उतारेगी कांग्रेस

मुंबई। शिवसेना यूबीटी ने 12 मई को होने वाले महाराष्ट्र विधानसभा परिषद चुनाव में पूर्व नेता प्रतिपक्ष11111 अंबादास दानवे को उम्मीदवार घोषित किया है। इस ऐलान कि बाद महा विकास अघाड़ी (एमवीए) में दरारें उभर आई हैं। कांग्रेस ने घोषणा की है कि वह चुनाव में अपना उम्मीदवार उतारेगी, खासकर तब जब शिवसेना यूबीटी अध्यक्ष उद्धव ठाकरे ने 13 मई को उच्च सदन में अपना वर्तमान कार्यकाल समाप्त होने के बाद चुनाव से हटने का फैसला किया है। महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल ने घोषणा की है कि पार्टी राज्य विधानसभा परिषद चुनावों में अपना उम्मीदवार उतारेगी। उन्होंने शिवसेना यूबीटी द्वारा उद्धव ठाकरे के बजाय अंबदास दानवे को उम्मीदवार बनाए जाने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त की है।

कांग्रेस ने पहले कही थी यह बात

पिछले सप्ताह सपकाल और महाराष्ट्र कांग्रेस विधानसभा दल के नेता विजय वडेट्टीवार ने घोषणा की थी कि पार्टी राज्य विधानसभा चुनावों में उद्धव ठाकरे का समर्थन करेगी और अपना उम्मीदवार नहीं उतारेगी। हालांकि, दोनों ने संकेत दिया था कि यदि उद्धव ठाकरे चुनाव न लड़ने का फैसला करते हैं, तो कांग्रेस चुनाव मैदान में उतरेगी। महाराष्ट्र

विधानपरिषद चुनाव का समीकरण नौ सीटों के चुनाव के लिए कोटा 29 वोट है। वर्तमान में एमवीए की संख्या 46 है, जिसमें शिवसेना (यूबीटी) के 20, कांग्रेस के 16 और एनसीपी (एसपी) के 10 सदस्य शामिल हैं। नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल है। उद्धव ठाकरे से मुलाकात कर कांग्रेस ने कहा था करेंगे समर्थन पिछले सप्ताह सपकाल ने उद्धव ठाकरे से मुलाकात कर उन्हें कांग्रेस पार्टी का समर्थन दिया। सपकाल ने उद्धव ठाकरे को महा विकास अघाड़ी (एमवीए) गठबंधन का प्रमुख चेहरा बताते हुए उनका पुरजोर समर्थन किया और कहा कि गठबंधन उनके नेतृत्व में ही आगे बढ़ेगा।

उद्धव ठाकरे को ही समर्थन पर अड़े

हाल ही में हुई एक बैठक के बाद, सपकाल ने इस बात पर जोर दिया कि अगर ठाकरे विधानसभा चुनाव लड़ते हैं, तो इसका स्वागत किया जाएगा। सपकाल ने घोषणा की कि उद्धव ठाकरे महाराष्ट्र में महा विकास अघाड़ी का निर्विवाद चेहरा हैं।

नागपुर में RSS मुख्यालय और स्मृति मंदिर में रेडियोएक्टिव हमले की धमकी, कमिश्नर को भेजा पत्र

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नागपुर। में आरएसएस मुख्यालय और स्मृति मंदिर को रेडियोएक्टिव हमले की धमकी मिलने से हड़कंप मच गया है। एक गुमनाम पत्र में 'रेडियोएक्टिव' हमले की धमकी दी गई। इससे शहर में हड़कंप मच गया। धमकी भरा पत्र नागपुर के पुलिस आयुक्त डॉ रविंद्रकुमार सिंगल को भेजा गया। इसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के महाल मुख्यालय और रेशीमबाग स्थित स्मृति मंदिर परिसर का जिक्र है। इस धमकी भरे पत्र में 'डीएसएस' नाम के एक कथित संगठन का जिक्र किया गया है और संघ के खिलाफ आपत्तिजनक भाषा का भी इस्तेमाल किया गया है।

धमकी भरे पत्र में क्या

बता दें कि यह गुमनाम पत्र 27 अप्रैल को डाक के जरिए पुलिस आयुक्त कार्यालय में पहुंचा था। इस पत्र को अंग्रेजी में लिखा गया है। इस पत्र में 'डीएसएस' नाम के संगठन का जिक्र किया गया है। पत्र में दावा किया गया है कि दोसरभवन चौक के पास डेटोनेटर रखा गया है। आरएसएस मुख्यालय, रेशीमबाग स्मृतिमंदिर और मेट्रो में 'सीजियम-137' नाम की रेडियोएक्टिव पाउडर डाले जाने की बात लिखी गई।

पत्र में इन जगहों का जिक्र

इस पाउडर को बेहद खतरनाक बताते हुए कई स्वयंसेवकों के प्रभावित होने की धमकी दी गई।

पत्र में जिन जगहों का जिक्र था, उनमें मुख्यालय, स्मृतिमंदिर, बीजेपी का गणेशपेठ कार्यालय और मेट्रो स्टेशन शामिल थे।

हालांकि वहां एटीएस ने एनडीआरएफ और परमाणु विशेषज्ञों की मदद से जांच की लेकिन कहीं भी कुछ संदिग्ध नहीं मिला। पुलिस ने दर्ज किया केस पुलिस ने इस मामले में एटीएस की शिकायत पर केस दर्ज कर लिया है। अब यह पता लगाया जा रहा है कि यह लेटर किसने और क्यों लिखा है। बता दें कि कुछ दिन पहले दोसरभवन मेट्रो स्टेशन के पीछे डॉ. उज्ज्वल लांजेवार के घर के सामने खाली जगह से डेटोनेटर और जिलेटिन की छड़ें मिली थीं। पत्र में यह भी दावा किया गया कि ये विस्फोटक भी उन्होंने ही रखे थे और यह सिर्फ चेतावनी थी, असली खेल अब शुरू होगा।

राजगढ़ में बारातियों से भरी बस पलटी, दूल्हे की दादी समेत 3 की मौत, 27 घायल

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजगढ़। घर में शादी की खुशियां थीं। परिवार के लोग सज-धजकर बारात में शामिल होने के लिए बस में बैठे थे। ढोल-नगाड़ों और हंसी-खुशी के माहौल के बीच मुरैना के अंबाह से उज्जैन के लिए निकली तोमर परिवार की बारात को क्या पता था कि रास्ते में एक दर्दनाक हादसा उनका इंतजार कर रहा है। गुरुवार सुबह राजगढ़ जिले के ब्यावरा स्थित काचरी जोड़ के पास बारातियों से भरी बस पलट गई। इस हादसे में दूल्हे की दादी समेत 3 लोगों की मौत हो गई, जबकि दूल्हे सहित 27 लोग घायल हुए हैं। कई घायलों की हालत गंभीर बनी हुई है। बस में सवार थे 70 लोग जानकारी के अनुसार, धर्मेंद्र ट्रेवल्स, मुरैना की बस में करीब 70 लोग सवार थे। बस मुरैना जिले के अंबाह गांव से उज्जैन शादी समारोह में शामिल होने जा रही थी। सुबह करीब 6 बजे जब बस ब्यावरा के काचरी जोड़ के पास पहुंची, तभी चालक को अचानक झपकी आ गई। इसके चलते बस अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में उतर गई और उछलते हुए दूसरी लेन तक पहुंच गई। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक बस करीब 12 मीटर तक पलटियां खाती रही और फिर जाकर रुकी। हादसे में 3 लोगों की मौत हादसा इतना भयावह था कि बस के अंदर बैठे लोगों में चीख-पुकार मच गई। कई लोग सीटों के नीचे दब गए, तो कुछ खिड़कियों से बाहर जा गिरे। मृतक अंशु उर्फ विष्णु तोमर (25) बस से बाहर जा गिरे थे। वहीं हादसे में दूल्हे की दादी बिटोली देवी (60) की भी मौत हो गई। दुर्घटना की भयावहता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनका पैर कटकर करीब 15 फीट दूर जा गिरा। बाद में उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। हादसे में अभय तोमर (24) की भी मौत हो गई। परिजनों का आरोप है कि अस्पताल में समय पर और उचित इलाज नहीं मिलने के कारण अभय की जान चली गई। परिजनों ने अस्पताल प्रबंधन की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। बस में सब हंस-बोल रहे थे, अचानक जोरदार झटका लगा और चीख-पुकार मच गई। कई लोग सीटों के नीचे दबे थे। प्रशासन अगर समय पर क्रेन भेज देता तो शायद मेरे भाई की जान बच जाती : एक चश्मदीद बाराती

बस चालक मौके से हुआ फरार

घटना के बाद बस चालक मौके से फरार हो गया। स्थानीय लोगों ने तुरंत राहत कार्य शुरू किया और पुलिस व 108 एंबुलेंस को सूचना दी। हालांकि परिजनों का आरोप है कि एंबुलेंस और राहत दल काफी देर से मौके पर पहुंचे।

शादी में डांस के दौरान दो पक्षों में विवाद, एक समाज ने दूसरे युवक के गले में जूते की माला डालकर निकाला जूलुस

महानगर मेट्रो ब्यूरो

जबलपुर। शहपुरा थाना अंतर्गत ग्राम भमकी में मंगलवार को आयोजित विवाह समारोह में डांस के दौरान दो समुदाय के बीच हिंसक विवाद हो गया था। बुधवार को यादव समुदाय के लोगों ने रैकवार परिवार के एक सदस्य को पकड़कर उसे जूते की माला पहनाते हुए थाने ले गए। पुलिस ने दोनों पक्षों के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर आरोपियों को अभिरक्षा में लिया है।

डांस के दौरान हुआ था विवाद

वहीं, जबलपुर के एडिशनल एसपी सूर्यकांत शर्मा ने कहा कि मंगलवार को शहपुरा थाना ग्राम भमकी में आयोजित विवाह समारोह में डांस के दौरान यादव और रैकवार समुदाय के बीच विवाद हो गया था। इस दौरान दोनों पक्षों के बीच मारपीट भी हुई थी। बुधवार की दोपहर को यादव परिवार के कुछ लोगों ने शिवा रैकवार उम्र 27 साल को पकड़ लिया। इसके बाद उसे जूतों की माला पहनाकर उसका जुलूस निकालते हुए पुलिस थाने तक ले गए। पूरे घटनाक्रम का वीडियो बनाकर लोगों के द्वारा सोशल मीडिया में वायरल किया गया है। पुलिस ने दोनों पक्षों की शिकायत पर आधा दर्जन व्यक्तियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज कर आरोपियों को अभिरक्षा में लिया है। जबलपुर के शहपुरा थाना क्षेत्र में दो पक्षों में विवाद यादव समाज के लोगों ने रैकवार परिवार के युवक के गले में डाला जूते का माला जूते का माला डालकर युवक को सड़क पर घुमाया शिवा रैकवार की रिपोर्ट पर संदीप और उसके साथियों पर एफआईआर दर्ज हुई है। वहीं, संदीप की रिपोर्ट पर शिवा और उसके दो अन्य साथियों के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया गया है। दो समुदाय के लोगों को हिदायत दी गयी है कि विवाद को तूल नही दें। पुलिस की समझाइश के बाद दोनों पक्ष के बीच विवाद शांत हो गया है।

वायरल पीडियों में आरोपी युवक पीड़िता को जूतों की माला पहनाकर सड़क पर पैदल ले जाते हुए दिख रहे थे। इस दौरान कुछ महिलाओं के द्वारा ऐसा किये जाने का विरोध किया जा रहा था। रास्ते से गुजरने वाले लोग पूरे घटनाक्रम को देख रहे थे।

बॉम्बे हाई कोर्ट ने 20 करोड़ के मानहानि केस को 20 साल के लिए लटकाया

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई। न्यायपालिका पर बढ़ते मुकदमों के बोझ और पक्षकारों के 'निजी अहंकार' के कारण सिस्टम पर पड़ने वाले दबाव को लेकर बॉम्बे हाई कोर्ट ने एक ऐसा फैसला सुनाया है, जो देशभर में चर्चा का विषय बन गया है। जस्टिस जितेंद्र एस. जैन ने 90 साल की एक बुजुर्ग महिला द्वारा दायर 20 करोड़ रुपये के मानहानि के मुकदमे को अगले 20 वर्षों के लिए स्थगित कर दिया है। अब इस मामले की सुनवाई सीधी वर्ष 2046 में होगी।

विवाद की जड़: हाउसिंग सोसाइटी की मीटिंग और 'अहंकार'

यह पूरा मामला साल 2015 का है। 'श्याम को-ऑपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी' की एक सालाना आम सभा के दौरान कुछ बहसबाजी हुई थी। इसी विवाद को लेकर 90 वर्षीय तारिणीबेन और 57 वर्षीय ध्वनि देसाई ने साल 2017 में किलिकिलराज भंसाली और अन्य के खिलाफ मुकदमा दायर किया। उन्होंने आरोप लगाया कि इस घटना से उन्हें मानसिक कष्ट हुआ है, जिसके एवज में उन्होंने ब्याज सहित 20 करोड़ रुपये के मुआवजे की मांग की थी। सुनवाई के दौरान जस्टिस जैन ने पाया कि यह केस कानून की लड़ाई से ज्यादा व्यक्तिगत अहंकार का टकराव है। उन्होंने बेहद कड़े शब्दों में टिप्पणी की: 'यह उन मामलों में से एक है जहां जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुंचे पक्षकारों के अहंकार की लड़ाई पूरी न्यायिक व्यवस्था को जाम कर रही है। इसकी वजह से अदालतें उन महत्वपूर्ण केसों को समय नहीं दे पा रही हैं, जिन्हें वास्तव में प्राथमिकता की जरूरत है। '

माफी से इंकार और कोर्ट का कड़ा रुख

अदालत ने पहले सुझाव दिया था कि यदि पक्षकार बिना शर्त माफी मांग लें, तो इस विवाद को यहीं खत्म किया जा सकता है। लेकिन 90 वर्षीय वादी केस को आगे बढ़ाने पर अड़ी रहीं। इस पर हाई कोर्ट ने स्पष्ट कर दिया कि सिर्फ 'सुपर सीनियर सिटीजन' होने के नाते ऐसे ईगो-बेस्ड मुकदमों को प्राथमिकता नहीं दी जा सकती। कोर्ट ने कड़ा संदेश देते हुए केस को दो दशक के लिए ठंडे बस्ते में डाल दिया। महानगर मेट्रो का नजरिया

अदालतों में लाखों केस लंबित हैं। ऐसे में छोटे-मोटे झगड़ों को करोड़ों की मानहानि का रूप देकर सिस्टम का समय बर्बाद करना जायज नहीं है।

पुणे में क्लोरीन गैस का रिसाव, 24 लोग अस्पताल में भर्ती, इलाके में मचा हड़कंप

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पुणे। के कोंढवा इलाके में गुरुवार तड़के एक बंद पड़े जल शोधन संयंत्र से क्लोरीन गैस का रिसाव होने से अफरा-तफरी मच गई. गैस की चपेट में आने से दो दमकलकर्मियों समेत कुल 24 लोगों को सांस लेने में तकलीफ के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया है.

दमकल के अधिकारी सुनील नाइकनावारे ने बताया कि कोंढवा स्थित गंगाधाम इलाके में बुधवार-गुरुवार की दरमियानी रात को एक पुराने जल शोधन संयंत्र के गोदाम में रखी क्लोरीन टैंक से गैस का रिसाव होने की सूचना मिली थी. सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची टीम ने पूरे इलाके को खाली कराया और गैस के फैलाव को रोकने के लिए टैंक को पैच लगा दिया. इस प्रक्रिया के दौरान खुद दो जवान भी जहरीली गैस की चपेट में आ गए. भिलारे ने बताया कि गैस फैलने के कारण आसपास के कम-से-कम इलाके में रहने वाले 22 लोग और बचाव कार्य में जुटे 2 दमकलकर्मियों को सांस लेने में दिक्कत होने लगी. सभी 24 लोगों को तुरंत ससून जनरल अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज जारी है. अधिकारियों ने बताया कि अस्पताल में भर्ती सभी 22 निवासी और दोनों दमकलकर्मी अब खतरे से बाहर हैं. फिलहाल उन्हें डॉक्टरों की निगरानी में रखा गया है. पुलिस और प्रशासन इस बात की जांच कर रहे हैं कि बंद पड़े प्लांट में खतरनाक गैस का टैंक लापरवाही से क्यों छोड़ा गया था.

दशकों तक कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने महिला आरक्षण को ठंडे बस्ते में डाल रखा

भदौही पहुंचे राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने विरोधियों पर बोला हमला

भदौही (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने अपने पहले भदोही दौरे के दौरान विपक्ष की महिला विरोधी राजनीति पर जमकर हमला किया। अपने रोड शो के दौरान बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नबीन ने सीधे तौर पर सपा, कांग्रेस और टीएमसी को निशाने पर लिया। उन्होंने कहा कि जो राजनैतिक पार्टियां दशकों तक महिला आरक्षण बिल को संसद में लटकाते और फाड़ते रहे, आज उन्हें नारी शक्ति का वंदन करने का कोई हक नहीं है।

वाराणसी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भव्य कार्यक्रम के बाद सीधे भदौही पहुंचे बीजेपी अध्यक्ष नबीन ने महिलाओं के सम्मान को आस्था से जोड़ा। भीड़ में उन्होंने कहा कि मैं उस आदि शक्ति माँ विंध्यवासिनी के चरणों में शीश नवाने जा रहा हूं, जिनसे यह पूरी सृष्टि संचालित होती है। माता विंध्यवासिनी गवाह हैं कि नारी है तब ही यह संसार है। जो लोग महिलाओं का अपमान करते हैं, वे दरअसल इस संसार के अस्तित्व को चुनौती दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि दशकों तक कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने महिला आरक्षण को ठंडे बस्ते में डाल रखा था। सदन में बिल की प्रतियां फाड़ने वाले लोग आज किस मुंह से महिलाओं की बात करते हैं? लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित कर दिखा दिया कि भाजपा कथनी में नहीं, करनी में विश्वास रखती है। बात दें कि राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में नितिन नबीन का यह जनपद में पहला दौरा था, जिसे कार्यकर्ताओं ने यादगार बना दिया। औराई चौराहे पर स्वागत का आलम यह था कि सैकड़ों लोगों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष को गुलाब के फूलों की बारिश से नहला दिया, जिससे पूरा मार्ग फूलों की चादर से ढक गया। कार्यकर्ताओं के भारी हुजूम और गगनभेदी नारेबाजी के चलते अध्यक्ष का काफिला बमुश्किल आगे बढ़ा।

डीजे का शोर नहीं सह पाईं मुर्गियां, 140 की जान गई, पोल्ट्री फार्म संचालक ने डीजे कराई एफआईआर

सुल्तानपुर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले से एक ऐसा हैरान करने वाला मामला सामने आया है, जहां शादी के जश्न में बज रहे तेज डीजे की आवाज बेजुबान पक्षियों के लिए काल बन गई। बल्दीराय थाना क्षेत्र के दरियापुर गांव में एक पोल्ट्री फार्म के पास से गुजर रही बारात के डीजे की कानफोड़ू आवाज के कारण कथित तौर पर 140 मुर्गियों की दहशत से मौत हो गई। इस अनोखी घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया है और पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पूरी घटना 25 अप्रैल की रात की है। गांव के निवासी बब्बन विश्वकर्मा की बेटी की शादी थी, जिसकी बारात कुड़वार के पूरे राम भद्र पुरवा से आई थी। बारात जब पूरे गाजे-बाजे और डीजे के साथ गांव की गलियों से गुजर रही थी, तभी रास्ते में साबिर अली का पोल्ट्री फार्म पड़ा। साबिर का आरोप है कि रात करीब 9:30 बजे जब डीजे उनके फार्म के सामने पहुंचा, तो उसकी ध्वनि सीमा इतनी अधिक थी कि मुर्गियों के दबड़े में अचानक अफरा-तफरी मच गई। तेज धमक और शोर के कारण मुर्गियां दहशत में आ गईं और देखते ही देखते 140 मुर्गियों ने दम तोड़ दिया। पीड़ित साबिर अली ने बताया कि उन्होंने डीजे ऑपरेटर से आवाज कम करने का अनुरोध भी किया था, लेकिन उनकी बात अनसुनी कर दी गई। मुर्गियों की मौत के बाद हुए आर्थिक नुकसान से आहत साबिर ने बल्दीराय थाने में न्याय की गुहार लगाई। पुलिस ने मामले की गंभीरता और पशु क्रूरता के पहलुओं को देखते हुए परसीपुर निवासी डीजे संचालक कवि यादव के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। मामले की जांच कर रहे उपनिरीक्षक एमडी ताहुर खान यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या डीजे निर्धारित डेसिबल मानकों का उल्लंघन कर रहा था। विशेषज्ञों का कहना है कि तेज ध्वनि तरंगें और भारी बेस छोटे पक्षियों के दिल की धड़कन को अनियंत्रित कर देते हैं, जिससे उन्हें कार्डियक अरेस्ट (दिल का दौरा) पड़ने का खतरा रहता है। इस घटना ने एक बार फिर शादियों और अन्य समारोहों में ध्वनि प्रदूषण के नियमों की अनदेखी पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। फिलहाल, गांव में यह मामला चर्चा का केंद्र बना हुआ है।

बीजेपी नेता अग्रवाल ने की पायलट पर अपमानजनक टिप्पणी, कांग्रेस ने फूंका पुतला

बहरोड़ (एजेंसी)। राजस्थान में बीजेपी प्रदेश प्रभारी राधा मोहन अग्रवाल ने कांग्रेस के दिग्गज नेता सचिन पायलट के खिलाफ की गई अपमानजनक और अनर्गल टिप्पणी ने सियासी पारा चढ़ा दिया है। इस बयान के विरोध में बहरोड़ के कांग्रेस कार्यकर्ता सड़कों पर उतर आए और बीजेपी प्रभारी का पुतला दहन कर कड़ा विरोध जताया। पीसीसी महासचिव डॉ. आरसी यादव के नेतृत्व में हुए इस विरोध प्रदर्शन में कांग्रेस ने बीजेपी को सीधी चेतावनी दी है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक डॉ. यादव ने साफ कहा कि बीजेपी का यह कृत्य बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं है और राधा मोहन अग्रवाल को अपने शब्द वापस लेते हुए सार्वजनिक रुप से माफी मांगनी चाहिए। कांग्रेस ने चेतावनी दी है कि यदि माफी नहीं मांगी गई, तो आगामी चुनावों में राजस्थान की जनता बीजेपी को ऐसा सबक सिखाएगी कि उन्हें कहीं मुंह छुपाने की जगह नहीं मिलेगी। पायलट को बाहरी बताने के तर्क पर डॉ. यादव ने तीखा हमला करते हुए बीजेपी के शीर्ष नेतृत्व पर सवाल खड़े किए। उन्होंने सवाल उठाया कि सचिन पायलट को बाहरी बताने वाली बीजेपी बताए कि क्या पीएम नरेंद्र मोदी बनारस में पैदा हुए थे? डॉ. यादव ने कहा कि बनारस से प्रधानमंत्री का क्या रिश्ता है, फिर भी वे वहां से सांसद हैं। उन्होंने बीजेपी को नसीहत दी कि वे अपने गिरेबान में झांककर देखें।

ऑस्ट्रेलिया से डिपोर्ट हुए 15 भारतीयों का जत्था दिल्ली हवाई अड्डे पर पहुँचा

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया से नियमों के उल्लंघन के आरोप में डिपोर्ट हुए 15 भारतीयों का जत्था दिल्ली हवाई अड्डे पर पहुँच गया है, जिसमें से 11 व्यक्ति पंजाब के विभिन्न जिलों से संबंधित हैं। इन सभी यात्रियों के दिल्ली पहुँचते ही सुरक्षा एजेंसियों और इमिग्रेशन अधिकारियों ने करीब पाँच घंटे तक गहन पूछताछ की, ताकि डिपोर्ट किए जाने के वास्तविक कारणों और उनकी गतिविधियों का पूरा ब्यौरा जुटा सके। पंजाब सरकार ने मामले को गंभीरता से लेकर अपने प्रतिनिधियों और विशेष वाहनों का दल दिल्ली भेजा है, ताकि इन लोगों को सुरक्षित उनके गृह जिलों तक पहुँचाया जा सके। इसके लिए एक टेंपो ट्रैवलर और अन्य गाड़ियों का प्रबंध हवाई अड्डे पर ही किया गया था। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, डिपोर्ट किए लोग जालंधर, होशियारपुर, खन्ना, मोगा, नवांशहर, गढ़शंकर, तरनतारन, फिरोजपुर और रूपनगर जैसे इलाकों के निवासी हैं। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने बताया कि इन नागरिकों ने ऑस्ट्रेलिया में प्रवास के दौरान वहां के स्थानीय नियमों का उल्लंघन किया था, जिसके परिणामस्वरूप ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने उन्हें वापस भारत भेजने का कठोर निर्णय लिया। वापस लौटे व्यक्तियों में जसवंत सिंह, अंग्रेज सिंह, सतिंदरजीत सिंह शेरगिल, गुरप्रीत सिंह संधू, जगजीत सिंह, जसप्रत सिंह, निर्मल सिंह, श्रुति शर्मा, रणजी सिंह, हरप्रीत सिंह और गगनदीप सिंह शामिल हैं, जिनकी उम्र 25 से 41 वर्ष के बीच है। यह घटनाक्रम पिछले साल अमेरिका द्वारा 104 अवैध प्रवासियों को डिपोर्ट किए जाने की याद दिलाता है, जिन्हें अमेरिकी वायुसेना के विमान से अमृतसर लाया गया था। अवैध इमिग्रेशन और विदेशी कानूनों की अनदेखी के कारण पंजाब के युवाओं का इस तरह डिपोर्ट होना एक चिंताजनक विषय बन गया है। फिलहाल, दिल्ली में औपचारिक कागजी कार्रवाई और वेरिफिकेशन प्रक्रिया पूरी होने के बाद इन सभी को पंजाब पुलिस और सरकारी टीम की निगरानी में उनके गंतव्य की ओर रवाना कर दिया गया है। राज्य सरकार अब इन मामलों के मूल कारणों की जांच कर रही है ताकि भविष्य में ऐसी स्थितियों को रोका जा सके।

पहलः गुजरात सरकार के पेंशनर्स के लिए गुड न्यूज़, पोस्टमैन के माध्यम से 1 मई से 31 जुलाई, 2026 के मध्य घर बैठे निःशुल्क बनेगा डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र

महानगर मेट्रो ब्यूरो

रायपुर। पेंशनधारकों के जीवन प्रमाण पत्र (हयाती) सत्यापन के लिए गुजरात सरकार ने इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के साथ मिलकर महत्वपूर्ण पहल की है। गुजरात सरकार के रिटायर्ड पेंशनर्स को जीवन प्रमाण पत्र (हयाती) सत्यापन के लिए अब बैंक, ट्रेजरी या किसी अन्य ऑफिस में जाने की आवश्यकता नहीं है। यह सेवा निःशुल्क रूप से उनके घर पर पोस्टमैन और ग्रामीण डाक सेवकों द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी। उत्तर गुजरात परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव और गुजरात सरकार में वित्त सचिव श्री संदीप कुमार की उपस्थिति में गुजरात सरकार और इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के बीच हुए समझौते (रूश) के तहत पेंशनर्स को डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र की सुविधा 1 मई से 31 जुलाई, 2026 के मध्य उनके घर पर निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएगी। इससे गुजरात के लगभग 5 लाख से अधिक पेंशनर्स लाभान्वित होंगे। इस समझौते पर आईपीपीबी की ओर से असिस्टेंट जनरल मैनेजर श्री रणवीर सिंह तथा गुजरात सरकार की ओर से निदेशक, वित्त विभाग श्री अमित मीना ने हस्ताक्षर किए। उल्लेखनीय है कि जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2018 में देशभर में इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक का शुभारंभ किया था,

तब 'बैंकिंग सेवाएं आपके द्वार' उनका प्रमुख विजन था। इसी विजन को आगे बढ़ाते हुए गुजरात सरकार ने इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के साथ मिलकर यह पहल की है। इस अवसर पर आईपीपीबी के चीफ मैनेजर श्री अभिजीत जिभकाटे तथा सीनियर मैनेजर श्री संतोष कुमार भी उपस्थित रहे। उत्तर गुजरात परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य फेस ऑथेंटिकेशन (चेहरा प्रमाणीकरण) तकनीक और फिंगरप्रिंट बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन की डिजिटल प्रक्रिया के उपयोग को बढ़ावा देना है, जिससे सभी पेंशनर्स, विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वालों को सुविधाजनक सेवाएं मिल सकें। पेंशनभोगियों को डिजिटल बायोमेट्रिक सर्टिफिकेशन के जरिए कुछ ही मिनटों में डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट जारी कर दिया जाएगा, जिसकी डिजिटल कॉपी भी पेंशन ऑफिस में पहुंच जाएगी। यह सेवा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र द्वारा विकसित जीवन प्रमाण एप्लिकेशन के माध्यम से दी जा रही है। पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि गत वर्ष गुजरात में 93 हजार से ज़्यादा पेंशनधारकों ने इंडिया पोस्ट पेमेंटस बैंक के माध्यम से डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र का लाभ लिया, जिसमें गुजरात सरकार के 62 हज़ार से ज़्यादा पेंशनधारकों ने घर बैठे यह सुविधा प्राप्त की।

सहजानंद वर्णी जन्मभूमि स्मारक का शिलान्यास कार्यक्रम संपन्न

ग्रामीण लोगों ने की आचार्य श्री की भव्य आगवानी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पृथ्वीपुर। परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के ससंघ मंगल सान्निध्य में,सहजानंद वर्णी जन्मभूमि स्मारक का शिलान्यास कार्यक्रम ग्राम दुमादुम पृथ्वीपुर में संपन्न हुआ। सर्वप्रथम सुबह पृथ्वीपुर से दुमदुमा के लिए आचार्य श्री का गमन हुआ और अगवानी दुमदुमा में हजारों धर्म प्रेमी जन के साथ ग्रामीण जन समुदाय ने भी कलश लेकर घर के द्वार पर रंगोली एवं पाद प्रक्षालन के साथ आचार्य श्री की आगवानी की, सैकड़ो वर्ष बाद इस ग्राम में ऐसा भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन देश के ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ.श्रेयांस जैन बड़ौत के निर्देशन में संपन्न हुआ सर्वप्रथम जन्मभूमि स्मारक शिलान्यास, वर्णी बाल संस्कार केंद्र,वर्णी आरोग्य केंद्र का शुभारंभ किया गया।

बच्चों को टी-शर्ट काफी एवं मिष्ठान वितरण किया गया। इस कार्यक्रम में वर्णी विकास सभा राष्ट्रीय अध्यक्ष जयंत जैन सीकर, निर्देशक कडोरी लाल बण्डा की टीम का महत्वपूर्ण योगदान रहा। प्रतिष्ठाचार्य कमल कुमार कमलांकुर भोपाल द्वारा विधि- विधान पूर्वक कार्यक्रम संपन्न कराया गया। कार्यक्रम में दिल्ली, अहमदाबाद,भोपाल,बड़ौत, राजस्थान, सागर, भोपाल के लोग कार्यक्रम में शामिल हुए। वर्णी संदेश समाचार पत्र का विमोचन किया गया। दिगंबर जैन समाज दुमदुमा,पृथ्वीपुर ने आंगतुक अतिथियों का स्वागत सत्कार किया। प्रशासनिक सहयोगी डिप्टी कलेक्टर विनीता जैन का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। पीएससी में चयनित आईपीएस अभिजीत जैन का सम्मान किया गया।शिलान्यास परिवार श्री विमलचंद,सुमत कुमार परिवार अहमदाबाद एवं जिनेंद्र कुमार सेतुलाल जैन प्रवीन कुमार जैन परिवार अहमदाबाद गुजरात, आरोग्यधाम पुण्यार्जक परिवार डॉ. श्रेयांस कुमार जैन,आलोक जैन बड़ौत एवं नरेंद्र कुमार दयाचंद्र जैन और संजीव कुमार जयकुमार जैन अहमदाबाद का स्मारक निर्माण सहयोगी परिवार रहें। कार्यक्रम में आचार्य श्री ने कहा की सहजानंद वर्णी की जन्मस्थली इसलिए महान है कि उनके द्वारा 500 से ज्यादा जैन ग्रथों की रचना की गई और आज देश भर में इन ग्रंथो के माध्यम से धर्म की प्रभावना निरंतर चल रही हैं अगर समाज के लोग उनकी कृतियों का संवर्धन संरक्षण कर सकें तो इससे महत्वपूर्ण कार्य कोई नहीं है,कार्यक्रम में मुकेश जैन, पंकज जैन, नवीन जैन,देवेंद्र जैन मुकेश जैन पृथ्वीपुर के साथ दुमदुमा, पृथ्वीपुर समाज एवं ग्रामीण समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अंतर्राष्ट्रीय वेटलिफ्टिंग टूर्नामेंट में ज्ञानेश्वरी यादव ने जीता गोल्ड मेडल

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजनांदगांव. अंतर्राष्ट्रीय वेटलिफ्टिंग टूर्नामेंट आईबीएफसी यूनिवर्सल कप 2026 में ज्ञानेश्वरी यादव ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 53 किलोग्राम वर्ग में गोल्ड मेडल जीतकर देश और प्रदेश का नाम रोशन किया है। समोआ के एपिया स्थित तुआनाईमाटो स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में 25 अप्रैल से 2 मई 2026 तक तक अंतर्राष्ट्रीय वेटलिफ्टिंग टूर्नामेंट का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता में 70 देशों के लगभग 500 खिलाड़ी एवं 200 अधिकारी शामिल हो रहे है।

ज्ञानेश्वरी यादव ने शानदार प्रदर्शन के साथ अपने ग्रुप में प्रथम स्थान हासिल कर गोल्ड मेडल अपने नाम किया है। साथ ही कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 क्वालिफिकेशन के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण है। उल्लेखनीय है कि ज्ञानेश्वरी यादव, जूनियर वर्ल्ड चौंपियनशिप में सिल्वर मेडलिस्ट, सीनियर कॉमनवेल्थ में गोल्ड मेडलिस्ट एवं छत्तीसगढ़ शासन द्वारा गुण्डाधुर पुरस्कार से सम्मानित है। ज्ञानेश्वरी यादव वर्तमान में छत्तीसगढ़ पुलिस में कार्यरत हैं एवं उनकी पोस्टिंग राजनांदगांव पुलिस में है। उनकी सफलता के पीछे उनके कोच अजय लोहार विश्वकर्मा है। जिनकी मेहनत और मार्गदर्शन से ज्ञानेश्वरी यादव इस मुकाम तक पहुंची है।

खनन क्षेत्रों में ड्रोन की निगरानी से खनिज संसाधन की सुरक्षा तथा राजस्व संरक्षण में मिल रही मदद

महानगर मेट्रो ब्यूरो

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार ने अवैध खनन और खनिजों के अवैध परिवहन पर लगाम कसने के लिए तकनीक और नवाचार का सहारा लेते हुए एक बड़ी और निर्णायक पहल की है। इसी कड़ी में अब खनन क्षेत्रों में ड्रोन से निगरानी की शुरुआत कर दी गई है, जो राज्य में कानून व्यवस्था, खनिज संसाधन की सुरक्षा तथा राजस्व संरक्षण की दिशा में अहम कदम साबित हो रहा है। **राज्य सरकार की स्पष्ट** मंशा है कि किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधि को जड़ से खत्म किया जाए। आधुनिक तकनीकों के उपयोग से अब खनन क्षेत्रों में रियल टाइम निगरानी संभव हो सकेगी, जिससे अवैध उत्खनन, परिवहन और संबंधित गतिविधियों पर तुरंत कार्रवाई की जा सकेगी। यह कदम न केवल राजस्व हानि को रोकेगा, बल्कि अवैध कारोबार में लिप्त तत्वों के लिए कड़ा संदेश भी साबित होगा। खनिज विभाग का मैदानी अमला पहले से ही अवैध खनन के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई कर रहा था, लेकिन अब ड्रोन तकनीक के जुड़ने से इस कार्रवाई की गति और सटीकता दोनों बढ़ेंगी। ड्रोन से लगभग 5 किलोमीटर तक की रेंज और 120 मीटर तक ऊंचाई से निगरानी की क्षमता के चलते बड़े और दुर्गम भौगोलिक क्षेत्रों पर भी पैनी नजर रखी जा रही है। ड्रोन के माध्यम से संदिग्ध गतिविधियों की तुरंत पहचान कर मौके पर कार्रवाई की जा सकेगी, जिससे अवैध गतिविधियों में संलिप्तों के बच निकलने की संभावना लगभग समाप्त हो जाएगी। खनिज विभाग के अधिकारियों के अनुसार, ड्रोन में

उच्च-रिज़ॉल्यूशन कैमरा, नाइट विजन और एआई आधारित विश्लेषण प्रणाली जैसी आधुनिक सुविधाएं मौजूद हैं, जो व्यापक और सटीक निगरानी सुनिश्चित करती हैं। इसके जरिए बड़े और दुर्गम खनन क्षेत्रों पर भी आसानी से नजर रखी जा सकती है।

यह पहल स्पष्ट संकेत देती है कि राज्य सरकार अवैध खनन के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' की नीति पर काम कर रही है। सरकार का यह साहसिक निर्णय न केवल कानून का सख्ती से पालन सुनिश्चित करेगा, बल्कि खनिज संसाधनों के संरक्षण और पारदर्शी राजस्व व्यवस्था को भी मजबूत करेगा। ड्रोन निगरानी की यह नई व्यवस्था राज्य में सुशासन और तकनीकी नवाचार का मजबूत उदाहरण बनकर उभर रही है।

इसी कड़ी में 29 अप्रैल 2026 को जिला कांकेर के तहकापार रेत खदान क्षेत्र में ड्रोन तकनीक का उपयोग करते हुए सघन निगरानी और छापामार कार्रवाई की गई। कार्रवाई के दौरान अवैध उत्खनन और परिवहन में संलिप्त वाहनों एवं उपकरणों की पहचान की गई। ड्रोन निगरानी शुरू होते ही अवैध गतिविधियों में शामिल लोग अपने वाहन छोड़कर मौके से फरार हो गए।

इसके बाद केंद्रीय उड़नदस्ता दल और कलेक्टर (खनिज शाखा) के निर्देशन में कार्रवाई करते हुए महानदी के किनारे भूईगांव की सीमा पर विशेष अभियान चलाकर एक चेन माउंटेन पोकलेन मशीन जेसीबी (215 एलसी) तथा एक हाईवा (क्रमांक 0975) जब्त किया गया।

छत्तीसगढ़ में मकान सूचीकरण एवं गणना कार्य हेतु व्यापक तैयारियां, वीसी के माध्यम से समीक्षा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

रायपुर। राष्ट्रीय महत्व का व्यापक अभियान जनगणना 2027 के प्रथम चरण के अंतर्गत छत्तीसगढ़ राज्य में मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना का फील्ड कार्य 01 मई से 30 मई 2026 तक संचालित किया जाएगा। इस संबंध में तैयारियों, व्यवस्थाओं एवं क्रियान्वयन की प्रगति की समीक्षा जनगणना निदेशक श्री कार्तिकेय गोयल द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी जिला कलेक्टरों, नगर निगम आयुक्तों एवं प्रमुख जनगणना अधिकारियों के साथ की गई। बैठक में गृह विभाग, छत्तीसगढ़ शासन के अधिकारी भी उपस्थित रहे। जनगणना निदेशक श्री कार्तिकेय गोयल ने कहा कि जनगणना एक राष्ट्रीय महत्व का व्यापक अभियान है, जिसके माध्यम से देश की जनसंख्या, आवासीय स्थिति एवं सामाजिक-आर्थिक आंकड़ों का सटीक आकलन किया जाता है, तथा मकान सूचीकरण एवं गणना इसकी आधारशिला है।

प्रशिक्षण एवं फील्ड कार्य पर विशेष जोर

जनगणना निदेशक श्री कार्तिकेय गोयल ने निर्देशित किया कि सभी जिलों में प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों का समुचित प्रशिक्षण सुनिश्चित किया जाए। फील्ड कार्य के दौरान डेटा संग्रहण की विधि, डिजिटल उपकरणों के उपयोग तथा संभावित चुनौतियों के समाधान पर विशेष ध्यान दिया जाए। साथ ही यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी क्षेत्र गणना कार्य से न छूटे और न ही किसी क्षेत्र का दोहराव हो। पहचान-पत्र एवं स्थानीय सहयोग की व्यवस्था बैठक में निर्देश दिए गए कि सभी प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों को फोटोयुक्त पहचान-पत्र जारी किए जाएं, ताकि आम नागरिकों में किसी प्रकार का भ्रम न रहे। इसके अतिरिक्त नगरीय निकायों एवं उनसे सटे ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित बड़ी आवासीय कॉलोनियों एवं अपार्टमेंट्स में जनगणना कार्य के सुचारू संचालन हेतु आवासीय कल्याण समितियों को आवश्यक निर्देश जारी करने पर भी बल दिया गया। डिजिटल डेटा संग्रहण एवं गुणवत्ता पर जोर जनगणना निदेशक श्री कार्तिकेय गोयल ने कहा कि इस बार जनगणना के आंकड़े मोबाइल एप के माध्यम से एकत्र किए जा रहे हैं, अतः प्रत्येक प्रविष्टि को अत्यंत सावधानीपूर्वक दर्ज किया जाए। किसी भी प्रकार की त्रुटि या लापरवाही भविष्य की नीतियों एवं योजनाओं को प्रभावित कर सकती है, इसलिए इस कार्य में उच्च स्तर की जिम्मेदारी एवं सतर्कता आवश्यक है। ॉनिटरिंग एवं त्वरित समस्या समाधान कार्य की नियमित निगरानी हेतु प्रभावी मॉनिटरिंग तंत्र विकसित करने के निर्देश दिए गए तथा यह सुनिश्चित करने को कहा गया कि किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या या बाधा

उत्पन्न होने पर उसका त्वरित समाधान किया जाए। जनजागरूकता एवं फेक न्यूज पर नियंत्रण जनजागरूकता के महत्व पर बल देते जीहुए जनगणना निदेशक श्री कार्तिकेय गोयल ने निर्देशित किया कि स्थानीय मीडिया, सोशल मीडिया एवं जनसंपर्क गतिविधियों के माध्यम से आम नागरिकों को जनगणना के प्रति जागरूक किया जाए, ताकि वे स्वेच्छा से सही एवं पूर्ण जानकारी प्रदान करें। साथ ही सोशल मीडिया की सतत निगरानी कर किसी भी प्रकार की जाभ्रामक सूचना या फेक न्यूज का तत्काल खंडन किया जाए। नागरिकों की सुविधा के लिए टोलफ्री नंबर 1855 पर संपर्क की व्यवस्था भी उपलब्ध कराई गई है। समर्पण के साथ कार्य पूर्ण करने का आह्वान अंत में, जनगणना निदेशक श्री कार्तिकेय गोयल ने सभी अधिकारियों से अपेक्षा व्यक्त की कि वे पूर्ण समर्पण, समन्वय एवं उत्तरदायित्व के साथ इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय दायित्व का निर्वहन करें तथा निर्धारित समय-सीमा के भीतर कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करें।

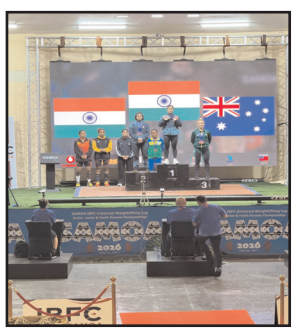

बेन कैपिटल ने एमक्योर फार्मा में 289 करोड़ में बेची एक फीसदी हिस्सेदारी

नई दिल्ली ।

वैश्विक निवेश कंपनी बेन कैपिटल ने एमक्योर फार्मास्युटिकल्स में लगभग एक प्रतिशत हिस्सेदारी 289 करोड़ रुपये से अधिक में बेच दी है। यह जानकारी एनएसई के ब्लॉक डील आंकड़ों से मिली। अमेरिका स्थित बेन कैपिटल ने अपनी संबद्ध इकाई बीसी इन्वेस्टमेंट्स आईवी लिमिटेड के माध्यम से पुणे स्थित एमक्योर के 18 लाख शेयर बेचे। ये शेयर औसतन 1,608.20 रुपये प्रति शेयर के भाव पर बेचे गए जिससे कुल सौदे का मूल्य 289.47 करोड़ रुपये रहा। इस लेनदेन के बाद स बीच, नॉर्वे के गवर्नमेंट पेंशन फंड ग्लोबल ने समान संख्या में शेयर उसी कीमत पर खरीदे। यह दुनिया का सबसे बड़ा संप्रभु संपत्ति कोष (सॉवरेन वेल्थ फंड) है।

भारत का आईफोन निर्यात 2 लाख करोड के रिकॉर्ड स्तर पर

पीएलआई योजना के अंतिम वर्ष में ऐतिहासिक उपलब्धि, डीजल वाहनों और हीरों को भी पछाड़ा

नई दिल्ली ।

भारत में स्मार्टफोन विनिर्माण क्षेत्र ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। वित्त वर्ष 2026 के दौरान भारत से आईफोन का निर्यात रिकॉर्ड 2 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। यह आंकड़ा इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के लिए केंद्र सरकार की उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के अंतिम वर्ष में सामने आया है, जो मेक इन इंडिया पहल की शानदार सफलता को दर्शाता है। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा जारी वित्त वर्ष 2026 (अप्रैल-फरवरी) के 11 महीनों के निर्यात आंकड़ों के अनुसार, भारत का कुल स्मार्टफोन निर्यात लगभग 2.6 लाख करोड़ रुपये रहा, जिसमें अकेले आईफोन का योगदान 75 फीसदी से अधिक (लगभग 2 लाख करोड़ रुपये) रहा। यह उपलब्धि देश के पारंपरिक प्रमुख निर्यात श्रेणियों को भी पीछे छोड़ गई है। इसी अवधि में, डीजल वाहन 14.53 अरब डॉलर (लगभग 1.21 लाख करोड़ रुपये) के निर्यात के साथ दूसरी सबसे बड़ी श्रेणी रही, जबकि हीरा 11.23 अरब डॉलर (लगभग 93 हज़ार करोड़ रुपये) और दवाएं 9.98 अरब डॉलर (लगभग 83 हज़ार करोड़ रुपये) के साथ क्रमशः तीसरे और चौथे स्थान पर रहीं। यह आंकड़ा ऐपल को भारत की विनिर्माण महत्त्वाकांक्षा का एक प्रमुख उदाहरण और सरकारी पहल की उत्कृष्ट सफलता की कहानी बनाता है। उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना की शुरुआत के बाद से भारत से ऐपल के आईफोन का निर्यात लगभग शून्य से बढ़कर मात्र पांच वर्षों के भीतर 2 लाख करोड़ रुपये सालाना तक पहुंच गया है। वित्त वर्ष 2021-22 में 9,351.6 करोड़ रुपये से बढ़कर यह आंकड़ा वित्त वर्ष 2022-23 में 44,269.5 करोड़ रुपये और वित्त वर्ष 2023-24 में 85,013.5 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। पीएलआई योजना की गति बढ़ने के साथ ही, ऐपल के विनिर्माण भागीदार टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स और फॉक्सकॉन जैसी कंपनियों ने आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से श्रमिकों को प्रशिक्षित करते हुए उत्पादन और निर्यात में तेजी लाई। ऐपल की आपूर्ति श्रृंखला में 40 से अधिक घरेलू कंपनियों के साथ-साथ जापान की टीडीके कॉर्पोरेशन और कई ताइवानी संयुक्त उद्यम भी शामिल हैं, जिसमें चीनी कंपनियों को लगातार बाहर रखा गया है। यह भारत को वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण हब बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

रुपया गिरावट पर बंद

मुंबई ।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले गुरुवार को भारतीय रुपया 15 पैसे टूटकर अपने अब तक के सबसे निचले स्तर 95.03 पर पहुंचा। कच्चे तेल की ऊंची कीमतों और अमेरिकी डॉलर के मजबूत रुख से रुपया आज सुबह शुरुआती कारोबार में 32 पैसे टूटकर 95.20 पर पहुंच गया। विदेशी मुद्रा कारोबारियों के अनुसारन ब्रेंट क्रूड का दाम करीब 122 डॉलर प्रति बैरल के आसपास बना हुआ है, जिससे भारत का आयात खर्च बढ़ने की आशंका है। वहीं पश्चिम एशिया में संभावित व्यापक संघर्ष की चिंताओं ने निवेशकों की बेचैनी बढ़ा दी है जिससे डॉलर के मुकाबले रुपये की विनिमय दर पर और दबाव पड़ सकता है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 95.01 प्रति डॉलर पर खुला। शुरुआती कारोबार में फिसलकर 95.20 प्रति डॉलर के रिकॉर्ड निचले स्तर तक पहुंच गया जो पिछले बंद स्तर से 32 पैसे की गिरावट दर्शाता है। रुपया बुधवार को 20 पैसे कमजोर होकर 94.88 प्रति डॉलर

के रिकॉर्ड निचले स्तर पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दिखाने वाला डॉलर सूचकांक 0.01 फीसदी की बढ़त के साथ 98.96 पर रहा।

1 मई को शेयर बाजार बंद रहेंगे बीएसई-एनएसई में नहीं होगा कारोबार

महाराष्ट्र दिवस पर नहीं होगी शेयरों की खरीद-बिक्री

मुंबई ।

1 मई शुक्रवार को महाराष्ट्र दिवस के अवसर पर देश के प्रमुख शेयर बाजार एनएसई (नेशनल स्टॉक एक्सचेंज) और बीएसई (बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज) बंद रहेंगे। निवेशकों को अब 30 अप्रैल के बाद सीधे 4 मई को ही ट्रेडिंग का मौका मिलेगा। दोनों प्रमुख एक्सचेंजों का मुख्यालय मुंबई में होने के कारण हर साल 1 मई को महाराष्ट्र राज्य के गठन की याद में मनाए जाने वाले महाराष्ट्र दिवस पर बाजार में अवकाश रहता है। यह परंपरा 1960 में राज्य के गठन के बाद से चली आ रही है। मौजूदा वर्ष में कुल 16 ट्रेडिंग हॉलिडे निर्धारित हैं, जिनमें से 7 पहले ही बीत चुके हैं। 1 मई की छुट्टी के बाद, बाजार में 8 और दिनों का अवकाश रहेगा। इनमें शामिल हैं- 28 मई बकरीद, 26 जून मुहर्रम, 14 सितंबर गणेश चतुर्थी, 2 अक्टूबर गांधी जयंती, 20 अक्टूबर दशहरा, 10 नवंबर दिवाली, 24 नवंबर गुरु नानक जयंती और 25 दिसंबर क्रिसमस। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज 1 मई को सुबह के सत्र के लिए बंद रहेगा, लेकिन शाम 5 बजे से रात तक इसमें कारोबार जारी रहेगा।

प्राकृतिक आपदा में कर्जदारों को राहत, आरबीआई के नए नियम लागू

नई दिल्ली।

प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित कर्जदारों को राहत देने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने नए नियम जारी किए हैं। इन नियमों के तहत बाढ़, भूकंप या अन्य आपदाओं से नुकसान झेलने वाले ग्राहकों को बैंक मोरटोरियम की सुविधा देंगे, जिससे उन्हें कुछ समय तक किस्त चुकाने से राहत मिलेगी। इसके अलावा जरूरतमंदों को अतिरिक्त कर्ज भी उपलब्ध कराया जाएगा, ताकि वे अपने व्यवसाय या आजीविका को फिर से शुरू कर सकें। आरबीआई ने बैंकों को निर्देश दिए हैं कि वे प्रभावित क्षेत्रों में लचीला रवैया अपनाएं और ग्राहकों को शीघ्र सहायता प्रदान करें।

इक्रा की चेतावनी- तेल, उर्वरक, गैस क्षेत्रों पर 80,000 करोड़ के घाटे का संकट

भू-राजनीतिक तनाव और लागत वृद्धि से वित्त वर्ष 27 में लाभप्रदता बुरी तरह प्रभावित

नई दिल्ली ।

रेटिंग एजेंसी इक्रा ने आगाह किया कि भू-राजनीतिक तनाव और वैश्विक आपूर्ति बाधाओं के कारण वित्त वर्ष 2026-27 तक भारत के प्रमुख डाउनस्ट्रीम क्षेत्रों को गंभीर वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। एजेंसी के अनुसार यदि वर्तमान घाटे का स्तर बना रहा, तो सरकारी तेल विपणन कंपनियों (ओएमसी) को अकेले एलपीजी बिक्री पर लगभग 80,000 करोड़ रुपये का भारी नुकसान हो सकता है। इक्रा ने बताया कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष और होर्मुज जलडमरूमध्य में व्यवधान ने अंतरराष्ट्रीय एलपीजी, कच्चे तेल और अन्य कच्ची सामग्री की कीमतों में तेज वृद्धि की है। इन दबावों के चलते, ओएमसी को

120-125 डॉलर प्रति बैरल कच्चे तेल पर पेट्रोल पर 14 रुपये और डीजल पर 18 रुपये प्रति लीटर का भी नुकसान होने का अनुमान है, जिससे उनकी लाभप्रदता बुरी तरह प्रभावित होगी। उर्वरक क्षेत्र को भी सल्फर और अमोनिया की बढ़ती कीमतों से जूझना पड़ रहा है, जिससे वित्त वर्ष 2027 में सब्सिडी की आवश्यकता 2.05 ट्रिलियन रुपये से 2.25 ट्रिलियन रुपये तक जा सकती है, जो मौजूदा बजटीय आवंटन से कहीं अधिक है।

इक्रा का मानना है कि सरकार को इस क्षेत्र की स्थिरता बनाए रखने के लिए सब्सिडी बढ़ानी होगी। सिटी गैस वितरण (सीजीडी) क्षेत्र में भी मुद्रा में गिरावट और गैस की ऊंची कीमतों से सीएनजी सेगमेंट के मार्जिन पर दबाव पड़ने की उम्मीद है, क्योंकि लागत पूरी तरह उपभोक्ताओं तक नहीं पहुंचाई जा सकेगी।

इन सभी कारकों से डाउनस्ट्रीम उद्योगों की लाभप्रदता प्रभावित होगी।

एआई को बढ़ावा देने हजारों कर्मियों की छंटनी करेगी कॉग्निजेंट

नई दिल्ली ।

आईटी सेवा क्षेत्र की दिग्गज कंपनी कॉग्निजेंट ने एक बड़े पुनर्गठन कार्यक्रम की घोषणा की है, जिसमें हजारों कर्मचारियों की छंटनी की आशंका है। कंपनी इस पर 20 से 32 करोड़ डॉलर खर्च करेगी। यह कदम अनिश्चित आर्थिक माहौल के बीच उत्पादकता और दक्षता बढ़ाने तथा कौशल की बदलती मांगों को पूरा करने के उद्देश्य से उठाया गया है। नैस्डैक पर सूचीबद्ध कॉग्निजेंट ने अपने प्रोजेक्ट लीप कार्यक्रम के तहत यह ऐलान किया है। इसके तहत अप्रैल से दिसंबर के बीच कंपनी कर्मचारियों को बर्खास्त करने पर 20 से 27 करोड़ डॉलर का मुआवजा और 3 से 5 करोड़ डॉलर का अतिरिक्त कार्मिक व्यय वहन करेगी। यह परियोजना बुधवार को पहली तिमाही के नतीजों के साथ घोषित की गई। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) क्षमताओं में अधिक निवेश करना, कर्मचारियों के कौशल को बढ़ाना और उन्हें बाजार की मांगों के अनुरूप ढालना है। इससे कंपनी के परिचालन मॉडल में सुधार होगा और उत्पादकता बढ़ेगी। कंपनी को

उम्मीद है कि इस साल उसे 20 से 30 करोड़ डॉलर की बचत होगी, जिससे मार्जिन में 20 से 40 आधार अंकों की वृद्धि होगी।

वारी एनर्जीज का चौथी तिमाही में मुनाफा 75 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली ।

ऊर्जा क्षेत्र की प्रमुख कंपनी वारी एनर्जीज लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2025-26 की चौथी तिमाही और पूरे वित्तीय वर्ष में शानदार वित्तीय प्रदर्शन दर्ज किया है। चौथी तिमाही में इसका एकीकृत शुद्ध लाभ करीब 75 प्रतिशत बढ़कर 1,126 करोड़ रुपये पर पहुँच गया, जबकि पूरे वित्तीय वर्ष में शुद्ध लाभ 3,884.15 करोड़ रुपये रहा। तिमाही के दौरान कुल आय दोगुनी से अधिक होकर 8,659.98 करोड़ रुपये तक पहुंच गई। बोर्ड ने 10 रुपये अंकित मूल्य वाले प्रति शेयर पर 2 रुपये (20 प्रतिशत) का अंतिम लाभांश देने की सिफारिश की है, जो शेयरधारकों की मंजूरी के अधीन है। इसके अतिरिक्त कंपनी 10,000 करोड़ रुपये तक की राशि पात्र संस्थागत नियोजन (क्यूआईपी) या अन्य माध्यमों से जुटाने की योजना बना रही है।

1 मई से सिगरेट 17 फीसदी तक हुई महंगी!

मुंबई ।

धूम्रपान करने वालों को सिगरेट की तलब अब उनके जेब पर और भारी पड़ने वाली है। प्रमुख तंबाकू कंपनियां आईटीसी और गाडफ्रे फि लिप्स 1 मई से सिगरेट के दाम में 17 फीसदी तक की बढ़ोतरी करने जा रही हैं। यह इस साल फरवरी में सरकार द्वारा उत्पाद शुल्क बढ़ाने के बाद दूसरी बड़ी कीमत वृद्धि होगी। दरअसल, 1 फरवरी को सरकार ने सिगरेट पर उत्पाद शुल्क में 30 से 40 प्रतिशत तक की वृद्धि की थी। शुरुआत में कंपनियों ने इस बढ़े हुए टैक्स का कुछ हिस्सा खुद वहन किया। लेकिन बिक्री में गिरावट और मुनाफे पर दबाव के चलते अब उन्होंने यह बोझ पूरी तरह ग्राहकों पर डालने का फैसला किया है। इस बढ़ोतरी का सीधा असर मशहूर ब्रांड्स पर दिखेगा। गोल्ड फ्लैक प्री मियम का एक पैक जो अभी लगभग 115 में मिलता है, वह बढ़कर करीब 135 रुपए तक पहुंच जाएगा।

इसी तरह, किंग साइज सिगरेट की प्रति स्टिक कीमत 20 से बढ़कर 25 से 28 रुपए के बीच हो सकती है। कीमतों में वृद्धि का असर बाजार में पहले ही दिख रहा है; अप्रैल में सिगरेट की बिक्री में करीब 20 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है, खासकर महंगे किंग साइज सेगमेंट में, क्योंकि लोग अब सस्ते विकल्प तलाश रहे हैं।

जनवरी-मार्च तिमाही में सोने की मांग 10 प्रतिशत बढ़कर 151 टन हुई डब्ल्यूजीसी

ऊंची कीमतों के बीच निवेश मांग में 54 फीसदी की वृद्धि, आभूषण खरीदारी 19 फीसदी घटी

नई दिल्ली ।

विश्व स्वर्ण परिषद (डब्ल्यूजीसी) की ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारत में इस साल जनवरी-मार्च तिमाही में सोने की कुल मांग 10 प्रतिशत बढ़कर 151 टन हो गई है। यह वृद्धि मुख्य रूप से निवेश मांग में मजबूत उछाल के कारण हुई है, जिसने आभूषणों की घटती खरीद की काफी हद तक भरपाई कर दी है।

रिपोर्ट दर्शाती है कि भारतीय स्वर्ण बाजार में अब आभूषणों के बजाय निवेश की ओर झुकाव बढ़ रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक तिमाही के दौरान सोने की छड़ों, सिक्कों और गोल्ड ईटीएफ के जरिए निवेश मांग में 54 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की गई, जो बढ़कर 82 टन हो गई। इसकी मुख्य वजह सोने की रिकॉर्ड ऊंची कीमतें रहीं, जिसने उपभोक्ताओं को निवेश के रूप में सोने की ओर आकर्षित किया।

हालांकि, ऊंची कीमतों का असर आभूषण मांग पर नकारात्मक रहा, जिसमें सालाना आधार पर 19 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई और यह 66 टन रह गई।

कीमत के प्रति संवेदनशील उपभोक्ता वर्ग पर विशेष रूप से इस गिरावट का प्रभाव देखा गया। डब्ल्यूजीसी ने पूरे वर्ष के लिए सोने की मांग 650-750 टन के बीच रहने का अनुमान जताया है, जबकि पिछले साल यह 712 टन थी।

मूल्य के लिहाज से इस तिमाही में सोने की मांग लगभग दोगुनी होकर 99,900 करोड़ रुपये तक पहुंच गई, जो पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 99 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।

डब्ल्यूजीसी के एक मुख्य अ धिकारी ने कहा कि भारत का सोना बाजार मात्रा के रुझान और मूल्य वृद्धि के बीच अंतर को दर्शाता है, जो रिकॉर्ड ऊंची कीमतों और बदलती उपभोक्ता प्राथमिकताओं से प्रभावित है। घरेलू सोने की कीमत इस तिमाही में सालाना आधार पर 81 प्रतिशत बढ़कर औसतन 1,51,108 रुपये प्रति 10 ग्राम के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में यह 83,375 रुपये थी।

सोने की छड़ों और सिक्कों की मांग 34 प्रतिशत बढ़कर 62 टन हो गई, जो 2013 के बाद पहली तिमाही का सबसे ऊंचा स्तर है। यह पारंपरिक रूप से आभूषण-प्रधान बाजार से एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत है।

एचयूएल का मुनाफा 20.96 प्रतिशत बढ़कर 2,994 करोड़ पहुंचा

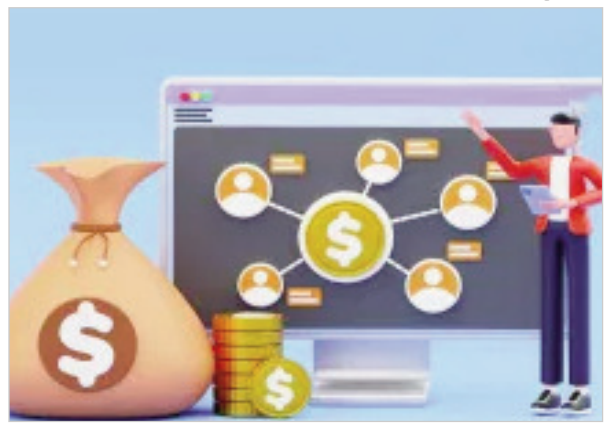

नई दिल्ली ।

दैनिक उपयोग की घरेलू वस्तुएं (एफएमसीजी) बनाने वाली प्रमुख कंपनी हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड (एचयूएल) का जनवरी-मार्च तिमाही में मुनाफा 20.96 प्रतिशत बढ़कर 2,994 करोड़ रुपये हो गया। कंपनी का मुनाफा एक साल पहले की समान अवधि में 2,475 करोड़ रुपये रहा था। एचयूएल ने आय का विवरण देते हुए बयान में कहा कि समीक्षाधीन तिमाही में उत्पादों की बिक्री से राजस्व 2025-26 में 8.13 प्रतिशत बढ़कर 16,172 करोड़ रुपये रहा।

कुल खर्च 7.2 प्रतिशत बढ़कर 16,615 करोड़ रुपये हो गया। वहीं, अन्य आय सहित कुल आय 5.01 प्रतिशत बढ़कर 16,580 करोड़ रुपये रही। यह 12 तिमाहियों में उसकी सबसे तेज वृद्धि है।समूचे वित्त वर्ष 2025-26 के लिए हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड का मुनाफा 15,059 करोड़ रुपये रहा जिसमें 'न्यूट्रिशनलैब' के विनिवेश से सहायता मिली।

इस दौरान कुल आय 4.6 प्रतिशत बढ़कर 65,219 करोड़ रुपये हो गई। कंपनी के एक अधिकारी ने कहा कि वित्त वर्ष 2025-26 में अनुकूल व्यापक आर्थिक नीतियों के कारण मांग का माहौल बेहतर रहा।

कंपनी ने वृद्धि को तेज करने के लिए खंड को मजबूत करने, निवेश बढ़ाने, मांग सृजन क्षमताओं को सुदृढ़ करने और संगठन को सरल बनाने जैसे कदम उठाए। उन्होंने कहा कि बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों के कारण जिंसों और मुद्रा में उतार-चढ़ाव बना हुआ है।

रोब्लॉक्स ने भारत विस्तार के लिए सुनील राव को एमडी नियुक्त किया

साझेदारियों और क्रिएटर इकोसिस्टम को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करेंगे

नई दिल्ली।

अग्रणी गेमिंग प्लेटफॉर्म रोब्लॉक्स ने भारत में अपनी स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से सुनील राव को अपनी भारतीय इकाई का प्रबंध निदेशक (एमडी) नियुक्त किया है।

कंपनी ने गुरुवार को इस महत्वपूर्ण नियुक्ति की घोषणा की, जिसके तहत राव मई से कार्यभार संभालेंगे। राव देश में रोब्लॉक्स के वरिष्ठ प्रतिनिधि और बाजार प्रमुख के रूप में कार्य करेंगे। उनकी मुख्य जिम्मेदारियों में भारत में कंपनी की रणनीति का दैनिक क्रियान्वयन, स्थानीय उपस्थिति को मजबूत करना, साझेदारियों को बढ़ावा देना और 'क्रिएटर इकोसिस्टम' को समर्थन देना शामिल होगा।

रोब्लॉक्स के अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष झेन फांग ने भारत को वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण बाजार बताया और राव की विभिन्न बाजारों में काम करने की विशेषज्ञता को कंपनी की अगली विकास यात्रा के लिए उपयुक्त करार दिया।

इस नियुक्ति से पहले राव अमेजन वेब सर्विसेज (एडब्ल्यूएस) में नेतृत्व दल का हिस्सा थे, जहां उन्होंने एशिया-प्रशांत और जापान क्षेत्र में रणनीति और कॉरपोरेट बिजनेस डेवलपमेंट कार्यों का नेतृत्व किया। अपनी नई भूमिका पर राव ने देशभर के डेवलपर और क्रिएटर को सशक्त बनाने वाले एक जीवंत और समावेशी परिवेश बनाने की अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

उन्होंने बच्चों की सुरक्षा और

भारत के नियामकीय ढांचे के अनुरूप काम करने को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल बताया, ताकि एक भरोसेमंद मंच के माध्यम से जिम्मेदारी से आगे बढ़ा जा सके।

नीम का जूस अत्यधिक और गलत तरीके से सेवन से शरीर को हो सकता है नुकसान

नीम का जूस फायदेमंद होने के बावजूद, इसका अत्यधिक और गलत तरीके से सेवन शरीर में रूखापन, जोड़ों में दर्द और कमजोरी पैदा कर सकता है, इसलिए इसे अपनी रोजाना की आदत बनाना नुकसानदायक हो सकता है।

खराब लाइफस्टाइल और गलत खानपान के कारण लोग अपनी सेहत का ध्यान बिल्कुल भी नहीं रखते हैं। सेहतमंद रहने के लिए लोग ज्यादातर महंगी डाइटिंग और फैंसी चीजों की तरफ जाते हैं। लेकिन हमारे आसपास मौजूद पेड़-पौधों, पत्तों और फूलों के औषधीय गुणों के बारे में जान लें और इन्हें डाइट में शामिल करें,तो आधी से ज्यादा बीमारियां से बचा जा सकता है। आयुर्वेद में नीम के पत्तों को किसी खजाना माना गया है। खून को साफ करने के लिए नीम के पत्ता सबसे अच्छा माना जाता है, वजन कम करने और शरीर को डिटॉक्स करने में नीम बेहद ही फायदेमंद होता है। कुछ लोग रोजाना नीम के पत्तों का जूस पीते हैं, लेकिन वे यह नहीं जानते हैं किन लोगों के लिए यह जूस फायदेमंद नहीं होता है। और अगर आप रोजाना इसके जूस पीने को अपनी सबसे हेल्दी आदत मान रही हैं, तो आप गलत है। नीम के पत्तों के जूस पीने के सही तरीके और मात्रा में पीना चाहिए। आइए आपको इस बारे में बताते हैं।

हेल्थ के एक्सपर्ट बताते हैं कि नीम के पत्तों का कड़वा स्वाद हमारे शरीर में रूखापन लेकर आता है। यदि आप इसे बिना बैलेंस के रोजाना डाइट में शमिल करते हैं, तो ये शरीर के हर सेल में मौजूद नमी को बाहर खींच लेता है।

– नीम की तासीर की प्रकृति ठंडी और शुष्क होती है और ऐसे में इसे लंबे समय तक लेने से बॉडी में ड्राईनेस पैदा हो सकती है।

– अगर आप अत्यधिक कड़वी चीजों का सेवन करते हैं, तो ब्लड, मसल्स और फैट समेत शरीर के सात मुख्य टिश्यूज कमजोर होने लगते है। जिससे हेल्दी डाइट लेने के बाद भी आपको कमजोरी और थकान हो सकती है।

– लोग सोचते हैं कि नीम का जूस पीकर हमारी बॉडी डिटॉक्स होगी, लेकिन असल में हमारे टिश्यू मास कम होने लगता है।

– कड़वा रस अधिक शरीर में पहुंचता है, तो इसका असर वात रस पर पड़ता है, जिससे ऑयल कम होने लगता है और जोड़ों में अकड़न और दर्द हो सकती है।

– नीम का जूस पीने से स्किन अधिक ड्राई हो जाते हैं और समय से पहले एजिंग के साइन्स नजर आ सकते हैं।

नीम का जूस पीने का सही तरीका

– जब आप नीम का जूस पिएं तो साथ में घी जरुर लें। ऐसा करने से आपकी सभी रुखे हर्ब्स के साथ करना चाहिए ताकि शरीर में ड्राईनेस ने आए।

– रोजाना नीम का जूस 15–30 मिली से ज्यादा न लें।

– एक्सपर्ट के सलाह लेकर ही नीम का जूस पिएं।

पाचन सुधारकर पेट की तकलीफ दूर करता है यह घरेलू उपाय

पेट में फंसी गैस और ब्लोटिंग से तुरंत राहत पाने के लिए दवाओं की जगह अपनाएं यह असरदार देसी ड्रिंक। नींबू, हींग और काली मिर्च से बना यह घरेलू उपाय सिर्फ 2 मिनट में पाचन सुधारकर पेट की तकलीफ दूर करता है।

बिजी लाइफस्टाइल और गलत खानपान के कारण कई बार हम सभी पेट संबंधित परेशनियों से गुजरना पड़ता है। एसिडिटी, ब्लोटिंग, गैस इन सभी समस्याओं से हम सभी कभी न कभी जरुरत महसूस करते हैं। खाना खाने के बाद अचानक से पेट टाइट हो जाना, डकार न आना या असहज महसूस होना ये सभी डाइजेशन की गड़बड़ी का संकेत होता है। इन परेशनियों के चक्कर में कई लोग तो दवाओं का सेवन करने लग जाते हैं, हर बार दवा लेना भी ठीक नहीं होता है। अब आपकी किचन में ही इसका असान और असरदार इलाज छिपा हुआ है। इस लेख में हम आपको ऐसी देसी ड्रिंक के बारे में बताने जा रहे है, जो गैस से तुरंत आराम देती है।

गैस दूर करने वाले ड्रिंक की सामग्री

– नींबू का रस– 1/2

– हींग– 1 चुटकी, – काली मिर्च– 1 चुटकी

– गुनगुना पानी– 1/2 कप

गैस के लिए मैजिक ड्रिंक कैसे बनाएं और पिएं?

– इसे बनाने के लिए सभी चीजों को अच्छी तरह से मिलाएं।

– धीरे–धीरे छोटे घूंट में पिएं।जड़ी–बूटियां और मसाले

– इसे खाने के बाद या जब भी गैस महसूस हो, तब इसका सेवन कर सकते हैं।

ये ड्रिंक कैसे काम करती है?

– यह ड्रिंक फंसी हुई गैस को बाहर निकालती है।

– पेट की सूजन और भारीपन कम करती है।

– डाइजेशन को तुरंत एक्टिव करती है।

ड्रिंक में मौजूद चीजों के फायदे

– गुनगुने पानी के साथ नींबू का रस लेने से ब्लोटिंग की समस्या कम होती है। यह डाइजेस्टिव जूस को बढ़ाता, इसके साथ ही फैट के डाइजेशन को आसान बनाता है और शरीर को हाइड्रेट रखने में मदद करता है।

– गर्म पानी पीन से ब्लोटिंग के लिए आसान और नेचुरल उपाय है। यह डाइजेशन को बेहतर करता है। यह आंतों की मसल्स को रिलैक्स करता है और गुब्बारे की तरह फूली गैस को बाहर निकालता है।

– आयुर्वेद में हींग को गैस, अपच और ब्लोटिंग के लिए पारंपरिक उपाय है क्योंकि यह पेट में अग्नि को बढ़ाती है। यह एकदम कर्मिनेटिव की तरह काम करता है, डाइजेशन एंजाइम्स को एक्टिव करता है और पेट में फंसी गैस से राहत दिलाता है।छुट्टी, पार्टी वगैरह में इस्तेमाल होने वाले प्रॉडक्ट

– काली मिर्च डाइजेशन को बेहतर बनाती है और ब्लोटिंग को कम करती है। इसमें मौजूद पिपेरिन डाइजेशन एंजाइम्स को बढ़ाता है, प्रोटीन को तोड़ता है और गैस कम करता है।

– इसके साथ ही यह हल्के मूत्रवर्धक की तरह काम करके शरीर में पानी की अतिरिक्त मात्रा को भी कम करता है। इसका अधिक मात्रा में सेवन करने से आपको पेट में जलन हो सकती है।

गर्मी में इन 5 फलों से बढ़ सकती है हीट और ब्लोटिंग

गर्मियों का मौसम आते ही लोग ताजे और रसीले फलों का सेवन करते है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि कुछ फल ऐसे भी होते हैं जो इस मौसम में शरीर को फायदा देने के बजाय नुकसान पहुंचा सकते हैं? हाल ही में जनरल फिजीशियन डॉक्टर ने जानकारी दी थी की कुछ फलों का सेवन गर्मियों में सीमित मात्रा में ही करना चाहिए। उनके अनुसार, गर्मी के मौसम में शरीर पहले से ही डिहाइड्रेशन और बढ़ते तापमान से जूझ रहा होता है। ऐसे में अगर गलत फल, गलत समय या जयादा मात्रा में खा लिया जाए तो इससे ब्लोटिंग, एसिडिटी, शुगर बढ़ना और थकान जैसी समस्याएं हो सकती हैं। जानें कोन से फल नहीं खाने चाहिए।

गर्मियों में किन फलों से रखें दूरी?

चीकू

चीकू खाना खास तोर पर सभी पसंद होता है। चीकू एक मीठा और स्वादिष्ट फल है, जिसे सही मात्रा में खाने पर शरीर को कई फायदे मिलते हैं। इसमें फाइबर, विटामिन और मिनरल्स होते हैं। पर क्या आप जानते है की चीकू में प्राकृतिक शुगर की मात्रा काफी अधिक होती है। यह फल भारी होता है और अधिक सेवन से ब्लड शुगर बढ़ने और पेट में भारीपन की समस्या हो सकती है।

अनानास

अनानास एक स्वादिष्ट और रसीला फल है, जो गर्मियों में शरीर को कई तरह से फायदा पहुंचाता है। इसमें विटामिन ष्ट, फाइबर और खास एंजाइम (ब्रोमेलिन) पाए जाते हैं, जो सेहत के लिए बहुत लाभकारी हैं। पुर गर्मियों मे ज्यादा अनानास खाने से स्वभाव एसिडिक होता है। इसे ज्यादा खाने से एसिडिटी, पेट में जलन और ब्लोटिंग हो सकती है। कुछ लोगों में यह स्किन से जुड़ी समस्याएं भी बढ़ा सकता है।

कटहल

कटहल एक पौष्टिक और देसी सुपरफूड माना जाता है। इसका स्वाद जितना अलग होता है, इसके फायदे भी उतने ही खास होते हैं। इसमें फाइबर, विटामिन ष्ट, पोटैशियम और एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। पर कहा जाता है की कटहल एक भारी फल है, जो पचने में समय लेता है। गर्मियों में इसका अधिक सेवन गैस, अपच और पेट फूलने की समस्या पैदा कर सकता है।

आम

आम को 'फलों का राजा' कहा जाता है और यह सिर्फ स्वाद में ही नहीं, बल्कि सेहत के लिए भी बेहद फायदेमंद होता है। इसमें विटामिन ए सी, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में होते हैं, जो शरीर को कई तरह से लाभ पहुंचाते हैं। लेकिन इसका अधिक सेवन नुकसानदेह हो सकता है। डॉक्टर के अनुसार, ज्यादा आम खाने से शरीर में गर्मी, शुगर लेवल बढ़ना और स्किन प्रॉब्लम्स हो सकती हैं। इसलिए इसे सीमित मात्रा में ही खाना चाहिए।

अंगूर

अंगूर एक छोटा लेकिन बेहद पौष्टिक फल है, जो स्वाद के साथ-साथ शरीर को कई जरूरी पोषक तत्व देता है। इसमें विटामिन सीके, एंटीऑक्सीडेंट्स और नेचुरल शुगर भरपूर मात्रा में होती है। लेकिन अंगूर में शुगर की मात्रा अधिक होती है। अधिक सेवन से गट में फर्मेंटेशन, गैस और ब्लोटिंग की समस्या हो सकती है। साथ ही, ठीक से साफ न करने पर इसमें मौजूद केमिकल्स भी नुकसान पहुंचा सकते हैं।

गर्मियों के लिए कौन से फल हैं बेहतर?

डॉक्टरों के अनुसार, इस मौसम में ऐसे फलों का चयन करना चाहिए जो शरीर को ठंडक और हाइड्रेशन दें:

तरबूज: लगभग 90% पानी से भरपूर, शरीर को ठंडा और हाइड्रेट रखता है

खरबूजा: पोटैशियम और विटामिन ए से भरपूर, ब्लड प्रेशर संतुलित रखने में मददगार

पपीता: पाचन सुधारने और गट हेल्थ के लिए फायदेमंद

संतरा: विटामिन सी से भरपूर, इम्यूनिटी और इलेक्ट्रोलाइट बैलेंस बनाए रखता है।

गर्मी से बचने के लिए इन चीजें का रखे ध्यान

डॉक्टरों का कहना है कि किसी भी फल को पूरी तरह छोड़ने की जरूरत नहीं है, लेकिन मात्रा और समय का ध्यान रखना बेहद जरूरी है।

फल हमेशा सीमित मात्रा में खाएं, खाली पेट ज्यादा मीठे फल खाने से बचें, दिनभर में 1–2 कटोरी फल पर्याप्त हैं और पर्याप्त पानी पीना न भूलें।

गर्मी में सही फल का चुनाव आपकी सेहत को बेहतर बना सकता है, जबकि गलत आदतें परेशानी बढ़ा सकती हैं। इसलिए इस मौसम में हाइड्रेटिंग और हल्के फल ही अपनी डाइट में शामिल करें और भारी व ज्यादा मीठे फलों का सेवन सीमित रखें।

अच्छी नहीं है बार- बार उंगलियां चटकाने की लत, यह धीरे-धीरे शरीर का कर देती है नुकसान

चाहे आपकी एक उंगली हो या सभी इसे चटकने से आवाज जरूर आती है। बहुत से लोग तो आराम से बैठकर अपनी उंगलियां चटकाने लगते हैं, इससे उन्हें लगता है कि इससे उंगलियों को आराम मिलता है। उंगलियों के चटकने का अध्ययन 60 वर्षों से अधिक समय से किया जा रहा है। उंगलियों चटकने या आवाज़ आने के कई कारण बताए जाते हैं। विशेषज्ञों ने तो इसे समझाने के लिए गणित का भी इस्तेमाल किया है, लेकिन इसका सटीक कारण अज्ञात है।

हालांकि जो लोग बार-बार उंगलियां चटकाते हैं उन्हें सावधान रहने की जरुरत है, ये उनके लिए मुसीबत खड़ी कर सकता है।

उंगलियों चटकने सें क्यों आती है आवाज?

उंगलियों के जोड़ों का चटकना तब होता है जब कोई व्यक्ति किसी जोड़ पर खिंचाव या तनाव डालता है, जिससे जोड़ में चटकने या आवाज़ आने का एहसास होता है। आमतौर पर दर्द रहित, उंगलियों के जोड़ों का चटकना हानिकारक नहीं है। लेकिन अगर आपकी नसें ऊतकों के ऊपर से फिसलती हैं, तो भी चटकने की आवाज़ आ सकती है। जब आप अपनी उंगलियों के जोड़ों को फैलाते हैं, तो वे फिसलती और समायोजित होती हैं। उम्र बढ़ने के साथ-साथ मांसपेशियों में बदलाव और उनके काम करने के तरीके के कारण ऐसा हो सकता है।

क्या उंगलियां चटकाना आपके लिए नुकसानदायक है?

हो सकता है आपने सुना हो कि उंगलियां चटकाने से गठिया हो सकता है। लेकिन रिसर्च में यह बात साबित नहीं हुई है। डॉक्टर कहते हैं कि– ज्यादातर लोगों के लिए यह पूरी तरह से सुरक्षित है, इससे गठिया नहीं होता। उंगलियों के जोड़ों को चटकाने से जोड़ों पर इतना जोर नहीं पड़ता कि वे अपनी जगह से हट जाएं या उंगलियों को नुकसान पहुंचे। हालांकि अगर आप बहुत जोर से दबाते हैं या आपको पहले से ही जोड़ों की कोई समस्या है, तो दर्द या खिंचाव हो सकता है।

ये संकेत दिखते ही हो जाएं सतर्क

जोड़ों को चटकाने के बाद दर्द, सूजन या जोड़ों की हरकत में कमी किसी दूसरी समस्या के संकेत हो सकते हैं, न कि जोड़ों को चटकाने की आदत के कारण। अगर जोड़ों को चटकाने से कभी दर्द, अकड़न या सूजन होती है, तो आपको किसी हेल्थ केयर प्रोवाइडर से संपर्क करना चाहिए। अपनी उंगलियों के जोड़ों को चटकाना आमतौर पर नुकसानदायक नहीं होता, लेकिन अगर यह आपकी कोई ऐसी आदत बन गई है जिससे आपको या दूसरों को परेशानी होती है, या अगर आपको जोड़ों से जुड़ी कोई और समस्या है और उंगलियां चटकाने से आपको दर्द, अकड़न, खिंचाव या सूजन महसूस होती है, तो आपको यह आदत छोड़ देनी चाहिए।

इस आदत को छोड़ने के टिप्स

इस बात पर ध्यान दें कि आप कब और क्यों अपनी उंगलियां चटकाते हैं। इस बात की जानकारी होने से आपको अपना व्यवहार बदलने में मदद मिल सकती है। पता लगाएँ कि ऐसी कौन सी चीज़ है जो आपको अपनी उंगलियां चटकाने के लिए उकसाती है। ऐसी कौन सी बात है जो आपको ऐसा करने के लिए प्रेरित करती है। अपने हाथों को व्यस्त रखने के लिए स्ट्रेस बॉल या कोई छोटा फ़िजेट टूल इस्तेमाल करें। उंगलियां चटकाने के बजाय अपनी उंगलियों या कलाइयों को स्ट्रेच करें। एक ही बार में पूरी तरह से छोड़ने के बजाय धीरे-धीरे करके इस आदत को कम करें। कुछ लक्ष्य या सीमाएं तय करें, जैसे कि काम से जुड़ी मीटिंग के दौरान उंगलियां न चटकाना।

आईपीएल में आज होगा राजस्थान रॉयल्स और दिल्ली कैपिटल्स का मुकाबला

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान रॉयल्स की टीम शुक्रवार को आईपीएल के 43 वें मैच में अपने घरेलू मैदान पर दिल्ली के खिलाफ बड़ी जीत दर्ज करने के इरादे से उतरेगी। अब तक के प्रदर्शन को देखा जाये तो रॉयल्य जीत की प्रबल दावेदार है। उसने अब तक 6 मैच जीते हैं और 12 अंक लेकर वह तालिका में तीसरे स्थान पर है और उसका लक्ष्य इस मैच को जीतकर प्लेऑफ के लिए अपनी दावेदारी और पक्की करना रहेगा। पिछले मैच में उसने बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए पंजाब किंग्स को हराया था जिससे उसका मनोबल बढ़ा हुआ है। उन्होंने जोरदार वापसी की है। कप्तान रियान पराग की राजस्थान के पास वैभव सूर्यवंशी , यशस्वी जायसवाल जैसे बल्लेबाज, वहीं जोफा आर्चर जैसे तेज गेंदबाज और स्पिनर के तौर पर रविन्द्र जडेजा हैं1

वहीं दूसरी और अक्षर पटेल की कप्तानी में उतरी दिल्ली कैपिटल्स ने अब तक केवल 3 मैच जीते हैं और उसके 6 अंक हैं इससे वह अंक तालिका में सातवें स्थान पर है। पिछले मैच में वह रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ केवल 75 रन पर ही सिमट गयी थी। जिससे उसके बल्लेबाज इस मैच में भी दबाव में होंगे। उसकी ओर से अब तक केवल केएल राहुल ही बड़ी पारियों खेल पाये हैं। वहीं अन्य बल्लेबाजों डेविड मिलर, ट्रिस्टन स्टब्स और समीर रिजवी के प्रदर्शन में निरंतरता की कमी रही है।

उसके लिए राहत की बात केवल इतनी सी है कि तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क फिट हो गये हैं और वह वापसी के लिए तैयार हैं। स्टार्क अगर खेलते हैं तो दिल्ली की गेंदबाजी मजबूत होगी। इसके अलावा वह लुंगी एनगिडी एंटीगिटी के नहीं खेलने से होने वाली कमी भी भर देंगे। एंटीगिटी चोटिल होने के कारण इस मैच में नहीं खेलेंगे।

आंकड़ों पर नजर डालें तो अब तक दोनो टीमों के बीच 29 मैच हुए हैं इसमें से राजस्थान ने 15 जबकि दिल्ली ने 14 जीते हैं।

टीम इस प्रकार है

राजस्थान रॉयल्स: रियान पराग (कप्तान), शिमरोन हेटमायर, यशस्वी जयसवाल, ध्रुव जुरेल, लुआन-ड्रे प्रिटोरियस, वैभव सूर्यवंशी, डोनोवन फरेरा, रविंद्र जडेजा, जोफा आर्चर, नांद्रे बर्गर, तुषार देशपांडे, क्वेना मफाका, संदीप शर्मा, युद्धवीर सिंह चरक, रवि बिश्नोई, अमन राव पेराला, एडम मिल्ने, कुलदीप सेन, दासुन शनाका, सुशांत मिश्रा, विग्नेश मिश्रा पुथुर, रवि सिंह, ब्रिजेश शर्मा, शुभम दुबे, ।

दिल्ली कैपिटल्स: अक्षर पटेल (कप्तान), लोकेश राहुल, करुण नायर, डेविड मिलर, पथुम निसांका, साहिल पारख, पृथ्वी साव, अभिषेक पोरेल, ट्रिस्टन स्टब्स, समीर रिजवी, आशुतोष शर्मा, विपराज निगम, अजय मंडल, त्रिपुराना विजय, माधव तिवारी, आकिब डार, नितीश राणा, टी. नटराजन, मुकेश कुमार, दुष्मंता चमीरा, काइल जैमीसन, कुलदीप यादव और मिचेल स्टार्क।

अभिषेक ऑरेंज कैप और ईशान मलिंगा पर्पल कैप की सूची में शीर्ष पर पहुंचे

मुम्बई (एजेंसी)। मुम्बई इंडियंस और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच हुए आईपीएल मुकाबले के बाद एक बार फिर ऑरेंज और पर्पल कैप की सूची में बदलाव आया है। अब एक बार फिर सनराइजर्स के सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा सबसे अधिक रनों के लिए मिलने वाली ऑरेंज कैप की सूची में नंबर एक आ गये हैं। वहीं राजस्थान रॉयल्स के वैभव सूर्यवंशी तीसरे नंबर पर खिसक गये हैं। अभिषेक ने मुम्बई के खिलाफ मैच में 24 गेंदों में 45 रन बनाये। इससे अब उनके कुल 425 रन हो गये हैं। वहीं सनराइजर्स के ही हेरनिक क्लासेन 414 रनों के साथ ही दूसरे और राजस्थान के वैभव 400 रन के साथ तीसरे स्थान पर हैं। केएल राहुल चौथे और विराट कोहली पांचवे नंबर पर हैं।

वहीं दूसरी और सबसे अधिक विकेट के लिए मिलने वाले पर्पल कैप के लिए सनराइर्स के ईशान मलिंगा नंबर एक पर पहुंच गये हैं। ईशान ने अब तक 15 विकेट लिए हैं। मुम्बई इंडियंस के खिलाफ ईशान ने एक विकेट लिया था। वहीं आरसीबी के भुवनेश्वर कुमार, रॉयल्स के जोफा आर्चर और चेन्नई सुपर किंग्स के अंशुल कम्बोज तीनो ही 14-14 विकेट के साथ ही दूसरे तीसरे और चौथे स्थान पर हैं। हहैं। इसके बाद 13 विकेट के साथ लखनऊ सुपर जायंट्स के प्रिंस यादव 13 विकेट के साथ ही पांचवे नंबर पर हैं।

केविन पीटरसन की दक्षिण अफ्रीका को अपील, 2027 विश्व कप के लिए इस प्लेयर को रिटायरमेंट वापस लेने के लिए मनाएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर केविन पीटरसन ने दक्षिण अफ्रीकी टीम मैनेजमेंट से अपील की है कि वे अपने घरेलू मैदान पर ICC क्रिकेट वर्ल्ड कप 2027 का खिताब जीतने की कोशिश में हेनरिक क्लासेन को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से रिटायरमेंट वापस लेने के लिए मनाएं। क्लासेन ने पिछले साल जून में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से रिटायरमेंट ले लिया था। वह मौजूदा इंडियन प्रीमियर लीग (IPL) सीजन में सनराइजर्स हैदराबाद (SRH) के साथ शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। अब तक वह इस सीजन में दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। उन्होंने 9 पारियों में 59.14 की औसत और 157.41 के स्ट्राइक रेट से 414 रन बनाए हैं, जिसमें 4 अर्धशतक शामिल हैं।

गुरुवार को X पर लिखते हुए पीटर्सन ने कहा, 'दक्षिण अफ्रीका ने कभी क्रिकेट वर्ल्ड कप नहीं जीता है! आज सुबह दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट बोर्ड की तरफ से हेनरिक क्लासेन को एक फोन कॉल जाना चाहिए, जिसमें उनसे पूछा जाए कि क्या वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी कर सकते हैं और अपना पहला वर्ल्ड कप जीतने के अभियान में एक अहम भूमिका निभा सकते हैं, जो अगले साल दक्षिण अफ्रीका में ही होगा।'

क्लासेन का अंतरराष्ट्रीय रिटायरमेंट वापस लेना, हालांकि यह पूरी तरह से उन्हीं पर निर्भर करता है, लेकिन यह पूरी तरह से असंभव भी नहीं है; क्योंकि पिछले साल विकेटकीपर-बल्लेबाज क्विंटन डी कॉक ने भी इस साल के टी20 वर्ल्ड कप 2026 और 2027 के घरेलू वर्ल्ड कप में खेलने के लिए व्हाइट-बॉल क्रिकेट से अपना रिटायरमेंट वापस ले लिया था और तब से उन्होंने कुछ बेहतरीन प्रदर्शन किए हैं।

क्लासेन ने 2018-25 तक फैले अपने सात साल के अंतरराष्ट्रीय करियर में 122 मैचों में 32.45 की औसत और 117.40 के स्ट्राइक रेट से 3,245 रन बनाए, जिसमें चार शतक, 16 अर्धशतक और 174 का सर्वश्रेष्ठ स्कोर शामिल है। हालांकि उनका टेस्ट करियर छोटा रहा जिसमें उन्होंने 4 मैचों में सिर्फ़ 104 रन बनाए लेकिन क्लासेन प्रोटियाज के लिए एक मूल्यवान व्हाइट-बॉल क्रिकेटर साबित हुए। उन्होंने 60 वनडे मैचों में 43.69 की औसत और 117 से ज्यादा के स्ट्राइक रेट से 2141 रन बनाए। इसमें चार शतक और 11 अर्धशतक शामिल हैं और 56 पारियों में उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 174 रन रहा। टी20आई में उन्होंने 58 मैचों की 53 पारियों में 23.25 की औसत और 141 से ज़्यादा के स्ट्राइक रेट से 1,000 रन बनाए। इसमें पांच अर्धशतक शामिल हैं और उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 81 रन रहा।

मुम्बई को प्लेऑफ के लिए जीतने होंगे कम से कम पांच मैच

मुम्बई (एजेंसी)। मुम्बई इंडियंस आईपीएल के 19 में सत्र में अबतक अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पायी है और उसे 8 में से 6 मैचों में हार का सामना करना पड़ा है। इससे मुम्बई के प्लेऑफ में पहुंचने की संभावनाएं काफी कम हो गयी हैं हालांकि ये समाप्त नहीं हुई है। प्लेऑफ के लिए अब मुम्बई को बचे हुए सभी 6 मैच जीतने होंगे। इसमें अगर वह सफल रही तो उसे उसके 16 अंक हो जाएंगे और उसके लिए प्लेऑफ की राह खुली रहेगी। अभी टीम 4 अंक के साथ ही 9वें स्थान पर है। टीम को लीग स्तर पर अभी 6 मैच और खेलने है। उसका रेट में भी काफी कम है जिससे भी उसे नुकसान हुआ है। उसे इस सत्र में प्लेऑफ के लिए अब कम से कम 14 अंकों की जरूरत है। इसके अलावा उसे अपने रनरेट में भी सुधार करना होगा।

ऐसे में टीम अगर शेष 6 मैचों में से 5 भी जीतती है तो भी उसे प्लेऑफ की संभावनाएं बनी रहेंगी। वहीं अगर वह केवल 4 मैच जीतती है और दो में हारती है तो बाहर हो जाएगी। इस सत्र में अब तक जिस प्रकार से मुम्बई का प्रदर्शन रहा है उससे उसके लगातार मैच जीतने की संभावनाएं कम ही हैं। गत दिवस हुए मैच में उसे 243 रनों का बड़ा स्कोर बनाने के बाद भी सनराइजर्स हैदराबाद के हाथों हार झेलनी पड़ी। टीम की हार का कारण बल्लेबाजों और गेंदबाजों के प्रदर्शन में निरंतरता की कमी है। जिससे टीम नीचे आयी है।

बीसीसीआई ने रियान पराग पर ई-सिगरेट सेवन के लिए जुर्माना लगाया

मुम्बई । राजस्थान रॉयल्स के कप्तान रियान पराग को इलेक्ट्रानिक सिगरेट (वेप्स) का सेवन करना भारी पड़ा है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने इससे आचारसंहित का उल्लंघन मानते हुए 'स्मोकिंग एक्ट के तहत ही पराग पर मैच फीस का 25 फीसदी जुर्माना लगाया है। इसके अलावा उनके खाते में एक नकारात्मक अंक भी जोड़ा गया है। इससे पहले बोर्ड ने उन्हें नोटिस भेजा था। उन पर खिलाड़ी आचार संहित के नियम 2.1 के तहत लेवल 1 का अपराध लगाया गया है। जो आचारसंहित का के पालन से जुड़ा है। पराग को पंजाब किंग्स के खिलाफ आईपीएल मैच के दौरान ड्रेसिंग रूम के अंदर स्मोकिंग करते हुए देखा गया था। इसका एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। इसके बाद से ही वह आलोचना का शिकार हो रहे थे। वहीं बोर्ड और राजस्थान रॉयल्स प्रबंधन के सूत्रों के अनुसार पराग को गुरुवार सुबह नोटिस दिया गया था। पराग ने इस मामले में जुर्माना भरना स्वीकार कर लिया है। ऐसे में अब इस मामले में आगे कार्रवाई नहीं होगी। ये दूसरी बार है जब रॉयल्स विवादों में आई है। इससे पहले टीम मैनेजर को भी डगआउट में मोबाइल का प्रयोग करते देखा गया था।

वैभव के पास दिल्ली कैपिल्स के खिलाफ मुकाबले में पोलार्ड का रिकार्ड तोड़ने का अवसर

मुम्बई (एजेंसी)। राजस्थान रायल्स की टीम अब एक मई शुक्रवार को दिल्ली कैपल्स से जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में खेलेगी। इस मैच में सभी की नजरें राजस्थान के उभरते बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी पर रहेंगी। वैभव इस मैच में सबसे तेज 100 छक्के लगाने वाले खिलाड़ी बन सकते हैं। इसके लिए उन्हें केवल एक छक्के की जरुरत है। अगर वैभव इसमें सफल रहे तो वह किरोन पोलार्ड का सबसे तेज 100 छक्के लगाने का रिकार्ड तोड़ देंगे। पंजाब किंग्स के खिलाफ हुए मैच में वैभव ने पांच छक्के लगाये थे। इन पांच छक्कों के साथ ही

उनके अब टी20 की 27 पारियों में कुल 99 छक्के हो गए हैं। टी20 में सबसे तेज 100 छक्के लगाने का विश्व रिकॉर्ड अभी पोलार्ड के नाम है। उन्होंने 843 गेंद में यह उपलब्धि हासिल की थी। वहीं सूर्यवंशी ने अब तक 511 गेंदें ही खेली हैं। ऐसे में उनका नंबर एक पर आना तय है।

वैभव ने आईपीएल सत्र की शुरुआत साल 2025 में की थी। तब वह केवल 14 साल की उम्र में खेलने उतरे थे। इस प्रकार वह सबसे कम उम्र में डेब्यू करने वाले खिलाड़ी बने थे। तब उन्होंने लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ खेलते हुए पहली ही गेंद पर छक्का लगाया था। वहीं इस सत्र में उन्होंने जसप्रीत बुमरार और पैट कमिंस जैसे गेंददाजों पर भी छक्के लगाये हैं। इसके अलावा जोश हेजलवुड, अर्शदीप सिंह सहित कई गेंदबाज भी वैभव से बच नहीं पाये हैं।

वैभव ने इस सत्र में साकिब हुसैन की गेंद पर छक्का लगाकर सिर्फ 36 गेंद में अपना शतक पूरा किया था। ये लीग का तीसरा सबसे तेज शतक रहा है। उन्होंने पिछले साल गुजरात टाइटंस के खिलाफ 35 गेंद में ही शतक लगा दिया था। वहीं क्रिस गेल के नाम आईपीएल इतिहास में सबसे तेज शतक का रिकॉर्ड है। उन्होंने 30 गेंद में 100 रन बनाए थे। वैभव टी20 में सबसे कम उम्र में 1000 रन बनाने वाले खिलाड़ी भी हैं।

38 के हुए रोहित को जन्मदिन पर मिली बधाई

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान रोहत शर्मा आज 38 साल के हो गये। जन्मदिन पर रोहित को साथी क्रिकेटरों के साथ ही प्रशंसकों ने भी बधाई दी है। रोहित ने अपना 38वां जन्मदिन जयपुर के होटल में अपने परिवार और मुंबई इंडियंस (एमआई) के साथियों के साथ मनाया। रोहित ने अपने करियर में कई सफलताएं हासिल की हैं। उनकी कप्तानी में भारतीय टीम ने चैम्पियसं ट्रॉफी और टी20 विश्कप जीत है। मैदान पर छाये रहने वाले रोहित ने अपने क्रिकेटिंग करियर में कई रिकॉर्ड बनाए हैं। खेल के साथ ही वह धन कमाने में भी पीछे नहीं रहे हैं। रोहित भारतीय क्रिकेट के सबसे धनी खिलाड़ियों में से एक हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, उनकी कुल नेटवर्थ 233 करोड़ रुपये के करीब है। आजकल वह केवल एकदिवसीय प्रारुप में ही खेलते हैं पर उनकी लोकप्रियता में कमी नहीं आई है। उनकी आय का मुख्य स्रोत बीसीसीआई का केन्द्रीय अनुबंध, इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) से मिलने वाली मोटी रकम और कई बड़े ब्रांड से जुड़े होना है। रोहित लंबे समय तक बीसीसीआई के केन्द्रीय अनुबंध में शीर्ष पर रहे हैं। उन्हें आईपीएल सीजन में उन्हें सालाना 16.30 करोड़ रुपये मिलते हैं। उन्होंने अब तक सिर्फ आईपीएल से ही 195 करोड़ रुपये कमाए हैं। इसके अलावा वह 25 से अधिक बड़े ब्रांड्स के लिए वे एंडोर्समेंट करते हैं। उनका मुंबई के पॉश वरली इलाके में एक घर है। उनके पास लग्जरी और स्पोर्ट्स कारें भी है। इसमें पसंदीदा लेम्बोर्गिनी उरुस के साथ ही मर्सिडीज-बेंज एस-क्लास, बीएमडब्ल्यू एम-5, रेंज रोवर, टोयोटा फॉर्च्यूनर और टेस्ला मॉडल वाई जैसी शानदार गाड़ियां शामिल हैं।

आईपीएल में बड़े स्कोर वाले मुकाबलों को मुरलीधरन ने खेल की जरुरत बताया, पिच पर भी उठे सवाल

मुम्बई (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 में बल्लेबाजों का दबदबा जारी है, जहां लगातार बड़े स्कोर बन रहे हैं और असंभव दिखने वाले लक्ष्य भी आसानी से हासिल किए जा रहे हैं उससे कई सवाल भी उठा रहे हैं। सनराइजर्स हैदराबाद ने हाल ही में मुंबई इंडियंस के खिलाफ 244 रनों का विशाल लक्ष्य जिस सहजता से पीछा किया, उसने एक बार फिर बल्लेबाजों के अनुकूल पिचों पर बहस छेड़ दी है। इस मुकाबले में जसप्रीत बुमराह जैसे विश्व स्तरीय गेंदबाज का भी महंगा साबित होना चिंता का विषय बन गया है, जिससे यह सवाल उठ रहा है कि क्या खेल में गेंदबाजों के लिए कुछ बचा है या नहीं।

वहीं इस मुद्दे पर सनराइजर्स हैदराबाद के गेंदबाजी कोच मुथैया मुरलीधरन ने कहा है कि अगर संतुलित विकेट मुहैया कराए जाएंगे, तो दर्शकों के लिए मैच मजेदार नहीं

होंगे। मुरलीधरन के अनुसार, टी20 क्रिकेट की पहचान ही चौके-छक्के हैं और प्रशंसक यही देखना चाहते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि आईपीएल एक बहुत बड़ा बिजनेस है और यदि मैचों में बड़े स्कोर नहीं बनेंगे, तो स्वाभाविक रूप से दर्शकों और प्रायोजकों दोनों की इसमें रुचि कम होने लगेगी, जिसका सीधा असर लीग की लोकप्रियता और वित्तीय स्थिति पर पड़ेगा।

मुरलीधरन ने बाउंड्री लाइन बढ़ाने जैसे सुझावों को भी खारिज करते हुए कहा कि इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। उनका मानना है कि जब बल्लेबाज बिना किसी डर के खुलकर आक्रामक तरीके से बल्लेबाजी करते हैं, तो गेंदबाजों के लिए उन्हें रोकना या रनों पर अंकुश लगाना बेहद मुश्किल हो जाता है। पूर्व दिग्गज स्पिनर ने यह भी दावा किया कि आक्रामक बल्लेबाजी का यह ट्रेंड सनराइजर्स हैदराबाद ने ही सबसे पहले शुरू किया था, जिसे अब बाकी टीमें भी अपना रही हैं।

मुरलीधरन ने बताया कि खेल में आए इस बदलाव का सबसे बड़ा प्रमाण पावरप्ले में बनने वाले रनों में देखी जा सकती है। जहां पहले पावरप्ले में 40-50 रन को एक अच्छा स्कोर माना जाता था, वहीं अब यह आंकड़ा बढ़कर 70-80 रन तक पहुंच गया है। आज के बल्लेबाज विकेट खोने की चिंता किए बिना सिर्फ रन बनाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे गेंदबाजों पर दबाव कई गुना बढ़ जाता है।

मार्टा ने नोस्कोवा को हराकर मैड्रिड ओपन सेमीफाइनल में जगह बनायी

मैड्रिड। यूक्रेन की महिला टेनिस खिलाड़ी मार्टा कोस्त्युक मैड्रिड ओपन में अच्छे प्रदर्शन के साथ ही अपने करियर के दूसरे डब्ल्यूटीए 1000 सेमीफाइनल में जगह बनायी है। मार्टा ने क्वार्टरफाइनल मुकाबले में चेक गणराज्य की 13वीं वरीयता प्राप्त लिंडा नोस्कोवा को सीधे सेटों में 7-6(1), 6-0 से हराया। अब फाइनल में जगह बनाने के लिए मार्टा की टक्कर अनास्तासिया पोटापोवा से होगी।पहले सेट में मार्टा और नोस्कोवा दोनों खिलाड़ियों को ही कड़ा संघर्ष करना पड़ा। मार्टा ने निर्णायक टाई-ब्रेक में 7-1 से जीत हासिल कर ली। वहीं दूसरे सेट में मार्टा हावी रहीं। उन्होंने यह सेट 6-0 से जीतकर मैच अपने नाम कर लिया। वहीं अनास्तासिया पोटापोवा और मार्टा का डब्ल्यूटीए टूर पर रिकॉर्ड 2-2 का है पर उन्होंने अपने पिछले दो मुकाबले सीधे सेटों में जीते हैं, जिसमें पिछले साल मैड्रिड में हुआ मैच भी शामिल है। वहीं दूसरे सेमीफाइनल में मीरा एंड्रीवा और हैली बैप्टिस्ट के बीच मुकाबला होगा। मार्टा के लिए यह सत्र विशेष रहा है। मैड्रिड में वह एक भी सेट नहीं हारी हैं। वहीं राउंड ऑफ 32 में उसे जेसिका पेगुला पर बड़ी जीत मिली। है। जीत के बाद मार्टा उत्साहित होते हुए कहा कि यह अविश्वसनीय लगता है।

चैंपियंस लीग फुटबॉल में एटलेटिको और आर्सेनल के बीच मुकाबला 1-1 से बराबरी पर रहा

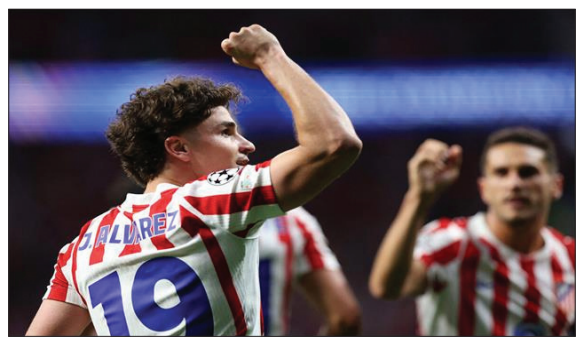

मैड्रिड । एटलेटिको मैड्रिड और आर्सेनल के बीच यूईएफए चैंपियंस लीग फुटबॉल 2026 में पहला लेग 1-1 से ड्रा रहा। स्पेन के मेट्रोपोलिटानो स्टेडियम में खेला गया यह मैच पेनल्टी और वीडियो असिस्टेंट रेफरी (वीएआर) के फैसलों के कारण विवादों में रहा, जिसने अंतिम टिकट कटाने के लिए लंदन में होने वाले अगले सप्ताह के दूसरे लेग को और भी अम बना दिया है। आर्सेनल के लिए यह ड्रॉ थोड़ा निराशाजनक रहा, क्योंकि वीएआर के देर से आने के कारण उन्हें दूसरे पेनल्टी का अवसर नहीं मिला। इस मुकाबले में दोनो ही टीमें शुरुआत से ही सतर्क नजर आईं, किसी भी गलती से बचने के प्रयास करती रहीं। एटलेटिको ने अपने घरेलू मैदान पर अच्छी शुरुआत की। पहला हाफ समाप्त होने से ठीक पहले, आर्सेनल को बढ़त मिली। । बॉक्स के अंदर विक्टर ग्योकेरेस को डेविड हैंको द्वारा धक्का दिए जाने के बाद रेफरी ने उसे पेनल्टी दी जिसे ग्योकेरेस ने गोल में बदलकर आर्सेनल को 1-0 कीबढ़त दिला दी। वहीं दूसरे हाफ की शुरुआत में ही एटलेटिको मैड्रिड ने अच्छी वापसी की। 56वें मिनट में, बेन व्हाइट के हैंडबॉल के बाद एटलेटिको को पेनल्टी मिली जिसे गोल में बदलने में जूलियन अल्वारेज ने कोई गलती नहीं की और स्कोर 1-1 पर पहुंचा दिया। 78वें मिनट में फाउल के कारण आर्सेनल को एक और पेनल्टी मिलने की उम्मीद थी पर वीएकआरे ने रेफरी के शुरुआती फैसले को पलट दिया, जिससे आर्सेनल को निराशा हुई। इसके बाद दोनो ही टीमों ने कई प्रयास किये पर वे गोल नहीं कर पायीं। दोनों टीमें अब अगले सप्ताह लंदन में होने वाले दूसरे लेग में उतरेंगी।

थॉमस कप फाइनल्स : क्वार्टर फाइनल में चीनी ताइपे से भिड़ेगा भारत

होर्सेंस (डेनमार्क) (एजेंसी)। भारत थॉमस कप फाइनल्स के क्वार्टर फाइनल में शुक्रवार को चीनी ताइपे की मजबूत टीम से भिड़ेगा और इस मुकाबले को जीतकर अपने दूसरे खिताब की ओर बढ़ने की कोशिश करेगा। भारत ने चार साल पहले अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल करते हुए थॉमस कप का खिताब जीता था जो बैडमिंटन की विश्व टीम चैंपियनशिप है। इस बार भारत ग्रुप ए में दूसरे स्थान पर रहकर क्वार्टर फाइनल में पहुंचा है और उसका सामना चीनी ताइपे से होगा जिसने अब तक यह टूर्नामेंट नहीं जीता है।

भारत ने अपने अभियान की शुरुआत जोरदार तरीके से करते हुए कनाडा को 4-1 से हराया। टीम ने इसके बाद ऑस्ट्रेलिया का 5-0 से शिकस्त दी लेकिन चीन को कड़ी चुनौती पेश करने के बावजूद उसे 2-3 से हार का सामना करना पड़ा। चीनी ताइपे की टीम काफी मजबूत नजर आ रही है जिसकी अगुवाई दुनिया के नंबर

छठे नंबर के एकल खिलाड़ी चोउ टिएन चेन कर रहे हैं। उनके साथ दुनिया के आठवें नंबर के खिलाड़ी और मौजूदा ऑल इंग्लैंड चैंपियन लिन चुन-यी और दुनिया के 21वें नंबर के खिलाड़ी ची यू जेन टीम की एकल चुनौती को बेहद मजबूत बनाते हैं।

युगल में ताइपे के पास चिउ सियांग चीह और वांग ची-लिन की दुनिया की 14वें तथा ली झे-हुई और यांग पो-सुआन की दुनिया की नंबर 16वें नंबर की जोड़ी है। दूसरी ओर भारत की टीम काफी अच्छी लय में नजर आ रही है। उसके एकल और युगल दोनों ही खिलाड़ी शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। युवा खिलाड़ी आयुष शेट्टी ने बैडमिंटन एशिया चैंपियनशिप की अपनी बेहतरीन लय को यहां भी बरकरार रखा है। उस चैंपियनशिप में वह उपविजेता रहे थे। यहां उन्होंने अपने तीनों मैच जीते हैं।

भारत के दो अनुभवी खिलाड़ियों एचएस प्रणय और किदांबी श्रीकांत ने तीसरे एकल मुकाबले की जिम्मेदारी आपस में बांटी है। बुधवार को खेले गए मैच में श्रीकांत ने चीन के लू गुआंग झू के खिलाफपिछड़ने के बाद जबरदस्त वापसी करते हुए शानदार जीत दर्ज की। प्रणय ने 2022 में भारत की खिताबी जीत के दौरान भी ऐसी ही भूमिका निभाई थी। ऑल इंग्लैंड के फाइनल में जगह बनाने वाले लक्ष्य सेन भले ही तीन गेम वाले दो रोमांचक मुकाबले हार गए हों लेकिन उन्होंने अपने प्रदर्शन से सबको प्रभावित किया है।

अब जब उनका मुकाबला नाराओका से होगा तो भारत की जीत काफी हद तक उन्हीं पर निर्भर करेगी। वह जापान के इस प्रतिद्वंद्वी से छह बार हार चुके हैं। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की युगल जोड़ी ने अपने शुरुआती दो मैच जीते,लेकिन उसके बाद वे चीन के लियांग वेई केंग और वांग चांग से करीबी मुकाबले में हार गए। सात्विक के कंधे की चोट से उबरने के बाद यह उनका पहला टूर्नामेंट था और उम्मीद है कि यह करीबी मुकाबला उन्हें नॉकआउट चरण से पहले तैयारी में मदद करेगा। हरिहरन अमसाकरुणन और एमआर अर्जुन की दूसरी युगल जोड़ी ने भी अब तक अपने तीन में से दो मैच जीते हैं और वे भारत को सेमीफाइनल तक पहुंचाने में मदद करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। वर्ष 2022 में खिताब जीतने के अलावा भारत ने 1952, 1955 और 1979 में कांस्य पदक भी जीते हैं।

आईपीएल में अभी किसी टीम को प्रबल दावेदार नहीं बता सकते : गांगुली

कोलकाता । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने कहा है आईपीएल में सभी टीमें अच्छा खेल रही हैं और ऐसे में ये नहीं कहा जा सकता है कि कौन सी टीम जीतेगी । पंजाब किंग्स अब तक के प्रदर्शन को देखते हुए काफी अच्छा कर रही है। इसके अलावा राजस्थान रॉयल्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु भी उसे कड़ी टक्कर दे रही हैं। अन्य टीमों भी उलटफेर कर रही हैं। कुल मिलाकर टूर्नामेंट अभी संतुलित हाल में है और कोई भी टीम आगे जा सकती है। इसलिए ये नहीं कहा जा सकता है ये टीम खिताब की प्रबल दावेदार है। गांगुली के अनुसार अभी करीब आधे मुकाबल बचे हुए है और ऐसे में ये टूर्नामेंट किसी भी दिशा में जा सकता है। कुल मिलाकर देखा जाये तो अभी कोई भी टीम ऊपर आ सकती है क्योंकि इस बार काफी अच्छी प्रतिस्पर्धा हो रही है। । अंक तालिका में भी टीमों के बीच कड़ा मुकाबला हो रहा है। पंजाब किंग्स अभी पहले स्थान पर चल रही है। वहीं दूसरे पर रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु है और तीसरे पर राजस्थान रॉयल्स वह चौथे पर सनराइजर्स हैदराबाद है। गुजरात टाइटन्स पांचवें स्थान पर है।

विजय वर्मा ने नागराज मंजुले के साथ काम करने के अनुभव पर बात की

विजय वर्मा इन दिनों अपनी हालिया रिलीज वेब सीरीज 'मटका किंग' को लेकर चर्चाओं में हैं। बातचीत में विजय ने इस प्रोजेक्ट को चुनने की वजह, शूटिंग के दौरान आई चुनौतियों और निर्देशक नागराज मंजुले के साथ काम करने के अनुभव पर खुलकर बात की। बातचीत के दौरान उन्होंने इस खेल की बारीकियों, उसे समझने में आई मुश्किलों और उससे जुड़ी अपनी निजी यादों का भी जिक्र किया।

'मटका किंग' को हां कहने की वजह पूछे जाने पर विजय ने सबसे पहले निर्देशक नागराज मंजुले का नाम लिया। उन्होंने कहा, 'नागराज मंजुले के साथ काम करना मेरा सपना था पर जब मैंने अपने किरदार के बारे में सुना तो थोड़ा डर गया कि मैं यह कर पाऊंगा या नहीं। डर इसीलिए था क्योंकि नागराज की फिल्मों में हर बारीकी पर ध्यान दिया जाता है।

शूटिंग के दौरान सबसे बड़ी चुनौती क्या रही? इस पर विजय ने कहा, 'सबसे मुश्किल था मटके का खेल समझना। बाहर से देखने पर लगता है कि ये सिर्फ ताश का खेल है लेकिन जब आप उसे किरदार के साथ जीते हैं, तब पता चलता है कि उसके भीतर कितनी बारीकियां हैं। ताश खेलते हुए डायलॉग बोलना, बातचीत करना, एक्सप्रेशन बनाए रखना और साथ ही उस दुनिया में बने रहना... ये सब एक साथ करना अपने आप में बड़ा चैलेंज था।'

ट्रेन के सफर में खेलता था ताश

दिलचस्प बात यह है कि ताश से विजय का रिश्ता सिर्फ इस सीरीज तक सीमित नहीं है। उन्होंने बताया कि असल जिंदगी में भी वह ताश खेल चुके हैं। विजय बोले, 'मैंने रियल लाइफ में भी खूब ताश खेला है। हैदराबाद से किशनगढ़ के ट्रेन सफर के दौरान एक अलग ही माहौल हुआ करता था। लोग अपने सब जरूरी सामान के साथ ताश लेकर चलते थे, ताकि सफर आराम से कट जाए। मैं भी उन्हीं में शामिल था और मुझे भी सफर के दौरान ताश खेलना पसंद था।'

बातचीत के दौरान जब विजय से पूछा गया कि ऐसी कौन सी लत है, जो चाहकर भी छूट नहीं रही? तो विजय ने हंसते हुए कहा, 'मैं बहुत कोशिश करता हूं कि वक्त पर सो जाऊं लेकिन पता नहीं क्यों ऐसा हो नहीं पाता। रात के एक-दो बज ही जाते हैं। कोशिश तो करता हूं, लेकिन रोज बुरी तरह फेल हो जाता हूं। यही मेरी एक ऐसी आदत है, जिसे चाहकर भी बदल नहीं पा रहा हूं।'

मैं बड़े पर्दे को कभी नहीं छोड़ूंगी, करिश्मा कपूर ने बताया अब क्यों करतीं हैं कम काम

अभिनेत्री करिश्मा कपूर लंबे वक्त से बड़े पर्दे से दूर हैं। हालांकि, उनका कहना है कि वो अब समय को ज्यादा महत्व देती हैं और चुनिंदा प्रोजेक्ट्स पर ही काम करना चाहती हैं। हाल ही में अभिनेत्री ने अपने करियर और काम के प्रति अपने जुनून को लेकर बात की। उन्होंने बताया कि अब वो किस तरह के प्रोजेक्ट्स करना चाहती हैं। साथ ही एक्ट्रेस ने अपने समय के दौर को भी याद किया।

अब मैं समय को ज्यादा महत्व देती हूं

करिश्मा कपूर ने दशकों से इंडस्ट्री को करीब से देखने की बात कही। उन्होंने कहा कि आज काम जुनून और उद्देश्य से जुड़ा है। मैं इंडस्ट्री में पली-बढ़ी हूं और मुझे कमर्शियल ब्लॉकबस्टर से लेकर एक्सपेरिमेंटल फिल्मों तक, हर तरह की भूमिकाएं निभाने का सौभाग्य मिला है। अब हर जगह मौजूद रहने के बजाय मैं उन प्रोजेक्ट्स को चुनती हूं जो मेरे दिल को छूते हैं। अभिनेत्री स्वीकार करती हैं कि अब समय उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण हो गया है। उन्होंने कहा कि पहले लगातार काम करने और एक सेट से दूसरे सेट पर जाने की वजह से काफी भागदौड़ रहती थी। अब मैं समय को ज्यादा महत्व देती हूं। मैं सोच-समझकर प्रोजेक्ट चुनती हूं क्योंकि मैं चाहती हूं कि हर प्रोजेक्ट के लिए समय निकालना सार्थक हो और साथ ही परिवार को भी पर्याप्त समय मिल सके। स्क्रिप्ट तो जरूरी है ही, लेकिन साथ ही लोग और कहानी के पीछे का मकसद भी मायने रखता है।

मैं बड़े पर्दे को कभी नहीं छोड़ूंगी

अभिनेत्री ने आगे कहा कि बड़े पर्दे का अपना ही जादू है, यहीं से मैंने शुरुआत की थी और यह हमेशा मेरे दिल में एक खास जगह रखेगा। लेकिन मुझे यह भी पसंद है कि ओटीटी प्लेटफॉर्म के साथ कहानी कहने का तरीका कैसे विकसित हुआ है। वेब मुश्किल कहानियों और अलग-अलग तरह के किरदारों के लिए मौका देता है। मेरे जैसी किसी के लिए जो आगे क्या करना है, इस बारे में सोच-समझकर फैसला लेती है यह एक बेहतरीन क्षेत्र है। हालांकि, मैं बड़े पर्दे को कभी नहीं छोड़ूंगी।

2024 में आखिरी बार मर्डर-मिस्ट्री में नजर आई थीं करिश्मा

वर्कफ्रंट की बात करें तो करिश्मा कपूर आखिरी बार साल 2024 में आई मर्डर-मिस्ट्री फिल्म 'मर्डर मुबारक' में नजर आई थीं। यह एक मल्टीस्टारर फिल्म थी, जो ओटीटी पर रिलीज हुई थी। हालांकि, फिल्म को खास प्रतिक्रियाएं नहीं मिली थीं। उनके आगामी प्रोजेक्ट को लेकर अभी कोई जानकारी नहीं है।

खुद कंजूस रही हूं, पर पति कंजूस नहीं चलेगा

'दंगल', 'बधाई हो' और 'जवान' जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्मों की एक्ट्रेस सान्या मल्होत्रा पिछले दिनों अपनी भावनात्मक फिल्म 'मिसेज के जीते अवॉर्ड्स' को लेकर खबरों में थीं, वहीं अब वह चर्चा में हैं अपनी कॉमिडी फिल्म 'टोस्टर' को लेकर। सान्या का कहना है कि अपनी कई फिल्मों में इमोशनल भूमिकाएं करने के बाद असल में वह ऐसे 'फील गुड किरदार' की तलाश में थीं। बकौल सान्या, 'इस फिल्म में काम करना मेरे लिए बहुत मजेदार अनुभव रहा, क्योंकि बतौर ऐक्टर मैं एक ऐसे किरदार के तलाश में थी जिससे मुझे फील गुड वाला अहसास कराए। मैंने इतनी कॉमिडी की भी नहीं है। मैंने ड्रामा वाली फिल्में ज्यादा की हैं और उसमें भी कुछ बहुत इमोशनल वाली भी रही हैं, ऐसे में कॉमिडी करना अच्छा ब्रेक था।' सान्या आगे बताती हैं, 'मुझे ऐसी मजेदार फिल्में देखना भी बहुत पसंद है। उस पर अगर आपको एक ऐसी टीम के साथ काम करने को मिले जहां आपको पता है कि आप सेट पर खुशी-खुशी जाओगे और खुशी-खुशी वापस आओगे। इसके अलावा, फिल्म में जो मेरे को-ऐक्टर्स हैं, उनकी कॉमिक टाइमिंग इतनी कमाल है कि उन्हें ऐक्टिंग करते देखना भी बहुत मजेदार होता है। जैसे, जब आप राज (राजकुमार राव) और अभिषेक (बनर्जी) को कुछ इंप्रोवाइज करते हुए देखते हैं तो बड़ा मजा आता है।'

फिल्म में सान्या का पति महाकंजूस होता है, क्या असल जिंदगी में कंजूस पति चलेगा? इस सवाल पर वह कहती हैं, 'भगवान न करे कि कंजूस पति मिले। पता चला लंच के लिए लंगर पर लेकर चला जाए (हंसती हैं)। हालांकि, मैं खुद कंजूस रह चुकी हूं। मैं काफी सोच-समझकर खर्च करने वाली रही हूं और हर चीज खरीदने से पहले काफी सोचती थी, मगर पति तो कंजूस बिल्कुल नहीं चलेगा।'

सूरज बड़जात्या के साथ काम करना मेरा सपना सच होने जैसा...

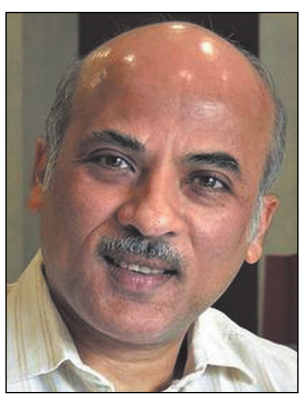

2022 की फिल्म 'ऊंचाई' के लिए बेस्ट डायरेक्टर का राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने के बाद, सूरज बड़जात्या वापस आ रहे हैं। उनकी नई फिल्म का नाम है 'ये प्रेम मोल लिया'। यह एक अच्छी पारिवारिक मनोरंजन फिल्म है। इस फिल्म को लेकर शरवरी वाघ बेहद खुश हैं। फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया' 27 नवंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इसमें राजश्री के प्यारे किरदार 'प्रेम' को 12 साल बाद बड़े पर्दे पर लाया जा रहा है। आयुष्मान खुराना पहली बार प्रेम का रोल निभा रहे हैं। उनके साथ मुख्य अभिनेत्री शरवरी वाघ हैं। यह फिल्म राजश्री प्रोडक्शंस और महावीर जैन फिल्म्स ने मिलकर बनाई है। शरवरी ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर लिखा, ''ये प्रेम मोल लिया' मेरे लिए एक बहुत खास फिल्म है। सूरज बड़जात्या के साथ काम करना मेरा सबसे बड़ा सपना सच होने जैसा लग रहा है। आयुष्मान के साथ यह सफर और भी खूबसूरत बन गया है।' शरवरी ने आगे लिखा, '27 नवंबर 2026 को सब लोग सिनेमाघर में फिल्म देखने जरूर आएं।'

फिल्म का संगीत होगा खास

इस फिल्म में 12 साल बाद सूरज बड़जात्या और हिमेश रेशमिया फिर साथ काम कर रहे हैं। पिछली बार 2014 में सलमान खान की फिल्म 'प्रेम रतन धन पायो' में दोनों ने साथ काम किया था। उस वक्त कई हिट गाने आए थे। अब भी दमदार संगीत आने की उम्मीद है।

आयुष्मान ने आने वाली फिल्मों में अपने किरदारों को लेकर बात की

आयुष्मान खुराना इस साल तीन फिल्मों में नजर आने वाले हैं। इन दिनों आयुष्मान 'पति पत्नी और वो दो', 'उड़ता तीर' और 'ये प्रेम मोल लिया' को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। आयुष्मान ने आने वाली फिल्मों में अपने किरदारों को लेकर बात की। साथ ही बताया कि वह हर फिल्म के साथ कुछ नया करने की कोशिश क्यों करते हैं?

आयुष्मान खुराना इस साल 2026 में तीन फिल्मों में नजर आने वाले हैं, ये सभी फिल्में एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। पहली फिल्म कॉमेडी और रिश्तों पर है। जबकि दूसरी फिल्म अनोखी और विद्रोही है। तीसरी फिल्म परिवार और परंपरा पर आधारित है। पहली फिल्म 'पति पत्नी और वो दो', जो 15 मई को रिलीज होगी। दूसरी फिल्म 'उड़ता तीर', जो 11 सितंबर को आएगी। तीसरी फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया', जो 27 नवंबर को रिलीज होगी।

आयुष्मान ने कहा, 'मैं कभी भी जानबूझकर अलग तरह के रोल दिखाने की कोशिश नहीं करता। मेरे लिए सिर्फ वो कहानियां महत्वपूर्ण हैं, जो मुझे दर्शक के रूप में अच्छी लगती हैं। तीन अलग-अलग फिल्में एक ही साल में करना रोमांचक है, लेकिन यह जिम्मेदारी भी है। यह मुझे हर बार नया बनने के लिए प्रेरित करता है।'

मैं मनोरंजक फिल्में करना चाहता हूं

आयुष्मान ने कहा, 'आज के दर्शक कुछ नया देखना चाहते हैं। वे एक ही चीज बार-बार नहीं देखना चाहते। मैं ऐसी फिल्में बनाना चाहता हूं, जो मनोरंजक हों और कुछ संदेश भी दें। अगर लोग इसे अलग तरह की फिल्में कह रहे हैं, तो मैं आभारी हूं। लेकिन मेरे लिए यह सिर्फ जिज्ञासु बने रहना और ईमानदार रहना है।

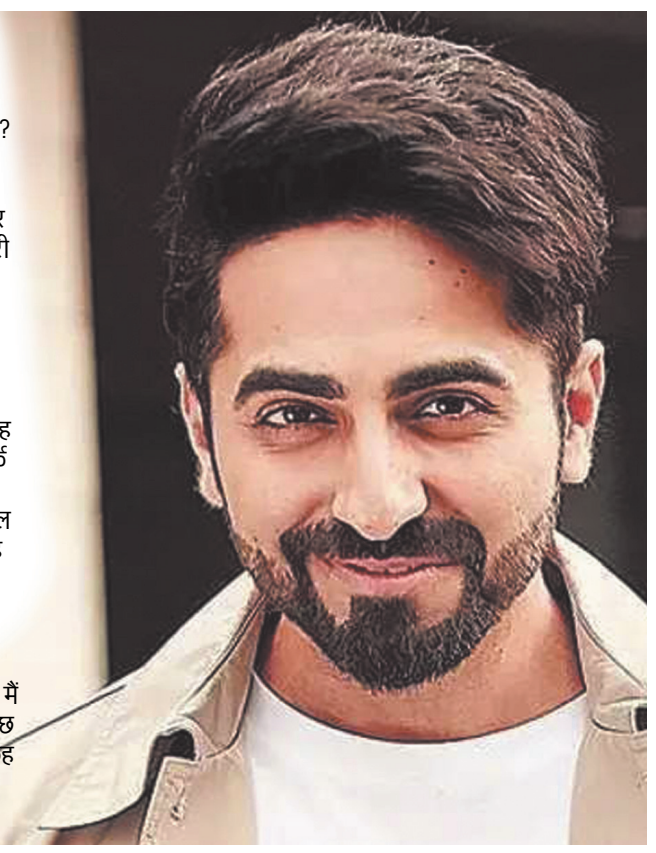

प्रियंका और सामंथा लाई इंडस्ट्री में बदलाव

'जो मेहनत करता है, उसे फल मिलता है।' कहना है जानी-मानी एक्ट्रेस सई ताम्हणकर का। मराठी के साथ-साथ हिंदी फिल्म जगत में अपनी प्रतिभा की चमक बिखेरने वाली सई 'दुनियादारी', 'हंटर', 'मिमी', 'बेरोजगार', 'धुरला', 'दलदल' और 'डब्बा कार्टलट जैसे हिंदी-मराठी के प्रोजेक्ट्स से खुद को वर्सेटाइल एक्ट्रेस के रूप में साबित कर चुकी हैं। वह अपने सफर को बहुत ही ग्रेसफुल नजरों से देखती हैं और बहुत विनम्र महसूस करती हैं। इन दिनों वह चर्चा में हैं अपनी नई वेब सीरीज 'मटका किंग' से। उनसे एक बातचीत।

स्कूल में खेलती थी कबड्डी-कराटे

सई आज मराठी और हिंदी इंडस्ट्री में अपना अच्छा नाम बना चुकी हैं, लेकिन उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि वह एक्ट्रेस बनेंगी। वह बताती हैं, 'मेरे पिता जहाज में काम करते थे और अक्सर समुद्री यात्राओं पर रहते थे। घर पर मैं और मम्मी ही होते थे, और उन्होंने मुझे हमेशा आत्मनिर्भर बनना सिखाया। मुझे मजबूत और दबंग बनाने में उनका बहुत बड़ा योगदान है। स्कूल में मैं 'कबड्डी गर्ल' के नाम से जानी जाती थी। मेरे घुटने हमेशा चोटिल रहते थे और मुझमें पारंपरिक 'लड़कियों वाली' बातें कम ही थीं। मैं टॉमबॉय थी। कॉलेज तक मेरा बॉयकट हेयरस्टाइल रहा। इसी दौरान मैंने कराटे सीखा और ऑरेंज बेल्ट हासिल की। मेरी मां और खेलों ने मेरे आत्मविश्वास को और मजबूत किया। मेरे बेबाक और बिंदास स्वभाव की वजह से लोग मेरे सामने कुछ गलत करने से हिचकते हैं। मेरा मानना है कि हर लड़की को आत्मनिर्भर और दबंग होना चाहिए।'

रीजनल एक्ट्रेस के टैग से दर्द होता है

आमतौर पर साउथ या मराठी फिल्म जगत से आई हुई एक्ट्रेसेस को रीजनल एक्ट्रेस का टैग दे दिया जाता है। इस पर वह अफसोस जताते हुए कहती हैं, 'कभी -कभार दर्द होता है कि ऐसा क्यों है? हम तो दोनी ही इंडस्ट्री में उतनी ही लगन और मेहनत काम करते हैं। हालांकि वो जमाना चला गया है, जब भाषा के आधार पर विभाजन किया जाता था। इस मुद्दे पर मैं दर्शकों से अनुरोध करना चाहूंगी कि वो हमें काम के आधार पर तौलें। जहां तक टैग देने की बात है, तो उन्हें तोड़ने में भी खूब मजा आता है। वो हमारे लिए ईंधन का काम करते हैं। मेरे जैसे और भी कई कलाकार हैं, जो इस बॉक्स को तोड़ने में लगे हुए हैं। हिंदी में 'मिमी' एक ऐसी फिल्म थी, जिसने मुझे इस टैग से बाहर आने में मदद की। मुझे अपना पहला फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला और भी कई दूसरे पुरस्कार मिले।'

'कई बार एक्ट्रेसेस को टाइपकास्ट भी कर दिया जाता है'

सई मानती हैं कि लेबल लगाने के साथ-साथ कई बार एक्ट्रेसेस को टाइपकास्ट भी कर दिया जाता है। वह कहती हैं कि ये सालों से अंडरकरंट देखा जाता है। वह कहती हैं, 'इससे निकलने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि एक ही तरह के रोल्स के लिए ना की जाए, मगर ये बहुत मुश्किल होता है। हमारी इंडस्ट्री ही नहीं हमारा समाज भी पितृसत्ताक है, मगर इस बैकड्रॉप के बावजूद लड़कियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं।' इससे निकलने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि एक ही तरह के रोल्स के लिए ना की जाए, मगर ये बहुत मुश्किल होता है। हमारी इंडस्ट्री ही नहीं हमारा समाज भी पितृसत्ताक है, मगर इस बैकड्रॉप के बावजूद लड़कियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं।

प्रियंका और सामंथा लाई बदलाव

पुरुष प्रधान इंडस्ट्री में हीरोइन की तुलना में हीरो को ज्यादा अहमियत जी जाती है? इस सवाल पर वह कहती हैं, 'कुछ सालों में ये हालात बदले हैं। प्रियंका चोपड़ा और सामंथा रुथ प्रभु का इस बदलाव में बड़ा योगदान यही। इन्होने धीरे-धीरे वो ब्रैकेट्स तोड़ने शुरू किए। पहले की तुलना मैंने आज हालात बदले हैं, पहले तो बहुत ही बुरी स्थिति थी।' पे पैरिटी के मुद्दे पर सई ताम्हणकर कहती हैं, 'जब भी नेगेटिव चीजें होती हैं, उनके बारे में काफी हो-हल्ला होता है, पर सकारत्मक चीजों पर बात काम ही होती है।

वेब सीरीज के लिए छोड़ी प्राइज मनी

इंडस्ट्री में दो दशक से भी ज्यादा का समय बिता चुकी सई अपनी फीस को लेकर कहती हैं, 'मैं अगर अपनी बात करूं, तो कई बार मैं अपने मनमुताबिक अपनी फीस ले पाती हूं और कई बार नहीं ले पाती, मगर जितनी बार ले पाई, उसने मुझे बहुत हौसला दिया है। एक एक्टर को पता होता है कि कब अपनी फीस छोड़नी है और कब अड़े रहना है, क्योंकि एक्टिंग के पेशे के बावजूद कई बार हम सृजनात्मक संतुष्टि के लिए काम करते हैं, तो कई बार ऐसा मौका भी आया कि मैंने अपनी प्राइज मनी छोड़ दी हो।' 'मैंने यूट्यूब के लिए एक वेब सीरीज की थी और उसके लिए मैंने अपना मेहनताना छोड़ दिया था, मगर उसका जो रिस्पॉन्स आया था, उसका मोल कुछ हो ही नहीं सकता। उस वेब सीरीज का नाम था 'बेरोजगार'।

महानगर मेट्रो
www.mahanagarmetro.com

संक्षिप्त समाचार

श्रीलंका के चेम्मनी में सामूहिक कब्र की खुदाई फिर शुरू

कोलंबो, एजेंसी। श्रीलंका के जाफना के पास स्थित चेम्मनी क्षेत्र में एक सामूहिक कब्र की खुदाई का काम फिर से शुरू करने का आदेश दिया गया है। यह वही स्थान है जो 1990 के दशक में लिट्टे संघर्ष के दौरान बड़े पैमाने पर दफनाने की घटनाओं के कारण सुर्खियों में आया था।स्थानीय अदालत ने सात महीने के अंतराल के बाद इस खुदाई कार्य को दोबारा शुरू करने की अनुमति दी है। यह कार्य पिछले साल सितंबर में रोक दिया गया था, जब न्याय मंत्रालय की ओर से फंड की नई व्यवस्था लंबित थी। जाफना मजिस्ट्रेट कोर्ट को मंगलवार को बताया गया कि खुदाई कार्य के लिए लगभग 2.1 मिलियन श्रीलंकाई रुपये की राशि जारी कर दी गई है, जिसके बाद काम दोबारा शुरू किया जाएगा। इस मामले की गंभीरता को देखते हुए अदालत ने यूरोपीय संघ सहित फ्रांस, जर्मनी, इटली और रोमानिया के राजनयिकों को खुदाई स्थल पर निरीक्षण के लिए मौजूद रहने की अनुमति दी है। खुदाई के दूसरे चरण को पहले 45 दिनों बाद रोका गया था, जिसमें अब तक 240 मानव कंकाल बरामद किए जा चुके हैं। इसके अलावा 14 हड्डियों के ढेर और कई वस्तुएं भी मिली हैं, जिनमें शिशु बोतलें, गुड़िया, खिलौने, बच्चों के बैग और जूते शामिल हैं। 13 फरवरी 2025 को चेम्मनी में विकास कार्य के दौरान फिर से मानव अवशेष मिलने के बाद मामला एक बार फिर सुर्खियों में आ गया था। इसके बाद अदालत ने इनके न्यायिक परीक्षण का आदेश दिया था। 14 अगस्त को जाफना के न्यायिक चिकित्सा अधिकारी की रिपोर्ट के आधार पर खुदाई कार्य को और आठ सप्ताह तक जारी रखने की सिफारिश की गई थी। चेम्मनी क्षेत्र पहली बार 1998 में चर्चा में आया था, जब रक्षाअश्व और सरकारी सेना के बीच संघर्ष के दौरान यहां सामूहिक कब्र का दावा किया गया था। उस समय लगभग 15 कंकाल बरामद हुए थे, जिससे यह मामला अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में आ गया था।

एफबीआई के पूर्व प्रमुख के खिलाफ चलेगा मुकदमा, राष्ट्रपति ट्रंप को जान से मारने की धमकी देने का आरोप

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की संघीय जांच एजेंसी एफबीआई के पूर्व निदेशक जेम्स कोमी के खिलाफ मुकदमा चलेगा। कोमी पर आरोप है कि उन्होंने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को जान से मारने की धमकी दी। अमेरिका के कार्यवाहक अटॉर्नी जनरल टॉड ब्लांच ने मंगलवार को बताया कि संघीय ग्रांड ज्यूरी ने जेम्स कोमी पर दो मामलों में मुकदमा चलाने का फैसला किया है, जो अमेरिका के राष्ट्रपति को जान से मारने की धमकी देने से जुड़े हैं। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान टॉड ब्लांच ने कहा कि न्याय विभाग इस मामले में कोई नरमी नहीं बरतेगा। आरोप है कि जेम्स कोमी ने 15 मई, 2025 को कथित तौर पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को जान से मारने और उन्हें शारीरिक नुकसान पहुंचाने की धमकी दी थी। इस मामले में उत्तरी कैरोलिना के पूर्वी जिले में मुकदमा दायर हुआ है। दूसरे मामले में कोमी ने टेलीफोन संचार या डिजिटल माध्यम से राष्ट्रपति को जान से मारने की धमकी वाला संदेश भेजा था। प्रेस कॉन्फ्रेंस में टॉड ब्लांच ने कहा कि न्याय विभाग कभी भी राष्ट्रपति को धमकी देने की बात को बर्दाश्त नहीं करेगा। इन दोनों मुकदमों में अगर जेम्स कोमी को दोषी पाया जाता है तो उन्हें 10-10 साल की सजा हो सकती है। जेम्स कोमी के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया है। हालांकि अभी ये साफ नहीं है कि उन्हें हिरासत में लिया जाएगा या वे खुद आत्मसमर्पण करेंगे। वहीं जेम्स कोमी ने अपने ऊपर लगे आरोपों को खारिज किया है।

पूर्व राष्ट्रपति येओल की पत्नी को चार साल की कैद, भ्रष्टाचार के मामले में ठहराई गईं दोषी

सियोल, एजेंसी। दक्षिण कोरिया की एक अदालत ने देश के पूर्व राष्ट्रपति यून सुक येओल की पत्नी किम किओन ही को भ्रष्टाचार के एक और मामले में चार साल की सजा सुनाई है। दो महीने पहले उनके पति को देश में जबरन मार्शल लॉ लगाने के आरोप में उम्रकैद की सजा सुनाई गई थी। जनवरी में एक जिला अदालत ने पूर्व प्रथम महिला किम को 20 महीने की सजा सुनाई थी। उन पर आरोप था कि उन्होंने राजनीतिक लाभ देने के वादे के बदले यूनिफिकेशन चर्च से उपहार लिए थे। इन उपहारों में एक ग्राफ कंपनी का हीरे का हार और एक चैनल बैग शामिल था। हालांकि, उसी समय उन्हें एक शेयर कीमत में हेरफेर के मामले में बरी कर दिया गया था, जो मामला उनके प्रथम महिला बनने से पहले का था। बाद में दोनों पक्षों ने इस फैसले के खिलाफ अपील की। मंगलवार को सियोल हाईकोर्ट ने उनकी सजा बढ़ाकर चार साल कर दी। अदालत ने उन्हें यूनिफिकेशन चर्च से एक और चैनल बैग (कीमती हैंडबैग) लेने और शेयरों की कीमत में हेरफेर के मामले में भी दोषी पाया। दंपती की स्थिति उस समय बदली, जब दिसंबर 2024 में यून ने मार्शल लॉ लगाया, जिसके कारण उनके खिलाफ महाभियोग शुरू हुआ और उन्हें पद से हटा दिया गया। इसके बाद उन पर कई आपराधिक मामले चले। जांचकर्ताओं का कहना है कि किम का मार्शल लॉ लागू करने से कोई संबंध नहीं था।

ईरान का नया शांति प्रस्ताव, ट्रंप पर 1 मई के बाद युद्ध जारी रखने को लेकर बढ़ा सियासी संकट

वाशिंगटन, एजेंसी। ईरान ने स्पष्ट किया है कि मौजूदा स्थिति को वह सामान्य नहीं मानता और उसके लिए हालात अब भी युद्ध जैसे ही बने हुए हैं। प्रेस टीवी की रिपोर्ट के अनुसार, ईरानी सेना के प्रवक्ता ने कहा कि संघर्ष पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। प्रवक्ता ने बताया कि देश की सेना और सुरक्षा एजेंसियां लगातार निगरानी और सर्विलांस में जुटी हैं, ताकि हर गतिविधि पर पैनी नजर रखी जा सके और किसी भी संभावित खतरे का तुरंत जवाब दिया जा सके। ईरान ने अपने विरोधियों को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा है कि अगर कोई नई कार्रवाई की जाती है, तो उसका जवाब नए हथियारों, नई रणनीतियों और अलग-अलग मोर्चों पर दिया जाएगा। अमेरिका में 'वॉर पावर्स रेजोल्यूशन 1973' नाम का एक कानून लागू है, जिसके अनुसार अगर राष्ट्रपति बिना कांग्रेस की मंजूरी के सैन्य कार्रवाई करते हैं, तो उन्हें 60 दिनों के भीतर संसद से अनुमति लेना अनिवार्य होता है। रिपोर्टों के मुताबिक, अमेरिका ने 28 फरवरी को ईरान पर सैन्य कार्रवाई की थी, लेकिन इसकी आधिकारिक जानकारी संसद को 2 मार्च को दी गई। इस स्थिति में ट्रंप प्रशासन के पास 1 मई तक कांग्रेस की मंजूरी लेने का समय है। यदि ऐसा नहीं होता, तो कानून के अनुसार सैन्य कार्रवाई रोकनी पड़ सकती है। कांग्रेस की मंजूरी के लिए हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स और सीनेट दोनों में साधारण बहुमत की जरूरत होती है, लेकिन अभी तक यह समर्थन नहीं मिल

सका है। बताया जा रहा है कि कम से कम 10 रिपब्लिकन सांसद भी इस कार्रवाई के विरोध में हैं। हालांकि नियम यह कहता है कि मंजूरी न मिलने पर सैन्य कार्रवाई समाप्त होनी चाहिए, लेकिन व्यवहार में ऐसा हमेशा नहीं होता। अतीत में कई अमेरिकी राष्ट्रपति इस कानून की व्याख्या अपने तरीके से करते रहे हैं और इसे लेकर कानूनी बहस भी होती रही है।

ईरान की नई शांति पहल : ईरान आने वाले कुछ दिनों में पाकिस्तान में मौजूद मध्यस्थों के जरिए युद्ध समाप्त करने के लिए एक नया प्रस्ताव पेश करने की तैयारी कर रहा है। सीएनएन की एक रिपोर्ट के अनुसार, यह कदम इसलिए उठाया जा रहा है क्योंकि पूर्व में दिया गया प्रस्ताव डोनाल्ड ट्रंप ने स्वीकार नहीं किया था।

अमेरिकी सेना ने समुद्र में संदिग्ध जहाज को रोका : अमेरिकी सेना ने ईरान के बंदरगाहों की नाकेबंदी के दौरान एक और व्यापारिक जहाज ब्लू स्टार III की तलाशी ली। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने बताया कि मरीन सैनिकों ने हेलीकॉप्टर से रस्सी के सहारे जहाज पर उतरकर जांच की। जब यह पुष्टि हो गई कि जहाज ईरान के किसी भी बंदरगाह पर नहीं जा रहा है, तो उसे आगे बढ़ने की अनुमति दे दी गई। ट्रंप प्रशासन ने दो हफ्ते पहले ईरान की समुद्री नाकेबंदी शुरू की थी। तब से अब तक अमेरिकी सेना ने कम से कम चार व्यापारिक जहाजों की तलाशी ली है। यह पहला मौका है जब किसी जहाज को हिरासत में लेने के बजाय छोड़ दिया गया। अमेरिका ने यह नाकेबंदी ईरान पर दबाव बनाने के लिए की है।

ईरानी अधिकारी ने ईरान के खिलाफ ट्रंप की धमकियों की निंदा की : भारत में ईरान के सर्वोच्च नेता के उप प्रतिनिधि डॉ मोहम्मद हुसैन जियाईनिया ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की धमकियों का कड़ा विरोध किया है। ट्रंप ने शांति समझौता न होने पर ईरान के बुनियादी ढांचे को बम से उड़ाने की धमकी दी थी। जियाईनिया ने कहा कि ट्रंप खुलेआम अंतरराष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन कर रहे हैं, लेकिन संयुक्त राष्ट्र और अन्य संगठन इस पर चुप हैं। दक्षिणी लेबनान पर इस्राइली हवाई हमले में दो की मौत, 13 घायल दक्षिण लेबनान के जेबचित शहर पर इस्राइल ने हवाई हमला किया है। शुरुआती आंकड़ों के अनुसार, इस हमले में दो लोगों की मौत हो गई। आधिकारिक नेशनल न्यूज एजेंसी ने जानकारी दी कि नबातियेह जिले में हुए इस हमले में 13 अन्य लोग घायल हुए हैं। मंगलवार को लेबनान में हुए अलग-अलग इस्राइली हमलों में कुल मिलाकर कम से कम 11 लोग मारे गए और 30 घायल हुए। इन पीड़ितों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं।

श्रीलंका चेम्मनी में सामूहिक कब्र की खुदाई फिर शुरू, एबीसी लाइसेंस पर एफसीसी का फैसला- समीक्षा का आदेश जारी

कंपाला, एजेंसी। युगांडा के अधिकारियों ने अवैध प्रवासन और मानव तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए भारतीयों सहित 231 विदेशी नागरिकों को हिरासत में लिया है। आंतरिक मामलों के मंत्रालय ने बताया कि यह अभियान सोमवार से शुरू हुआ। इसमें उत्तरी युगांडा में रह रहे नाइजीरियाई नागरिकों और राजधानी कंपाला के एक बंद परिसर में रह रहे विदेशियों को निशाना बनाया गया। कंपाला के जिस परिसर में छापेमारी हुई, वहां 169 लोग मिले, जिनमें 36 महिलाएं थीं। इस समूह में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, घाना, म्यांमार, इथियोपिया, श्रीलंका, कंबोडिया और मलेशिया के नागरिक शामिल हैं। यह परिसर पूरी तरह से प्रतिबंधित था और इसमें अपनी खुद की रेस्टोरेंट जैसी सुविधाएं थीं, ताकि लोगों की आवाजाही को सीमित रखा जा सके। जांच में पता चला कि कई लोगों के पास पासपोर्ट नहीं थे। कुछ ने दावा किया कि उन्हें नौकरी का झांसा देकर युगांडा लाया गया था, जबकि कुछ लोग साइबर ठगी और अन्य आपराधिक गतिविधियों में शामिल पाए गए। मंत्रालय के प्रवक्ता साइमन पीटर मुंडेयी ने बताया कि हिरासत में लिए गए लोगों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है। जिनमें- तस्करी के शिकार लोग, तस्करी करने वाले मुख्य आरोपी और वे लोग जो बिना वीजा के रह रहे थे। कानून तोड़ने वालों पर मुकदमा चलाया जाएगा। तस्करी के शिकार और वीजा अवधि खत्म होने वाले लोगों को टिकट खरीदकर देश छोड़ने में मदद की जाएगी। वहीं, तस्करी के सरगनाओं को सजा और निर्वासन का सामना करना पड़ सकता है। फेडरल कम्युनिकेशंस कमीशन (एफसीसी) ने अमेरिकी ब्रॉडकास्टिंग कंपनी (एबीसी) के स्थानीय टीवी स्टेशनों के ब्रॉडकास्ट लाइसेंस की समय से पहले समीक्षा करने का आदेश जारी किया है। यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है जब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनकी पत्नी मेलानिया ट्रंप ने कॉमेडियन जिमी किमेल को लेकर सख्त टिप्पणी की थी। एफसीसी का यह निर्णय असामान्य और सख्त माना जा रहा है, क्योंकि आमतौर पर ब्रॉडकास्ट लाइसेंस की समीक्षा तय समय पर ही की जाती है। आदेश के अनुसार एबीसी और उसके सभी लाइसेंस प्राप्त टीवी स्टेशनों को 28 मई 2026 तक अपने लाइसेंस नवीनीकरण के लिए आवेदन करना होगा। यह समीक्षा नेटवर्क के आठ चैनलों से जुड़ी है और एक चल रही जांच का हिस्सा बताई जा रही है, जिसमें एबीसी की विविधता से जुड़ी नीतियों की भी जांच हो रही है। हालांकि, यह कदम उस विवाद के ठीक बाद आया है, जिसमें जिमी किमेल के एक बयान को लेकर राजनीतिक हलकों में तीखी प्रतिक्रिया देखने को मिली।

होर्मुज में समुद्री रास्ता खुलवाना चाहता है भारत; संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में जताई चिंता

न्यूयॉर्क, एजेंसी। पश्चिम एशिया में बढ़ते संकट के बीच, भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में होर्मुज जलडमरूमध्य के माध्यम से सुरक्षित और निर्बाध समुद्री आवागमन को जल्द से जल्द बहाल करने का आग्रह किया है। भारत ने अपने नाविकों की सुरक्षा पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि किसी भी महत्वपूर्ण जलमार्ग को बंद करने के कथित प्रयासों के वैश्विक अर्थव्यवस्था पर सीधे परिणाम होते हैं। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में 'समुद्री क्षेत्र में जलमार्गों की सुरक्षा और संरक्षण' पर एक खुली बहस को संबोधित करते हुए, संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन की प्रभारी राजदूत, योजना पटेल ने इस बात पर जोर दिया कि भारत समुद्री सुरक्षा और जलमार्गों के संरक्षण को वैश्विक सुरक्षा और आर्थिक समृद्धि के लिए आवश्यक मानता है। भारत ने दोहराया कि अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार होर्मुज जलडमरूमध्य के माध्यम से नौवहन की स्वतंत्रता और वैश्विक वाणिज्य का पूरी तरह से सम्मान किया जाना चाहिए और जल्द से जल्द सुरक्षित और निर्बाध समुद्री आवागमन बहाल किया जाना चाहिए। बता दें कि, भारत दुनिया के शीर्ष तीन नाविक-आपूर्ति करने वाले देशों में से एक है, जो वैश्विक समुद्री कार्यबल का लगभग 13 प्रतिशत योगदान देता है। इसलिए, भारत अपने नाविकों की सुरक्षा और कल्याण को लेकर गहराई से चिंतित है। राजदूत पटेल ने कहा, 'किसी भी महत्वपूर्ण जलमार्ग में व्यवधान, बाधा या कथित बंद होने के वैश्विक अर्थव्यवस्था, ऊर्जा और मानवीय आपूर्ति श्रृंखलाओं पर सीधे परिणाम होते हैं।' पश्चिम एशिया संघर्ष के बीच, विदेश मंत्रालय ने पिछले महीने कहा था कि क्षेत्र में 'कई घटनाओं' में आठ भारतीय नागरिकों की जान चली गई है, जबकि एक अभी भी लापता है। भारत ने इस बात पर जोर दिया कि तत्काल हल की जाने वाली मुख्य चिंताएं नौवहन की सुरक्षा, आपूर्ति श्रृंखलाओं की निरंतरता (विशेष रूप से मानवीय आपूर्ति श्रृंखलाओं पर जोर के साथ), समुद्री जागरूकता में वृद्धि और नाविकों के लिए संचार की सुविधा प्रदान करना है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने कहा कि विश्व के जलमार्गों की सुरक्षा अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की परीक्षा बन गई है।

ऑस्ट्रेलिया का बड़ा कदमः मेटा-गूगल और टिकटॉक पर टैक्स का लगाने का प्रस्ताव, पत्रकारों को मिलेगा भुगतान

कैनबरा, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया की सरकार ने डिजिटल दिग्गज कंपनियों मेटा, गूगल और टिकटॉक पर टैक्स लगाने का प्रस्ताव रखा है, ताकि पत्रकारों और समाचार संस्थानों को आर्थिक सहयोग दिया जा सके। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज ने कहा कि पत्रकारों के काम की एक आर्थिक कीमत तय करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं होना चाहिए कि बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियां पत्रकारों की बनाई सामग्री का इस्तेमाल कर मुनाफा कमाएं और उन्हें उचित भुगतान न मिले। हम मानते हैं कि पत्रकारिता में निवेश एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए बेहद जरूरी है।

ऑस्ट्रेलिया का ऐसा दूसरा प्रयास : यह ऑस्ट्रेलिया का दूसरा प्रयास है, जिसके तहत डिजिटल प्लेटफॉर्म्स को समाचार सामग्री टेक्स्ट और इमेज के लिए भुगतान

करने के लिए मजबूर किया जा रहा है। इससे पहले 2021 में लागू किए गए समाचार मीडिया सौदेबाजी संहिता के जरिए भी कंपनियों पर दबाव बनाया गया था। उस समय प्लेटफॉर्म्स ने मध्यस्थता से बचने के लिए समाचार संस्थानों के साथ व्यावसायिक समझौते किए थे, ताकि कोई जज उनकी कीमत तय न करे। लेकिन बाद में इन कंपनियों ने उन समझौतों को नवीनीकृत करने से बचने के लिए अपने प्लेटफॉर्म्स से समाचार सामग्री हटाना शुरू कर दिया।

क्या है समाचार सौदेबाजी प्रोत्साहन : अब सरकार 'समाचार सौदेबाजी प्रोत्साहन' नाम से नया प्रावधान ला रही है। इसके तहत जो बड़ी डिजिटल कंपनियां समाचार संस्थानों के साथ समझौता नहीं करेंगी, उन पर ऑस्ट्रेलिया में होने वाली उनकी कुल कमाई का 2.25% टैक्स लगाया जाएगा। सरकार ने यह भी स्पष्ट किया है कि अगर कंपनियां पत्रकारिता के लिए भुगतान करने पर सहमत होती हैं, तो उन्हें टैक्स में छूट दी जाएगी, जिससे उनका कुल आर्थिक बोझ कम हो जाएगा। सरकार का अनुमान है कि इस योजना के जरिए हर साल 200 से 250 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर (करीब 144 से 179 मिलियन अमेरिकी डॉलर) की राशि जुटाई जा सकती है। यह वही स्तर है, जितना भुगतान प्लेटफॉर्म्स ने उस समय किया था जब समाचार मीडिया सौदेबाजी संहिता अपने चरम पर था। संचार मंत्री अनिका वेल्स ने बताया कि इस राशि को समाचार संगठनों के बीच उनके यहां काम करने वाले पत्रकारों की संख्या के आधार पर वितरित किया जाएगा। यह टैक्स मेटा प्लेटफॉर्म, गूगल और टिकटॉक पर लागू होगा। इस प्रस्ताव का इन कंपनियों ने कड़ा विरोध किया है। मेटा ने कहा कि समाचार संस्थान अपनी इच्छा से उनके प्लेटफॉर्म पर सामग्री साझा करते हैं क्योंकि उन्हें इससे फायदा होता है। कंपनी ने बयान में कहा कि यह कहना गलत है कि हम उनकी खबरें ले लेते हैं। यह प्रस्ताव वास्तव में एक डिजिटल सर्विस टैक्स है, जो बदलते विज्ञापन उद्योग को सही तरह नहीं समझता और टिकाऊ समाचार क्षेत्र बनाने में विफल रहेगा।

बिश्केक में रक्षा मंत्री ने की चीनी समकक्ष से मुलाकात, एलएसी पर शांति-पश्चिम एशिया संकट पर हुई चर्चा

बिश्केक, एजेंसी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में शंघाई सहयोग संगठन के रक्षा मंत्रियों के सम्मेलन के दौरान अपने चीनी समकक्ष एडमिरल डोंग जुन से मुलाकात की। इस महत्वपूर्ण बैठक में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति और स्थिरता बनाए रखने के साथ-साथ पश्चिम एशिया के संकट जैसे क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई। राजनाथ सिंह ने सोशल मीडिया पर इस मुलाकात को खुशी जताई। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, दोनों मंत्रियों ने वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य पर अपने विचार साझा किए। जून 2020 में गलवान घाटी में हुए संघर्ष के बाद भारत और चीन के रिश्तों में काफी तनाव आ गया था, जिसे अब सुधारने

की कोशिश की जा रही है। दोनों देशों ने राजनयिक और सैन्य बातचीत के बाद पूर्वी लद्दाख में कई विवादित जगहों से अपनी सेनाएं पीछे हटाई हैं। अक्टूबर 2024 में डेपसांग और डेमचोक जैसे आखिरी दो विवादित बिंदुओं पर भी सैनिकों को हटाने का समझौता हुआ था। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कजान में मुलाकात कर रिश्तों को बेहतर बनाने के फैसले लिए थे। पिछले साल अगस्त में पीएम मोदी ने तियानजिन में भी शी जिनपिंग से बात की थी और आपसी विश्वास व सम्मान पर जोर दिया था।

राजनाथ सिंह ने रूस के रक्षा मंत्री के साथ भी की मुलाकात : इस दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रूस के रक्षा मंत्री आंद्रेई बेलौसोव से भी मुलाकात की। दोनों के बीच स-400 एयर डिफेंस मिसाइल सिस्टम की सप्लाई सहित कई रक्षा परियोजनाओं पर बात हुई। भारत ने 2018 में रूस के साथ 5 अरब डॉलर का समझौता किया था। इसमें से तीन मिसाइल सिस्टम भारत को मिल चुके हैं। चौथी यूनिट अगले कुछ दिनों में और पांचवीं नवंबर तक मिलने की उम्मीद है। पिछले महीने ही भारत ने रूस से पांच और स-400 सिस्टम खरीदने को मंजूरी दी है, जिससे इनकी कुल संख्या 10 हो जाएगी। इसके अलावा, राजनाथ सिंह ने बेलारूस के रक्षा मंत्री लेफ्टिनेंट जनरल विक्टर खेनिन से भी मुलाकात की। उन्होंने रक्षा सहयोग को मजबूत करने और ट्रेनिंग जैसे क्षेत्रों में साझेदारी पर चर्चा की। राजनाथ सिंह ने किर्गिस्तान और कजाकिस्तान के रक्षा मंत्रियों के साथ भी अलग-अलग बैठकें कीं। किर्गिस्तान के रक्षा मंत्री मेजर जनरल मुकाम्बेटोव रुस्लान मुस्तफेविच के साथ बातचीत में द्विपक्षीय रक्षा सहयोग बढ़ाने के तरीकों पर विचार किया गया। राजनाथ सिंह सोमवार को बिश्केक पहुंचे थे।

'हम न होते तो आप फ्रेंच बोल रहे होते': ट्रंप के बड़बोलेपन पर किंग चार्ल्स का मजेदार तंज, इतिहास की दिला दी याद

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका दौरे पर पहुंचे ब्रिटेन के किंग चार्ल्स-III ने व्हाइट हाउस में एक कार्यक्रम के दौरान ऐसा मजेदार तंज कसा कि माहौल हल्का-फुल्का हो गया, लेकिन संदेश गहरा था। बात इतिहास और भाषा से जुड़ी थी और निशाने पर थे अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप। पूरी बात को ऐसे समझिए कि दरअसल, ट्रंप ने उनके साथ बातचीत के दौरान कहा था कि अगर अमेरिका न होता तो यूरोप के कई देश आज जर्मन भाषा बोल रहे होते। ट्रंप का इशारा यूरोप और जर्मनी के उस युद्ध की ओर था, जहां संभवतः जर्मनी का यूरोप के देशों पर कब्जा होता और ये देश खासकर ब्रिटेन भी हिटलर की बोली बोलने लगता। देखा जाए तो ये कोई नई बात नहीं है कि ट्रंप ने अपने घर में बुलाकर किसी दूसरे देश के मेहमान के साथ अपना बड़बोलापन दिखाया हो। लेकिन इस बार उनकी ये चाल शायद उनपर भारी पड़ गई, क्योंकि ट्रंप के अंदाज में ही किंग चार्ल्स ने ऐसा जवाब दिया, जो खूब चर्चा में रहा और लोगों ने इसपर जमकर ठहाके भी लगाए।

आप फ्रेंच बोल रहे होते- किंग चार्ल्स : शुरुआत कुछ ऐसे हुई जब ट्रंप ने ये तंज कसा तो इसी बयान को पकड़ते हुए किंग चार्ल्स ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, मिस्टर प्रेसिडेंट, आपने कहा कि अगर अमेरिका न होता तो यूरोप जर्मन बोल रहा होता। मैं यह कहना चाहूंगा कि अगर हम (ब्रिटेन) न होते, तो आप फ्रेंच बोल रहे होते। किंग चार्ल्स का यह जवाब सुनकर वहां मौजूद लोग हंस पड़े। यह टिप्पणी इतिहास की उस पृष्ठभूमि की ओर इशारा करती है, जब यूरोप में

अलग-अलग ताकतों का प्रभाव था और भाषाओं पर भी उसका असर पड़ता था।

अब समझिए क्या कहता है इतिहास: गौरतलब है कि अमेरिका और यूरोप की ताकत को लेकर दिए गए बयानों के बीच असली इतिहास क्या कहता है, इसे समझना जरूरी है। दरअसल, डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि अगर अमेरिका न होता तो यूरोप के कई देश जर्मन भाषा बोल रहे होते, जिसका इशारा दूसरे विश्व युद्ध की तरफ माना जा रहा है। वहीं ब्रिटेन के किंग किंग चार्ल्स III ने जवाब में इतिहास का दूसरा पहलू सामने रखा। किंग चार्ल्स का इशारा उस दौर की ओर था जब 1776 में अमेरिका ने ब्रिटेन से आजादी की घोषणा की थी, लेकिन यह जीत अकेले संभव नहीं थी। उस समय फ्रांस ने अमेरिका को अहम सैन्य मदद दी थी, जिसके बिना अमेरिका की आजादी मुश्किल मानी जाती है। इतना ही नहीं, अमेरिका बनने से पहले वहां के कई हिस्सों पर फ्रांस का कब्जा था और उसे न्यू फ्रांस कहा जाता था। हालांकि इसके बाद भी ब्रिटेन और अमेरिका के बीच तनाव खत्म नहीं हुआ और 1812 में दोनों के बीच युद्ध हुआ, जिसे वॉर ऑफ 1812 कहा जाता है। इसी युद्ध के दौरान ब्रिटिश सेना ने वॉशिंगटन डीसी पर कब्जा कर लिया और 1814 में व्हाइट हाउस को आग के हवाले कर दिया था।

गृह विभाग की फंडिंग खत्म होने की कगार पर, टीएसए कर्मचारियों के वेतन पर भी खतरा; हवाई सुरक्षा पर असर की आशंका

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में एक बार फिर सरकारी फंडिंग को लेकर बड़ा संकट खड़ा होता नजर आ रहा है। व्हाइट हाउस ने कांग्रेस को चेतावनी दी है कि डिपार्टमेंट ऑफ होमलैंड सिक्योरिटी और उससे जुड़े अहम विभागों के पास कर्मचारियों को भुगतान करने के लिए फंड जल्द ही खत्म हो सकता है। इससे देश की हवाई सुरक्षा व्यवस्था पर बड़ा असर पड़ने की आशंका जताई जा रही है। प्रबंधन और बजट कार्यालय ने सांसदों को एक मेमो भेजकर बताया है कि परिवहन सुरक्षा प्रशासन और अन्य कर्मचारियों की सैलरी के लिए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा कार्यकारी आदेश से दिया गया पैसा मई तक खत्म हो जाएगा। इससे एयरपोर्ट संचालन और राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था प्रभावित हो सकती है। सरकार का कहना है कि अगर जल्द ही बजट पारित नहीं किया गया तो सुरक्षा कर्मियों के वेतन और संचालन दोनों पर संकट गहरा जाएगा। मेमो में कहा गया है कि प्रतिनिधि सभा को सीनेट द्वारा पिछले हफ्ते पास किए गए बजट प्रस्ताव को जल्द मंजूरी देनी चाहिए, ताकि विभाग को पूरा फंड मिल सके। मेमो के अनुसार होमलैंड सिक्योरिटी विभाग जल्द ही जरूरी फंड से खत्म हो जाएगा, जिससे जरूरी कर्मचारियों और कामकाज पर खतरा पैदा हो सकता है।

बजट पर राजनीतिक गतिरोध जारी : अमेरिकी संसद में बजट को लेकर राजनीतिक खींचतान लगातार जारी है। रिपब्लिकन और डेमोक्रेट्स के बीच सहमति न बनने के कारण कई महत्वपूर्ण विभागों की फंडिंग अटक गई है। इस बीच, हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में भी आंतरिक विवाद के चलते बजट प्रक्रिया धीमी पड़ गई है, जिससे पूरा सिस्टम लगभग ठप जैसा हो गया है।

स्पीकर माइक जॉनसन पर बढ़ा दबाव : ट्रंप प्रशासन का यह दबाव हाउस स्पीकर माइक जॉनसन के लिए मददगार साबित हो सकता है। उनकी रिपब्लिकन

पार्टी के पास बहुत कम बहुमत है और पार्टी के अंदर कई मुद्दों पर मतभेद चल रहे हैं, जिनमें होमलैंड सिक्योरिटी की फंडिंग भी शामिल है। इसी वजह से सदन का कामकाज लगभग ठप पड़ा हुआ है। अब उम्मीद है कि प्रतिनिधि सभा बुधवार को सीनेट द्वारा पास किए गए बजट प्रस्ताव पर वोट करेगी। यह प्रस्ताव एक ऐसी प्रक्रिया शुरू करेगा जिससे विभाग को पूरी फंडिंग मिल सकेगी। प्रशासन ने रिपब्लिकन सांसदों को चेतावनी दी है कि अगर वे इस प्रस्ताव में बदलाव करते हैं तो बिल पास होने में देरी हो सकती है। मेमो में यह भी कहा गया है कि ष्ठ।स्के लिए फंडिंग बहाल करना अब पहले से ज्यादा जरूरी हो गया है। इसका कारण हाल की एक घटना है, जब बंदूक और चाकू लेकर एक व्यक्ति व्हाइट हाउस संवाददाता डिनर में घुसने की कोशिश कर रहा था, जहां राष्ट्रपति ट्रंप, उपराष्ट्रपति और कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

होमलैंड सिक्योरिटी शटडाउन: अब तक का सबसे लंबा : होमलैंड सिक्योरिटी दो महीने से अधिक समय से नियमित धन के बिना काम कर रहा है। यह स्थिति तब उत्पन्न हुई जब डेमोक्रेट्स ने ट्रंप की निर्वासन एजेंडे के विरोध में मारे गए अमेरिकियों की मौतों के बाद इमिग्रेशन एंड कस्टम्स एन्फोर्समेंट और बॉर्डर पेट्रोल को धन देने से इनकार कर दिया। हालांकि आप्रवासन प्रवर्तन कर्मचारियों को बड़े पैमाने पर नए धन के माध्यम से भुगतान किया गया है - कुछ 170 बिलियन अमरीकी डालर - जिसे कांग्रेस ने पिछले साल ट्रंप के कर कटौती विधेयक के हिस्से के रूप में अनुमोदित किया था, अन्य, जिसमें ञ्झ भी शामिल है, को अपने वेतन सुनिश्चित करने के लिए ट्रंप के हस्तक्षेप पर निर्भर रहना पड़ा है। लेकिन हर दो सप्ताह में 1.6 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक के वेतन के साथ, डीएचएस सचिव मार्कवेन मल्लिन ने हाल ही में कहा है कि ये धन सूख रहे हैं।

Printed, Published and Owned by SARABJIT MAKAN and Printed by ILEVAN HASMUKHRAI THAKAR Printed at Jay Graphics & Printers, C/15, Vikram Chambers, Ashram Road, Ahmedabad - 380009. and published from F/1 first floor, rajas apartment, near old railway crossing, maninagar east maninagar, Ahmedabad, Gujarat-380008. Editor SARABJIT MAKAN, Mo.: 9638877700, 9662420070.